बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA | देना DENA

अक्षय्यम्

जनवरी–मार्च, 2023 अंक

बैंक द्वारा देश के सबसे बड़े साहित्य सम्मान 'बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' का शुभारंभ

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

बैंक द्वारा ' बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' की शुरुआत

बैंक द्वारा 'बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' की शुरुआत की गई। इस शुरुआत की घोषणा दिनांक 20 जनवरी, 2023 को जयपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा ने की। इस अवसर पर हमारे कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना, बुकर पुरस्कार से सम्मानित बहुचर्चित लेखिका सुश्री गीतांजलि श्री, देश–विदेश के साहित्य प्रेमी, भाषाविद् सहित अन्य प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। बैंक द्वारा इस सम्मान की शुरुआत भारतीय भाषाओं में साहित्यिक लेखन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए की गई है । यह 'बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' भारतीय भाषाओं के बीच सामंजस्य को बढ़ाने और आम लोगों के लिए हिंदी में श्रेष्ठ भारतीय साहित्य उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखता है । यह सम्मान भारत में साहित्यिक अनुवाद कार्य को भी प्रोत्साहित करेगा ।

यह पुरस्कार मूल रूप से क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए चयनित उपन्यास के मूल लेखक और इसके अनुवादक, दोनों को ही प्रदान किया जाएगा । इसके तहत प्रति वर्ष सम्मानित उपन्यास के मूल लेखक को रु. 21.00 लाख तथा उस कृति के हिंदी अनुवादक को रु. 15.00 लाख तथा अन्य पांच चयनित कृतियों के लिए प्रत्येक मूल लेखक को रु. 3.00 लाख तथा हिंदी अनुवादक को रु. 2.00 लाख की राशि पुरस्कार स्वरूप दी जाएगी ।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

हम नए वित्त वर्ष 2023-24 में प्रवेश कर चुके हैं। पत्रिका का यह अंक आपके पास पहुंचने तक के समय वित्त वर्ष 2022-2023 एवं मार्च 2023 के लिए बैंक के परिणामों को अंतिम रूप देने का कार्य चल रहा होगा। परंतु दिसंबर 2022 को समाप्त नौ महीने के दौरान हमने जो परिणाम हासिल किए हैं, वे काफी उत्साहवर्द्धक हैं और अंतिम तिमाही के सकारात्मक परिणामों की प्रबल संभावनाएं दर्शाते हैं। आप जानते हैं कि दिसंबर 2022 को समाप्त तिमाही के लिए बैंक का शुद्ध लाभ 75.4% की वृद्धि के साथ रु. 3,853 करोड़ रहा जो कि अब तक का सबसे ज्यादा मुनाफा है। वहीं वित्त वर्ष की नौमाही के लिए 69.9% की मजबूत वृद्धि के साथ शुद्ध लाभ रु. 9334 करोड़ रहा। वैश्विक अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 19.7% की मजबूत वृद्धि दर्ज की गई। गृह ऋण, वैयक्तिक ऋण, ऑटो ऋण और शिक्षा ऋण जैसे अधिक फोकस वाले क्षेत्रों में बढ़ोत्तरी की वजह से ऑर्गेनिक रिटेल अग्रिमों में 29.4% की वृद्धि हुई। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 272 आधार बिंदु और तिमाही-दर-तिमाही आधार पर 78 आधार बिंदु की गिरावट के साथ सकल गैर निष्पादक आस्तियों का स्तर 4.53% रहा। वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 24 आधार बिंदु की वृद्धि के साथ वित्त वर्ष 23 की तीसरी तिमाही में निवल ब्याज मार्जिन 3.37% रहा। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी ने वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही के दौरान जो प्रयास किए हैं उससे बैंक के वार्षिक परिणाम काफी उत्साहवर्द्धक होने वाले हैं।

हमारा बैंक हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विकास एवं प्रोत्साहन हेतु भी निरंतर प्रयासरत है। दिनांक 19-23 जनवरी, 2023 के दौरान जयपुर में आयोजित जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के दौरान बैंक द्वारा साहित्य जगत के सबसे बड़े सम्मान 'बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' की घोषणा की गई है जिसके तहत संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद हेतु अनुवादकों एवं मूल लेखकों को सम्मानित करने की योजना तैयार की गई है। यह सम्मान समग्र रूप से भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने और हिंदी के माध्यम से देश के बड़े पाठक समुदाय को इसे उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा और साथ ही साथ बैंक को देश के बौद्धिक समुदाय के बीच स्थापित करने में भी मदद करेगा।

डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देने की दृष्टि से हाल ही में बैंक ने देश में डिजिटल भुगतानों के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं इन माध्यमों को अपनाने में गति लाने के उद्देश्य से इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार, की पहल 'डिजिटल पेमेंट्स उत्सव : डिजिटल पेमेंट्स से प्रगति को गति' मनाने की घोषणा की है। इस अवसर पर बैंक द्वारा दो नए उत्पादों- 'बॉब वर्ल्ड वेव ऑन-दि-गो प्रीपेड गिफ्ट कार्ड-कीचेन वेरियंट (जी20 ब्रांडेड)' और रुपे के एसोशिएशन में 'बॉब वर्ल्ड अग्निवीर डेबिट कार्ड' की शुरुआत की गई है। इस अवसर पर बैंक को वित्त वर्ष 21-22 के दौरान डिजिटल भुगतान को प्रोत्साहित करने की दिशा में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए तीन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया-1) डिजिटल भुगतान में समग्र कार्यनिष्पादन हेतु शीर्ष स्थान प्राप्त करने के लिए 2) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में डिजिटल भुगतान लेन-देन की सबसे बड़ी संख्या प्राप्त करने हेतु 3) बड़े और मध्यम सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में डिजिटल भुगतान लेन-देन के दूसरे बड़े प्रतिशत को प्राप्त करने हेतु। ये पुरस्कार हमारे बैंक को समय के साथ चलने वाले और भविष्य के लिए पूरी तरह से तैयार बैंक के रूप में स्थापित करते हैं।

बैंक में महिला सहकर्मियों की भूमिका काफी सशक्त एवं महत्वपूर्ण बनती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर बैंक ने 10 मार्च, 2023 से 20 मार्च, 2023 तक #SaluteHerShakti कंटेस्ट के तीसरे संस्करण का शुभारंभ किया जिसमें सर्वश्रेष्ठ 3 विजेताओं को हमारे ब्रांड एंडोर्सर्स सुश्री पी वी सिंधु और सुश्री शेफाली वर्मा से संवाद करने का अवसर प्रदान किया जाएगा। साथ ही, समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर हमने **'उसके साथ में है पूर्णता का अहसास...'** टैगलाइन, जो कि महिलाओं की संगठन एवं समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है, के साथ बैंक में विभिन्न स्तरों पर महिला दिवस समारोहों का उत्साहवर्द्धक आयोजन किया। इसी क्रम में उभरती हुई भारतीय खेल प्रतिभा, विशेष तौर पर महिला खिलाड़ियों को समर्थन प्रदान करने की बैंक की सोच के अनुरूप कार्रवाई करते हुए बैंक 'वीमन प्रीमियर लीग' का एक एसोशिएट मीडिया स्पॉंसर रहा। इस लीग के शुभारंभ के अवसर पर इस खास इवेंट पर लोगों के विशेष ध्यान को मद्देनजर रखते हुए बैंक द्वारा गृह ऋण और कार ऋण के लिए LoansWithoutDrama की शुरुआत की गई जिसका उद्देश्य बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा केवल 30 मिनटों में गृह ऋण और कार ऋण की बाधारहित मंजूरी को प्रचारित-प्रसारित करना है।

इसके साथ ही हम सर्वोत्तम मानव संसाधन प्रणालियों के साथ वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान बनने की ओर अग्रसर हैं। कर्मचारियों के अभिमत और सुझाव प्राप्त करने हेतु हमने 'वॉयस ऑफ़ बड़ौदियन' सर्वेक्षण के चौथे संस्करण की शुरुआत की घोषणा की ताकि सर्वेक्षण से प्राप्त सुझावों के आधार पर हम कर्मचारी नियोजन, शिक्षण और विकास, स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं को लागू कर सकें और कर्मचारी नियोजन नीतियों को बेहतर बनाते हुए श्रेष्ठ कर्मचारी केंद्रित पहलों की शुरुआत कर सकें।

हमारे हर कार्यकलाप के केंद्र में ग्राहक हैं। ग्राहकों की सुविधा के लिए उनकी पसंदीदा भाषा का भी पूरा ध्यान रखा जा रहा है। इसी उद्देश्य से बैंक ने अपनी चैटबॉट सुविधा को ग्राहकों के लिए हिंदी में भी उपलब्ध करवा दिया है। साथ ही, डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म पर रिटेल एवं एमएसएमई जर्नी को ग्राहकों के लिए हिंदी में उपलब्ध करवाने के साथ-साथ स्वर्ण ऋण, बीकेसीसी, मुद्रा आदि ऋणों की जर्नी को हिंदी में भी उपलब्ध करवा दिया गया है।

हमारा बैंक डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देते हुए विभिन्न ग्राहक केंद्री पहलों के माध्यम से ग्राहकों को उनकी आवश्यकतानुरूप उत्पाद एवं सेवाएं उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। आप सभी के सहयोग एवं प्रयासों से बैंक द्वारा शुरू की गई हर नई पहल एवं हर नए अभियान को सफलता मिल रही है। कृपया अपने सक्रिय प्रयासों को जारी रखें।

शुभकामनाओं सहित,

संजीव चड्ढा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिन्दी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से अपने विचारों को साझा करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है ।

हम जानते हैं कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और यह नियम मानव-समाज पर भी लागू होता है । ये परिवर्तन सदैव हमें कुछ नया करने और सीखने की चुनौतियों के लिए प्रेरित करते हैं । बैंकिंग उद्योग भी निरंतर महत्वपूर्ण परिवर्तनों और चुनौतियों से गुजरता रहा है । आज हमारा ग्राहक सेगमेंट भी प्रतिदिन बेहतर और नवोन्मेषी अनुभव चाहता है । एक ग्राहकोन्मुखी बैंक होने के नाते हम अपने ग्राहकों के बैंकिंग अनुभव को अधिक बेहतर, सहज, सुगम और आसान बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत एवं प्रतिबद्ध हैं ।

मार्च, 2023 तिमाही की समाप्ति के बाद हम अपनी विभिन्न व्यावसायिक, आर्थिक सफलताओं और इन्हें कायम रखने की चुनौतियों के साथ एक नए वित्त वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं । इस वर्ष हमने कृषि, एमएसएमई, रिटेल, कॉर्पोरेट, डिफेंस और विशेष रूप से महिलाओं एवं वरिष्ठ नागरिक/पेंशनर ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझकर अपने विभिन्न जमा एवं ऋण संबंधी उत्पादों को उनके अनुकूल एवं अधिक बेहतर बनाकर पेश किया है । हमारा बैंक अपने ग्राहकों की सुविधाओं के लिए निरंतर नई पहलें करता रहा है । इसी क्रम में हमने इस तिमाही में भी कई नवोन्मेषी कार्य किए हैं, वरिष्ठ नागरिकों की सुविधा के लिए बैंक ने **'बॉब वर्ल्ड गोल्ड'** मोबाइल ऐप लॉन्च किया है जो 13 भाषाओं में उपलब्ध है । इसके साथ ही देश के 3 शहरों दिल्ली, चंडीगढ़, भोपाल में प्रेरणा नाम से 11 'सीनियर सिटीजन लाउंज' बनाए गए हैं । इन लाउंज में वरिष्ठ नागरिकों के लिए किताबें/ समाचार-पत्र, टेलीविज़न, कंप्यूटर और कॉफी मशीन आदि सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। बैंक के बुजुर्ग ग्राहक यहां सहज तरीके से संपर्क कर सकते हैं और विशेष रिलेशनशिप मैनेजर के सहयोग से अपनी सभी बैंकिंग जरूरतों को पूरा कर सकते हैं । अपने गृह एवं कार ऋण उत्पाद को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए हमने LoansWithoutDrama विज्ञापन अभियान की शुरुआत की है जिसे हिंदी एवं अंग्रेजी सहित कुल 8 भारतीय भाषाओं में टेलीविजन, रेडियो, विभिन्न डिजिटल एवं आउटडोर प्लेटफॉर्म पर प्रसारित किया जा रहा है ।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा बैंकिंग के साथ-साथ अपनी सामाजिक, विशेष रूप से भाषा संबंधी जिम्मेदारियों को पूरा करने में भी सदैव अग्रणी रहा है । इसी क्रम में एक अद्वितीय और ऐतिहासिक पहल करते हुए हमारे बैंक ने राजभाषा हिंदी और विभिन्न भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने और क्षेत्रीय भाषाओं में लिखित उपन्यासों की हिंदी में अनूदित श्रेष्ठ कृतियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से 'बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' की शुरुआत की है। यह सम्मान देश में विभिन्न भाषाओं के साहित्य को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ समाज के बुद्धिजीवी तबके के बीच बैंक की छवि को पुख्ता करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा ।

मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हमारा बैंक नए दौर की नई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए और अपेक्षित बदलावों को आत्मसात करते हुए ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करना जारी रखेगा । साथ ही नए वित्त वर्ष में हम सभी आरंभ से ही बैंक के व्यवसाय विकास के लिए समर्पित प्रयास को जारी रखेंगे और टीम भावना से कार्य करते हुए बैंक को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे ।।

शुभकामनाओं सहित,

अजय के. खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

'अक्षय्यम्' के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए एक सुखद अवसर है। मैं समझता हूं कि हम सभी बैंकिंग के एक उन्नत और संभावनाओं से भरे दौर से गुजर रहे हैं। इन संभावनाओं के बीच आज हमारी चुनौतियां और जिम्मेदारियां अलग-अलग स्वरूप में बढ़ी हैं। हमने अपने कार्यदायित्वों के कुशल निर्वहन से पिछली कई चुनौतियों पर सफलता हासिल की है और बैंक को भारतीय बैंकिंग उद्योग में एक विशिष्ट स्थान पर लाकर खड़ा किया है। बैंक की मजबूती को बरकरार रखते हुए हमारा यह भी लक्ष्य होना चाहिए कि हम देश के आर्थिक विकास में अग्रणी भूमिका निभाते रहें। इसके लिए हमें अपने बैंक के विभिन्न सेगमेंट में अधिक से अधिक ग्राहकों को अपनी सुविधाओं से जोड़ना होगा और अपनी ग्राहक सेवा को व्यापकता देते हुए इसे और भी बेहतर करना होगा।

हमारा बैंक व्यावसायिक दृष्टि से आज एक मजबूत स्थिति में खड़ा है। दिसंबर 2022 तिमाही के वित्तीय परिणाम बैंक के लिए अत्यंत ही उत्साहवर्धक रहे हैं। बैंक ने इस तिमाही में रु. 3,853 करोड़ का मुनाफा दर्ज किया, वर्ष-दर-वर्ष आधार पर इसमें 75.4% की वृद्धि हुई है। इसके साथ ही बैंक के परिचालन लाभ में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 50.1% की बढ़ोत्तरी हुई। इस तिमाही के परिणाम के साथ बैंक करोबार की दृष्टि से भारत का दूसरा सबसे बड़ा सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक बन गया है। यह हम सभी की सामूहिक उपलब्धि है। मेरा सभी बड़ौदियन साथियों से अनुरोध होगा कि वे इस उपलब्धि को बनाए रखने में अपना संपूर्ण योगदान देते रहें।

समय की मांग को देखते हुए बैंक ने अपने कारोबार को मजबूत करने के लिए कॉर्पोरेट एवं संस्थागत ऋण के क्षेत्र में अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। बैंक ने अपने कॉर्पोरेट एवं संस्थागत ऋण व्यवसाय को दो अलग-अलग हिस्सों यथा - *लार्ज-कॉर्पोरेट्स और मिड-कॉर्पोरेट्स* में श्रेणीबद्ध किया है। बैंक ने कोच्ची (केरल) तथा जमशेदपुर (झारखंड) में अपनी मिड-कॉर्पोरेट शाखाओं और मुंबई, नई दिल्ली, चेन्नै और कोलकाता में भी मिड-कॉर्पोरेट क्लस्टर कार्यालयों की स्थापना की है। बैंक की योजना है कि इनके जरिए कॉर्पोरेट ऋण प्रस्तावों के टर्न अराउंड टाइम में कमी लाई जाए जिससे कि बैंक के कॉर्पोरेट ग्राहकों को और भी बेहतर सुविधा दी जा सके और मिड-कॉर्पोरेट सेगमेंट में गुणवत्तापूर्ण ऋण बुक तैयार हो सके। मिड-कॉर्पोरेट शाखा के जरिए बैंक अपने मिड-कॉर्पोरेट, लार्ज-कॉर्पोरेट और पीएसयू उधारकर्ताओं को कॉर्पोरेट ऋण, ट्रेड फाइनांस, फॉरेक्स और नकदी प्रबंधन की बेहतर और विशेषीकृत सेवा प्रदान कर रहा है।

बैंक की *'बड़ौदा डिजिनेक्स्ट कैश मैनेजमेंट सुविधा'* में व्यवसाय विकास एवं नए व्यवसाय के अधिग्रहण की दृष्टि से काफी संभावनाएं हैं। इससे कॉर्पोरेट्स को उनके वित्तीय लेनदेन और ट्रेजरी प्रबंधन संबंधी श्रेष्ठ सुविधा का लाभ मिल रहा है। बैंक ने इस उत्पाद के जरिए कॉर्पोरेट बैंकिंग को और भी सुविधाजनक बनाया है। इस उत्पाद की संभावनाओं एवं सुविधाओं का अभी भी हम पूरा लाभ नहीं उठा पाए हैं। मैं आप सभी से अनुरोध करना चाहूंगा कि बैंक के पास उपलब्ध सभी कॉर्पोरेट्स के खातों के संबंध में इस उत्पाद की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक कार्रवाई करें। यह कासा जमाओं, फ्लोट जमाओं का बड़ा स्रोत साबित हो सकता है।

मुझे विश्वास है कि आप सभी बैंक द्वारा की जा रही नई-नई पहलों का लाभ उठाते हुए बैंक व्यवसाय वृद्धि को और गति प्रदान करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

देबदत्त चांद

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के माध्यम से आपसे संवाद करना हमेशा ही मेरे लिए एक विशेष अवसर होता है। बैंकिंग उद्योग प्रत्येक युग में अपनी विशेषताओं और क्षमताओं की वजह वैश्विक समाज में चर्चा का विषय रहा है। हाल के दिनों में एक बार फिर विश्व के प्रमुख बैंकों यथा *सिलिकॉन वैली बैंक, सिग्नेचर बैंक* और उसके बाद *क्रेडिट सुइस बैंक* के संबंध में उत्पन्न बैंकिंग संकट को वैश्विक बैंकिंग संकट से जोड़ कर देखा जा रहा है। पश्चिमी वित्त क्षेत्र की तुलना में भारतीय वित्तीय व्यवस्था बिलकुल अलग धरातल पर खड़ी दिखती है। तमाम वैश्विक उतार-चढ़ाव के बावजूद भारतीय बैंक आज सुदृढ़ स्थिति में नजर आ रहे हैं। भारतीय बैंकों की मजबूत अनुपालन और निगरानी प्रणाली के कारण पिछले कुछ वर्षों में भारतीय बैंकों ने अभूतपूर्व सहनशीलता (resilience) को दर्शाया है।

विशेष कर अपने बैंक की बात करें तो बैंक कई तिमाहियों से लगातार बेहतर वित्तीय परिणाम देने में सफल रहा है। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि दिसंबर 2022 तिमाही में जारी वित्तीय परिणाम के साथ बैंक कुल व्यवसाय की दृष्टि से देश में सार्वजनिक क्षेत्र का दूसरा सबसे बड़ा बैंक बन गया है। यह जरूरी है कि हम अपनी इस स्थिति को बनाए रखने के लिए अपने सभी प्रयासों को जारी रखें। हमने बैंकिंग के प्रत्येक दौर को एक संभावनाओं वाले दौर के रूप में देखा है और हमारे समक्ष उत्पन्न चुनौतियों को संभावनाओं में बदला है। यही वजह है कि हम अपने प्रत्येक दौर में अपने निवेशकों के भरोसे को अपने साथ जोड़कर रखने में सफल हुए हैं।

मौजूदा दौर में बैंकिंग क्षेत्र में हो रहे बदलाव पहले की अपेक्षा कहीं अधिक तीव्र हैं जो कि अपने आप में विविधता की विशेषताओं को संजोए हुए है। यानी एक ही साथ कई पहलुओं में समानांतर बदलाव दिख रहे हैं। हम जानते हैं कि बैंक का पोर्टफोलियो जितना विविध होगा, बैंक के जोखिम के कम होने और आय संवर्धन की संभावनाएं भी उतनी ही अधिक होगी। इन सभी विशेषताओं को देखते हुए हमने ***'क्लास बैंकिंग'*** और ***'मास बैंकिंग'*** दोनों ही क्षेत्रों में बैंक की स्थिति को मजबूत की है। बैंक की ***बॉब नाऊ परियोजना*** के माध्यम से हम अपने बैंक में विविध उत्पादों एवं सेवाओं को और भी सुदृढ़ और ग्राहक-अनुकूल बनाए रखने पर पूरा ध्यान दे रहे हैं। इस परियोजना के तहत हमने अपने स्टाफ-सदस्यों के कार्य-कौशल और कार्यनीति को बैंक की व्यवसाय नीति से जोड़ा है।

हमने प्रशिक्षण और तकनीक के माध्यम से बैंकिंग उद्योग में श्रेष्ठ बैंकिंग सॉल्यूशन उपलब्ध कराने को प्रमुखता दी है। हमारे बैंक का तकनीकी पक्ष भी बहुत महत्वपूर्ण है उदाहरण के लिए बैंक का बॉब वर्ल्ड ऐप ग्राहक की दृष्टि से अत्यंत सुविधाजनक है। इस मोबाइल बैंकिंग ऐप के जरिए हमारे बैंक का एक आम ग्राहक बड़ी आसानी से बैंकिंग की सारी प्रमुख सुविधाएं प्राप्त कर रहा है। आने वाले दिनों में हम तकनीक के माध्यम से बैंकिंग को और भी सुविधाजनक बनाने जा रहे हैं। आप सभी से मैं यही आग्रह करता हूं कि बैंक के सभी उत्पादों विशेषकर डिजिटल उत्पादों का लोगों के बीच प्रचार-प्रसार करें तथा उन्हें इन सुविधाओं से लाभान्वित करें। हमारी यह पहल ग्राहक सेवा की दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ बैंक के हित में भी है।

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

जयदीप दत्ता राय

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

अक्षय्यम् के माध्यम से आप सभी के साथ संप्रेषण स्थापित करना मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय होता है।

एक वैश्विक बैंक के रूप में अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग के क्षेत्र में ग्राहकों की अपेक्षाओं के प्रति हमारी प्रतिबद्धता अटूट है। हमने अपने ग्राहकों को उनकी अंतर्राष्ट्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु अपनी वैश्विक उपस्थिति, विशेषज्ञता और नेटवर्क का लाभ उठाना जारी रखा है। इसका प्रभाव हमारे वित्तीय परिणामों में भी परिलक्षित होता है। वैश्वीकरण, अर्थव्यवस्थाओं की परस्पर संबद्धता, विनियामक परिवर्तनों और बाजार के रुझानों के अनुकूल हमारा बैंक अपनी कार्य-दक्षता को लगातार परिष्कृत कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग क्षेत्र में कार्य करते हुए हमारा दायित्व है कि हम सभी संभावित जोखिमों से निपटने के लिए लगातार उचित कार्रवाई करें। इस दिशा में संभावित जोखिमों की पहचान करना और संबंधित देशों के कानूनों और विनियमों के प्रति सतर्क रहना अत्यावश्यक है।

हमारे स्टाफ हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति हैं और हम अपने संगठन के भीतर समावेशिता, विविधता और निरंतर सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। साथ ही, हम कर्मचारी कल्याण और कार्य-जीवन संतुलन को भी महत्व देते हैं। हम कर्मचारी अनुरूप और फ्लेक्सिबल कार्य वातावरण को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहे हैं जो कि कार्यनिष्पादन की गुणवत्ता को प्रोत्साहित करता है। इसी क्रम में हमने 'वॉइस ऑफ बड़ौदियन- कर्मचारी जुड़ाव सर्वेक्षण 2023' का आयोजन किया। इस सर्वेक्षण के माध्यम से हम एक स्वस्थ, लाभकारी और कर्मचारी केंद्रित कार्यस्थल विकसित करने से संबंधित प्रमुख पहलुओं के प्रति स्टाफ सदस्यों के नजरिए को समझने की कोशिश करते हैं और कर्मचारी हित की दृष्टि से महत्वपूर्ण पहलों की शुरुआत करते हैं। निरंतर परिवर्तनशील बैंकिंग उद्योग में प्रासंगिक बने रहने के लिए हमें अपने कौशल में वृद्धि की आवश्यकता होती है। बड़ौदा गुरुकुल एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जिसके माध्यम से आप अपने को निरंतर अद्यतन रख सकते हैं और अपने कौशल में वृद्धि कर सकते हैं। आवश्यकतानुरूप स्टाफ सदस्यों को हम विशेष तकनीकी प्रशिक्षण अपनी प्रशिक्षण प्रणाली के माध्यम से प्रदान कर रहे हैं। प्रशिक्षण एक ऐसा निवेश है जिसके परिणाम व्यक्ति एवं संगठन दोनों के लिए ही अत्यंत सकारात्मक होते हैं। अतः यह बैंक के लिए हमेशा प्राथमिकता का क्षेत्र रहेगा।

मौजूदा समय में तकनीकी प्रगति, ग्राहकों की प्राथमिकताओं में बदलाव और विनियामक परिवर्तनों के कारण बैंकिंग उद्योग तेजी से रूपांतरण के दौर से गुजर रहा है। इस उद्योग में प्रतिस्पर्धी बने रहने और अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवाएँ प्रदान करने हेतु सबसे आगे रहने के लिए हम विभिन्न स्तरों पर आवश्यक सुधार कर रहे हैं। हम प्रक्रियाओं को सरल बनाने, ग्राहक अनुभव को बढ़ाने और परिचालन क्षमता में सुधार करने हेतु डिजिटल बैंकिंग सेवाओं को नया स्वरूप दे रहे हैं। ग्राहक सभी टचपॉइंट्स पर सहज और व्यक्तिगत सेवाओं की मांग कर रहे हैं, इसलिए हम अपने दैनिक बैंकिंग कार्यकलापों में ग्राहक केंद्रियता को प्राथमिकता दे रहे हैं। इस विकास यात्रा को और अधिक सकारात्मकता के साथ आगे ले जाने की आवश्यकता है।

मैं यह कामना करता हूँ कि आप सभी उत्तम स्वास्थ्य और प्रसन्नता के साथ सदैव प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें।

शुभकामनाओं सहित,

ललित त्यागी

ललित त्यागी

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 18 * अंक – 73 * जनवरी–मार्च 2023

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

अम्ब्रेश रंजन कुमार

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581 / 6171

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित।

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071

प्रकाशन तिथि : 08/05/2023

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.com पर भेज सकते हैं।

अनुक्रम

इस अंक में

'तकनीक भाषा के विकास में सहायक' 8–10

ग्राहक संवाद में सरल और आसान भाषा के प्रभावी उपयोग की आवश्यकता..... 11–13

जी 20 और भारत..... 14–15

हिंदी– भारत की राजभाषा से विश्वभाषा 16–18

अक्षय्यम्, बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सभी स्टाफ सदस्यों/ पूर्व स्टाफ सदस्यों के लिए प्रकाशित की जाती है। इसमें व्यक्त विचारों से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में विशेष

परवरिश..... 22–24

कृत्रिम मेधा, भारतीय भाषाएं एवं बैंकिंग.. 25–29

डिजिटल बैंकिंग से आत्मनिर्भरता 30–32

उत्तराखंड के चार धाम की यात्रा..... 33–36

डिजिटल बैंकिंग : स्मार्ट बैंकिंग 40–41

बैंकिंग शब्द मंजूषा..... 48

अपने ज्ञान को परखिए 49

चित्र बोलता है..... 50

कार्यकारी संपादक की कलम से

बैंक की हिंदी पत्रिका *'अक्षय्यम्'* के नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए अत्यंत हर्ष और प्रसन्नता की बात है। हमारा उच्च प्रबंधन हमेशा से ही हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रतिबद्ध रहा है। 19-23 जनवरी को जयपुर में आयोजित जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री संजीव चड्ढा एवं कार्यपालक निदेशक श्री अजय के खुराना की उपस्थिति में साहित्य जगत के अनूठे एवं सबसे बड़े अवार्ड 'बैंक ऑफ़ बड़ौदा राष्ट्रभाषा सम्मान' की घोषणा की गई है। इस सम्मान के अंतर्गत संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित 22 भारतीय भाषाओं में लिखे गए एवं हिंदी में अनूदित उपन्यास को सम्मानित किया जाएगा। मूल लेखक एवं हिंदी अनुवादक दोनों को ही सम्मानित करने का प्रावधान इस सम्मान के तहत किया गया है। कुल सम्मान राशि रु. 61 लाख है जिसमें विजेता कृति के मूल लेखक को रु. 21 लाख एवं हिंदी अनुवादक को रु. 15 लाख की सम्मान राशि तथा अन्य 5 कृतियों हेतु मूल लेखक एवं हिंदी अनुवादक को क्रमश: रु. 3 लाख एवं रु. 2 लाख की सम्मान राशि प्रदान किए जाने का प्रावधान किया गया है। इस सम्मान का उद्देश्य भारतीय भाषाओं में लिखे गए उपन्यास को हिंदी के माध्यम से बड़े पाठक वर्ग तक पहुंचाना है। देश की सभी भारतीय भाषाओं को राष्ट्रभाषा मानते हुए यह सम्मान सभी भारतीय भाषाओं को समर्पित किया गया है जिसे साहित्य जगत से बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला है।

हमारा बैंक न केवल हिंदी बल्कि भारतीय भाषाओं के माध्यम से ग्राहकों को अनुकूल एवं बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत है एवं नई-नई सुविधाओं को हिंदी एवं यथासंभव भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवा रहा है। बैंक की प्रधानमंत्री जन धन योजना एवं बीएसबीडी योजना के तहत खोले गए 11 करोड़ खातों में ट्रांजेक्शन संबंधी एसएमएस हिंदी सहित 12 भारतीय भाषाओं में प्रेषित करने की सुविधा सक्रिय करना ऐसा ही एक अभूतपूर्व प्रयास है। डिजिटल के बढ़ते प्रचलन को देखते हुए बैंक द्वारा अपने यूट्यूब चैनल पर विभिन्न बैंकिंग उत्पादों एवं सेवाओं से संबंधित ट्यूटोरियल वीडियो हिंदी में उपलब्ध करवाए गए हैं। ग्राहकों के साथ बैंक द्वारा किए जाने वाले विभिन्न संप्रेषणों को अंग्रेजी के साथ-साथ उनकी अनुकूल भाषा में उपलब्ध करवाने का कार्य काफी हद तक पूरा कर लिया गया है, शेष संप्रेषणों पर भी कार्य जारी है। हमारे कॉंटैक्ट सेंटर के डेटा बताते हैं कि ग्राहक सबसे ज्यादा हिंदी भाषा में स्वयं को सहज महसूस करते हैं। हमने कॉंटैक्ट सेंटर के कर्मचारियों के लिए भी भाषा कौशल पर कार्यक्रम आयोजित किए हैं ताकि वे ग्राहकों से प्रभावी रूप से संप्रेषण कर सकें। व्हाट्सऐप बैंकिंग, चैट बॉट सुविधा एवं इंटरनेट बैंकिंग पोर्टल को अगले चरण में गुजराती भाषा में उपलब्ध करवाने की प्रक्रिया अंतिम चरण में है।

न केवल यह सुविधाएं/सेवाएं हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाई गई हैं बल्कि इन सेवाओं के उपयोग संबंधी डेटा भी नियमित रूप से प्राप्त कर उच्च प्रबंधन के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। क्लिक सेंस में राजभाषा का एक डैशबोर्ड तैयार किया गया है जिसमें बॉब वर्ल्ड, व्हाट्सऐप बैंकिंग, ट्रांजेक्शनल एसएमएस आदि के डेटा नियमित रूप से प्राप्त हो रहे हैं अन्य सेवाओं से संबंधित डेटा को भी शीघ्र ही इंटीग्रेट किया जाएगा। भाषाओं को विविध ऐप एवं उत्पादों से एकीकृत करने की हमारी यह यात्रा लगातार जारी है।

पत्रिका के इस अंक में हमने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले साहित्य अकादमी सरीखे प्रतिष्ठित सम्मान से सम्मानित समकालीन कविता के महत्त्वपूर्ण रचनाकार और इस दौर के सबसे मुखर कवि श्री राजेश जोशी जी के साक्षात्कार को शामिल किया है। इस अंक में शामिल श्री निर्निमेष भंसाली का आलेख **'G-20 और भारत'** वैश्विक मंच पर भारत की प्रभावी उपस्थिति को रेखांकित करता है। साथ ही श्री अमित कुमार श्रीवास्तव के लेख ***'डिजिटल बैंकिंग से आत्मनिर्भरता'*** बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटलीकरण के व्यावहारिक पहलुओं की ओर ध्यान आकृष्ट करता है। इसके अतिरिक्त भी काफी कुछ पढ़ने के लिए मौजूद है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक आपको अवश्य ही पसंद आएगा और बॉब अभिव्यक्ति ऐप के माध्यम से आप अपने अभिमत से हमें अवगत कराएंगे।

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह
प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

'तकनीक भाषा के विकास में सहायक'

साहित्य के जरिए समाज के गंभीर मुद्दों की ओर ध्यानाकर्षण करने वाले प्रतिभावान और सरल व्यक्तित्व के धनी राजेश जोशी को सुनते ही मानव समाज की जिम्मेदारियों की महत्ता की ओर हमारा ध्यान आकर्षित होने लगता है। आप संकटों के बीच भी समाज हित में सकारात्मक संभावनाओं की बात करते हैं। आप अपने काव्य के जरिए मानवीय पक्षों के हित को दर्शाने के साथ–साथ रिश्तों के संवेदनात्मक व्यवहार को भी उजागर करते हैं। बैंक द्वारा समय–समय पर आयोजित भाषाई चौपाल की एक कड़ी में आपके लाइव संवाद–सत्र को बैंक के स्टाफ–सदस्यों के लिए प्रसारित किया गया। हम इस अंक में उनके साथ बैंक के प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह की हुई बातचीत के कुछ अंश पत्रिका के पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं: – संपादक

कृपया अपने प्रारंभिक जीवन और शैक्षिक पृष्ठभूमि के विषय में बताएं।

मेरा जन्म 18 जुलाई 1946 को मध्यप्रदेश के नरसिंहगढ़ में हुआ था। 1969 में जीवविज्ञान से परास्नातक करने के पश्चात् उज्जैन और इंदौर में अध्यापन कार्य किया। उसके बाद स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में 35 वर्ष सेवाएं दीं। 1972 में बैंक सेवा में रहते हुए लिखने का जो क्रम आरंभ हुआ वो आज भी जारी है।

वैश्विक महामारी कोरोना के दौर में और उसके बाद आप तकनीक और भाषा के बीच संबंध को किस रूप में देखते हैं?

मेरा मानना है कि जब समाज में बदलाव होते हैं तो उसके साथ भाषा के तरीके और संवाद के तरीकों में बदलाव होते हैं। जब नयी तकनीक आई तो उसने हमारे संवाद के तरीकों में कुछ परिवर्तन किए। भयानक महामारी के दौर में यदि तकनीक नहीं होती तो सारा संवाद ही रुक जाता और यदि मनुष्यों के बीच संवाद रुक जाता तो यह बहुत भयानक स्थिति हो जाती। मुझे लगता है कि उस कालखंड में तकनीक ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसे सहेजा जाना चाहिए क्योंकि इसने संवाद को व्यापकता प्रदान की है और यह नए समय की आवश्यकता भी है । बैंकर होने के नाते आपको और हमें इसका प्रयोग करना चाहिए।

आप स्वयं एक बैंकर रहे हैं और एक बैंकर के साथ–साथ आप साहित्य जगत में एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। कृपया अपनी इस यात्रा के बारे में बताएं।

मेरे पिताजी एक लेखक थे जिसके कारण बाल्यकाल से ही मुझमें लेखन के संस्कार विकसित हुए। मैं विज्ञान का छात्र रहा और एम.एससी तक विज्ञान पढ़ता रहा और फिर मैंने कई अखबारों में काम किया तथा अध्यापन का कार्य भी किया। बैंक में 35 वर्षों की सुदीर्घ यात्रा के दौरान 20–21 वर्ष राजभाषा विभाग के साथ रहा। विभाग में आकर राजभाषा के विषय में संवैधानिक आवश्यकताओं के साथ–साथ हिन्दी के प्रचार–प्रसार से जुड़ा रहा और बैंक की सेवा के दौरान लेखनकार्य में राजभाषा विभाग की गतिविधियों के कारण मुझे लेखन के क्षेत्र में मदद मिली और बैंक सेवा से वीआरएस के उपरांत पूर्णरूप से लेखनकर्म में रहा।

कविकर्म में आपने कविता के लिए नयी भाषा गढ़ने की कोशिश की, सामाजिक सरोकारों को अपने विषय के रूप में रखा, मानव त्रासदी को भी अपनी कलम के माध्यम से व्यक्त किया। आपकी लेखनी कविता से आगे बढ़ती हुई कहानियों और नाटकों तक पहुंची, लेखन के इन पड़ावों और विधाओं के विषय में कृपया हमारे पाठकों को अवगत कराएं।

हर व्यक्ति अपने बचपन के दौर में शुरुआत कविता से करता है पर शुरू का हिस्सा बहुत ज्यादा उपयोगी अर्थ में नहीं होता क्योंकि उस समय आप साहित्य से परिचित नहीं होते हैं। एक समय आता है जब आप साहित्य को जानकर बहुत ही वैचारिक ढंग से हुनर के साथ लेखन से जुड़ते हैं। सन् 1972 के आसपास जब मैं बहुत ही सुनियोजित ढंग से लेखन में आया तो मैंने कविता और कहानी के साथ लेखन शुरू किया था और आप जानते हैं कि कविता की रचना की तुलना में गद्य अधिक समय मांगता है तो ऐसे में कविता मेरे अधिक निकट रही और बीच–बीच में कहानियां भी लिखता रहा।

भोपाल ही ऐसा सांस्कृतिक केंद्र रहा जहां नाटक बहुत बड़ा क्षेत्र था और मुझे लगा कि नाटक के माध्यम से ज्यादा लोगों तक बात को पहुंचाया जा सकता है । फिर मुझे लगा कि नाटक भी लिखने चाहिए। हिंदी में जो कवि हुए हैं उन्होंने सभी विधाओं में लिखा है और यही हिंदी भाषा की विशेषता है लेकिन यह बात गद्यकारों के विषय में नहीं कही जा सकती। कवियों ने, चाहे वो निराला रहे हो या प्रसाद, मुक्तिबोध, नागार्जुन रहे उन्होंने कविता के साथ सारी अन्य विधाओं में भी काम किया। यह पूरी परंपरा है और यह उन्नत परंपरा साहित्य में बहुत बाद में आए हम लोगों को मिली। गद्य निकष है कवि का, जो कवि गद्य अच्छा नहीं लिखता तो उसकी कविता में कमी रहेगी। वहीं संस्कृत काव्यशास्त्र में नाटक को कवि का निकष कहा गया है। इन दोनों निकष पर कहीं न कहीं स्वयं को परखना था, तो नाटक लेखन में प्रयास किया।

मध्यकाल, भक्तिकाल, नवजागरण काल, स्वाधीनता पूर्व लिखा गया साहित्य समाज में बहुत प्रभाव डालता था । क्या आज के दौर में साहित्य समाज को उस रूप में उद्वेलित कर पा रहा है ?

मुझे लगता है, आज के समय में बहुत सारे साधन चलन में हैं और यह सभी साधन साहित्य के साथ मित्र भाव में आ जाएं तो उससे ज्यादा प्रभाव पैदा कर सकते हैं। आज लाखों की संख्या में अखबार पढ़ा जाता है। तब तो अखबार नहीं थे। आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है जो करोड़ों लोगों द्वारा देखा जाता है। यदि सब साधन साहित्य के साथ दोस्ताना भूमिका अदा करें तो समाज पर साहित्य का प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है।

मध्यकाल में तो प्रेस जैसे कोई साधन नहीं थे, रामचरितमानस की प्रतिलिपियां बनाई जाती थीं। तुलसीदास को यह लगा कि यदि मुझे अपनी रामकथा को लोगों तक पहुंचाना है तो रामलीला करनी चाहिए। रामलीला का आविष्कार ही रामकथा को विस्तार देने के लिए हुआ । आज के दौर में उपलब्ध संसाधन और साधन हिंदी भाषा के लिए सहयोगी भूमिका अदा करें तो प्रभाव बड़ा होगा। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा इसी उद्देश्य के साथ खोला गया । उसकी शाखाएं पूरे देश में खुल रही हैं। मध्यप्रदेश में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना हुई । बस यह देखना है कि यह प्रयास कब फलीभूत होंगें, लेकिन जो शुरू हुआ है वो आकार अवश्य लेगा।

सोशल मीडिया पर उपलब्ध साहित्य को आप किस रूप में पाते हैं और आज के इस डिजिटल दौर में क्या इसे लोक साहित्य का दर्जा दिया जा सकता है?

सोशल मीडिया पर बहुत सारी रचनाएं देखने को मिलती हैं जिसमे मुख्य तौर पर दो अवधारणाएं है। एक, युवा साथियों को लगता है कि सोशल मीडिया एक प्रकार का डेमोक्रेटिक स्पेस है, जहां कोई बंधन नहीं है। दूसरी अवधारणा है कि सोशल मीडिया ऐसा स्पेस है, जहां कोई संपादक नहीं है, कोई आलोचक नहीं है। जिसकी भी मर्जी होती है वो डाल देते हैं जिसके पढ़ने के पूर्व ही *लाइक इट* कर दिया जाता है। ऐसी कृतियों का मूल्यांकन कैसे होगा?

जब हम लोग साहित्य के बारे में पढ़ते थे तो सरस्वती के संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने प्रेमचंद की कहानी तक लौटा दी थी। वह एक दौर था जहां संपादक इतना सख्त था, वे भाषा सुधारते थे। आज के दौर में सोशल मीडिया से तुलना की जाए तो यह एक अराजक स्पेस है। मुझे लगता है कि साहित्य के मामले के लिए संपादक या मूल्यांकन करने वाले लोग होने चाहिए जो यह बता सकें कि नए लोग किस दिशा में जा रहे हैं या उनके लेखन में क्या कमी है? जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक साहित्य में गुणवत्ता नहीं आएगी।

आप भाषा के विविध पक्षों के जानकार हैं और हिंदी भाषा की कई विधाओं में अपनी लेखनी से करोड़ों पाठकों के मन में जगह बनाई है। आपकी रचनाओं का अन्य भारतीय भाषाओं समेत विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद किया गया है। आपके अनुसार भाषा को कैसे बरतना चाहिए?

मैं अपनी कविता की पंक्तियों के माध्यम से आपके प्रश्न का उत्तर देना चाहूंगा :-

मन के एक हिस्से से चांद बनाया गया
और दूसरे से बिल्लियाँ
चांद के हिस्से में अमरता आई
और बिल्लियों के हिस्से में मृत्यु
इसलिए चांद से गप्प लड़ाते कवि का
उन्होंने अक्सर रास्ता काटा
इस तरह कविता में संशय का जन्म हुआ
वो अपने सद्य: जात बच्चे को अपने दांतों के बीच
इतने हौले से पकड़कर एक जगह से
दूसरी जगह ले जाती हैं
कवि को जैसे भाषा को बरतने का सूत्र
समझा रही हों।

बिल्ली जिस प्रकार अपने दांतों के बीच अपने बच्चे को सहेज कर पकड़ती है, उसी तरीके से भाषा को सहेजते हुए आगे बढ़ाना चाहिए। बिल्ली के दांत उसके बच्चे को नहीं

लगते। प्रत्येक व्यक्ति को भाषा का प्रयोग ऐसे ही करना चाहिए कि किसी प्रकार से उसे नुकसान न हो। शब्दों की शक्ति और चुभन का प्रयोग सतर्कता से करना चाहिए।

आप मध्यप्रदेश की भूमि से आते हैं जो वाल्मीकि, महाकवि कालिदास, भवभूति, भूषण, बाणभट्ट, केशवदास, पद्माकर, मुक्तिबोध, शिवमंगल सिंह सुमन, सुभ्रदाकुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, भवानीप्रसाद, हरिशंकर परसाई जैसे साहित्यकारों की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं और साहित्यकारों की समाज और प्रकृति पर गहन दृष्टि रही है। पिछले दिनों उत्तराखंड में प्राकृतिक आपदा के रूप में जमीन फट रही थी । पाठक वर्ग एक साहित्यकार के रूप में इस बारेमें आपके विचारों को जानना चाहता है।

साहित्य की चिंता में पर्यावरण की चिंता आदिकाल से चली आ रही है। साहित्य और प्रकृति का संबंध गहरा रहा है। 20वीं सदी में बनाई गयी विकास की अवधारणाओं का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए और उनके विषय में पुनः सोचा जाना चाहिए क्योंकि विकास के नाम पर बन रही सड़कें, सुरंगे जो उत्तराखंड जहां के पहाड़, सतपुड़ा और विंध्याचल की तुलना में कच्चे पहाड़ हैं या यूं कहा जाए हिमालय के पहाड़ युवा पहाड़ को प्रभावित कर रहे हैं। उत्तराखंड में कुछ वर्ष पूर्व जो त्रासदी हुई उसमें हमने देखा कि पूरे के पूरे पहाड़ बाढ़ में ढहते चले गए।

निराला, पंत और प्रसाद की कविताएं प्रकृति का वर्णन करती नजर आती हैं। मध्यकाल तो प्रकृति के साथ जुड़ा हुआ है। अगर रामकथा की बात की जाए तो वो एक प्रकार से प्रकृति का रूपक है जिसमें हल से जो लकीर बनती है उसी को सीता कहा जाता है। कृषि सभ्यता का विकास ही रामकथा है। राम और सीता कृषि के प्रतीक हैं। प्रकृति से खिलवाड़ करने पर निश्चित तौर से प्रकृति आप पर वार करेगी। प्रकृति से आप लड़ नहीं सकते। आपको प्रकृति के साथ दोस्ताना संबंध बनाना होगा और यदि वो संबंध नहीं बना तो प्रकृति आप के लिए घातक स्थिति उत्पन्न कर देगी और इसे समझने की बहुत आवश्यकता है।

आपने लेखन के साथ अनुवाद विधा पर भी कार्य किया है, सृजनात्मक और भावनात्मक अनुवाद में हमेशा द्वन्द्व की स्थिति बनी रही है। भावनात्मक अनुवाद में कई बार आलोचना भी झेलनी पड़ती है। आप अनुवाद कार्य और इसमें आने वाली चुनौतियों से निपटने हेतु क्या सुझाव देना चाहेंगे?

तकनीकी और अकादमिक अनुवाद करते समय तो दो-तीन बातें आवश्यक हैं। भाषा को लचीला होना चाहिए कि जो शब्द आपकी भाषा में नहीं हैं वो अन्य भाषा से अंगीकृत कर लें। आप जानते होंगे कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी हर वर्ष बहुत सारे शब्दों को अंगीकृत करती है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में दस हज़ार से ज्यादा भारतीय भाषाओं के शब्द हैं । कुछ वर्षों पूर्व समोसा शब्द को लिया गया। 70 के दशक में जब पहली बार 'भारत बंद हुआ तो बंद को स्ट्राइक से समझाया नहीं जा सकता था तो ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने बंद को BUNDH की स्पेलिंग में अंगीकृत किया। जंगल को JUNGLE ही रखा क्योंकि FOREST से जंगल का भाव नहीं आता है। अनुवाद करते समय सरल भाषा में करें, यदि कोई शब्द नहीं सूझ रहा है तो उसकी जगह श्रोत भाषा का प्रयोग किया जा सकता है।

अनुवाद का अर्थ मक्खी पर मक्खी बैठाना नहीं है। हर भाषा का अपना स्वरूप होता है। हिंदी भाषा का जो स्वरूप है वह दूसरी भाषाओं का नहीं है । जैसे हिंदी में सहायक क्रिया अनिवार्य है पर अन्य भाषाओं में सहायक क्रिया की आवश्यकता नहीं पड़ती। हिंदी में क्रिया का लिंग भी बदलता है। इसलिए अन्य भाषा वाले जब हिंदी बोलते हैं तो वो लिंग उल्टा कर देते हैं, जैसे- गाय आता है और घोड़ा जा रही है -हो जाता है। हर भाषा का अपना सौन्दर्य और वनस्पति होती है। किसी भी भाषा में शब्दशः अनुवाद हो ही नहीं सकता और जिस भाषा में शब्द नहीं है तो अन्य भाषा से शब्दों को लेना चाहिए। भाषा जितनी लचीली होगी, उतनी ही व्यापक होगी। जो भाषाएं लचीली नहीं होतीं, वे संस्कृत और लैटिन भाषा की तरह ठहर जाती हैं।

मशीनी अनुवाद क्या मानवीय अनुवाद के हस्तक्षेप के बिना अनुवाद कर्म को पूरा कर सकता है, क्या भविष्य के लिए ऐसी कल्पना की जा सकती है?

मनुष्य तो कभी खत्म हो ही नहीं सकता । मनुष्य खत्म होगा तो संसार ही खत्म हो जाएगा। मनुष्य का हस्तक्षेप कभी खत्म नहीं हो सकता। कृत्रिम बौद्धिकता में विकास हो रहे हैं,आगे भी होंगे किन्तु अनुवाद में मानव की आवश्यकता हमेशा रहेगी। तकनीकी अनुवाद कितना भी अच्छा हो जाए मानव को देखना ही पड़ेगा। अनुवाद अच्छी पहल है, इससे कई किताबों का पाठक वर्ग बढ़ेगा। तकनीकी अनुवाद तो काफी हद तक आगे बढ़ जाएगा किन्तु रचनात्मक अनुवाद में मशीन मानव से आगे नहीं जा सकता। मनुष्यों की प्रासांगिकता हमेशा बनी रहेगी।

***

ग्राहक संवाद में सरल और आसान भाषा के प्रभावी उपयोग की आवश्यकता

डॉ. सत्येंद्र कुमार
मुख्य प्रबंधक,
बड़ौदा अकादमी, भोपाल

बैंकों का व्यवसाय ग्राहकों से निरंतर संवाद और सहयोग पर निर्भर होता है। उन्हें समय-समय पर विभिन्न वित्तीय सेवाओं और उत्पादों के बारे में जानकारी देनी होती है तथा उनकी समस्याओं एवं शिकायतों को दूर करना होता है। इसलिए, उनके साथ संवाद करने के लिए सरल और आसान भाषा का प्रभावी उपयोग करना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की भाषा और व्याख्या क्षमता अलग-अलग होती है। कुछ ग्राहक उच्च स्तर की वित्तीय जानकारी रखते हैं जबकि कुछ अन्य इस विषय में कम जानते हैं। इसलिए, हमें समझना चाहिए कि ग्राहकों के पास कितना वित्तीय ज्ञान है और उन्हें उसी स्तर की जानकारी देनी चाहिए।

आज के समय में बैंकों का व्यवसाय विकास न केवल उन्नत तकनीक के उपयोग से होता है बल्कि ग्राहकों के साथ उचित संवाद बनाए रखने के माध्यम से भी होता है। बैंकों के ग्राहक संवाद में सरल और आसान भाषा का प्रभावी उपयोग बैंकों के व्यवसाय विकास के लिए बहुत आवश्यक है। बैंकों के ग्राहक संवाद में सरल भाषा का उपयोग करने से ग्राहकों को समझने में आसानी होती है और वे अपनी समस्याओं को जल्द से जल्द हल करने में सक्षम होते हैं। इससे बैंकों की सेवा में सुधार होता है, ग्राहक विश्वास में वृद्धि होती है, ग्राहक संतुष्टि में भी वृद्धि होती है और वे और भी अधिक मजबूती से बैंक से जुड़े रहते हैं। इससे बैंकों का व्यवसाय भी बढ़ता है।

ग्राहक संवाद में सरल और सहज भाषा का उपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह आपके ग्राहकों के साथ आसान संवाद सुनिश्चित करता है और उन्हें अपनी समस्या के समाधान के लिए सही दिशा निर्देशित करने में मदद करता है। यह आपके ग्राहकों को आपकी समझने की क्षमता के बारे में संकेत देता है और उन्हें आपके उत्पादों या सेवाओं के बारे में समझने में मदद करता है। इसलिए, बैंकों को ग्राहक संवाद में सरल और आसान भाषा का प्रभावी उपयोग करने की आवश्यकता होती है इसके लिए, हमें निम्न बिंदुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

1. **उचित शब्दों का चयन करें :-** आपको सरल शब्दों का चयन करना चाहिए जो आसानी से समझ में आ सकें। आप अधिक विशेषण या फैंसी शब्दों का उपयोग न करें। आप जितने सरल शब्दों का उपयोग करेंगे, ग्राहकों को समझने में उतना ही आसान होगा। भाषा को इतना सरल रखें कि ग्राहक आपके संदेश का अर्थ आसानी से समझ सके। अपने संवाद को सरल और साधारण शब्दों में लिखें जो आसानी से समझ में आएं। उदाहरण के लिए, हम आपकी समस्या को जल्द से जल्द हल करने के लिए पूरी कोशिश करेंगे जैसे वाक्यों का उपयोग करें।
2. **साफ़ सुथरी भाषा एवं व्यावहारिक भाषा का उपयोग करें :-** आपको साफ़ सुथरी एवं व्यावहारिक भाषा का उपयोग करना चाहिए जिससे ग्राहकों को समझने में आसानी हो। अपनी बात को सीधे और साफ भाषा में रखें। जरुरत पड़ने पर, संभवतः आपके ग्राहक द्वारा न समझने वाले शब्दों का उपयोग कम करें। ग्राहक संवाद के दौरान सीधे बोलें और स्पष्ट रूप से अपनी बात समझाएं। भ्रम पैदा न करें या अतिरिक्त विवरण न दें, इससे ग्राहक को समझने में परेशानी हो सकती है। आपको याद रखना चाहिए कि ग्राहक संवाद के लिए व्यावहारिक भाषा का उपयोग करना अत्यंत आवश्यक होता है। आप ज्यादा विस्तृत शब्दों का उपयोग न करें, बल्कि उन शब्दों का उपयोग करें जो ग्राहक आसानी से समझ सकें। ग्राहक की भाषा में बातचीत करें और विशिष्ट शब्दों या वाक्यांशों का उपयोग कम करें। जब आप उन्हें संभवतः समझाते हैं, तब ग्राहकों को भी उन्हें समझने में आसानी होगी। जरूरत

पड़ने पर अंग्रेजी शब्दों का उपयोग कम से कम करें या उनका सरल भाषा में अनुवाद करें।

3. **टेक्निकल टर्म का उपयोग कम करें :–** टेक्निकल शब्दों का उपयोग कम से कम करें या उनकी उचित शब्दों में व्याख्या करें। इससे आपके ग्राहकों को समझने में आसानी होगी और उन्हें आपकी सहायता की आवश्यकता कम होगी। भाषा का उपयोग सीमित रखें और अधिक टेक्निकल जार्गन का उपयोग न करें। विशेषज्ञ शब्दों और शब्दावली का उपयोग न करें। अपने संदेश को सीधे और सरल भाषा में व्यक्त करें। ग्राहक न सिर्फ आपके संदेश को समझेंगे, बल्कि आपके द्वारा व्यक्त किए गए संदेश को याद भी रखेंगे।
4. **संवेदनशीलता और समझदारी दिखाएं :–** संवाद में संवेदनशीलता और समझदारी बनाए रखें, अपने ग्राहकों के संवेदनशील होने का ध्यान रखें। ग्राहक की समस्या के अनुसार भावुक होने की कोशिश करें। अगर ग्राहक को संदेह हो या उन्हें विस्तार से समझाना हो, तो संवेदनशीलता दिखाएं और सभी सवालों के उत्तर दें। जब आप अपनी भाषा को संवेदनशील बनाते हैं, तब ग्राहक आपसे अधिक जुड़ते हैं। इसलिए, अपनी भाषा के जरिए ग्राहकों की भावनाओं और उनकी समस्याओं को समझने की कोशिश करें। इससे ग्राहकों को आपके संदेश का अर्थ समझने में मदद मिलेगी। इससे ग्राहक आपसे अधिक संवेदनशील बनेंगे और आपके साथ अधिक बेहतर संबंध बनाएंगे। यदि आप अपनी बात को समझाने के लिए जटिल शब्दों का उपयोग करेंगे, तो ग्राहक संवाद में परेशानी आ सकती है। इसलिए, संभवतः सबसे अच्छा होगा कि आप सरल शब्दों का उपयोग करें जो संवेदनशील और सहज हों। ग्राहकों को अनुभव कराएं कि आप उनकी समस्या को समझते हैं और उनकी मदद करने के लिए तैयार हैं। आपका संवेदनशील होना ग्राहकों के विश्वास और उनके साथ लंबे समय तक संबंध बनाए रखने में मदद करेगा।
5. **संदेश का संक्षिप्तीकरण करें :–** ग्राहक संवाद में, संदेश को संक्षिप्त रखना बहुत महत्वपूर्ण है। संवाद को संक्षेपित रखने के लिए सरल भाषा का उपयोग करें। अत्यधिक लंबे वाक्यों से बचें। अक्सर ग्राहक संवाद में असुविधाजनक शब्दों का उपयोग होता है, जो ग्राहक के लिए समझना मुश्किल बना देते हैं। इसलिए, आपको अपनी बात को सरल भाषा में समझाने का प्रयास करना चाहिए। ज्यादा विस्तृत संदेशों से ग्राहक उत्सुकता खो देते हैं। विषय के बारे में संक्षिप्त और स्पष्ट ढंग से बात करने की कोशिश करें।
6. **धैर्य और सहनशीलता रखें :–** ग्राहक द्वारा पूछे गए सवालों को धैर्य से सुनें और ग्राहक की समस्या को समझने की कोशिश करें। यदि आप उत्तर नहीं जानते हैं तो स्पष्टता से बताएं और उन्हें बताएं कि आप उनकी समस्या के समाधान के लिए जरूरी जानकारी देंगे और उनका साथ देंगे।
7. **ग्राहक की जरूरतों का ध्यान रखें:–** अपनी बात को ग्राहक की जरूरतों के अनुसार समझाने का प्रयास करें। आपको इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि ग्राहक संवाद एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है, जिसमें आपको ग्राहक की जरूरतों को समझना और उन्हें उनकी जरूरतों के अनुसार समाधान उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है ।
8. **संवाद में संभवतः आनेवाले प्रश्नों के उत्तर पहले से तैयार रखें:–** संवाद में संभावित प्रश्नों के उत्तर पहले से तैयार रखें और उनका सरल भाषा में जवाब दें। ग्राहक संवाद में संभवतः आनेवाली टिप्पणियों या शिकायतों को समझने का प्रयास करें।
9. **उदाहरणों का उपयोग करें: –** अपनी बात को समझाने के लिए उदाहरणों का उपयोग करें । अपने संदेश के लिए विस्तृत विवरण का उपयोग करें। यह आपके ग्राहक को आपकी बात समझने में मदद कर सकता है। अपने ग्राहक के स्तर के अनुसार बातचीत करने का प्रयास करें। उनके लिए समझना आसान होना चाहिए कि आप क्या कहना चाहते हैं।
10. **जरूरत पड़ने पर शब्दकोश का उपयोग करें:–** अगर आपको लगता है कि ग्राहक आपकी व्याख्या समझ नहीं पा रहा है तो उसे शब्दकोश के साथ अनुवाद करने का सुझाव दें। इससे उन्हें आसानी से समझ में आएगा और आप उनकी मदद कर सकेंगे। अधिक विस्तृत शब्दों का उपयोग न करें। अपने ग्राहकों के लिए उनकी समझ के अनुसार शब्दकोश का उपयोग करें।
11. **अवधारणाओं को स्पष्ट करें:–** जब आप अपने ग्राहकों के साथ बातचीत करते हैं, तो उन्हें समझाने के लिए अवधारणाओं को स्पष्ट करें। वे आपके बताए गए बिंदुओं को अच्छी तरह से समझेंगे।
12. **अभिव्यक्ति का ढंग स्वस्थ रखें:–** अपने ग्राहकों के साथ बातचीत करते समय अपनी अभिव्यक्ति का तरीका बेहतर रखें। अपनी आवाज को साफ़ और स्पष्ट रखें।

निष्कर्ष:-

बैंकों के व्यवसाय विकास के लिए ग्राहक संवाद में सरल और आसान भाषा का प्रभावी उपयोग अत्यंत आवश्यक है। आमतौर पर, बैंक संबंधी विषयों को समझना एक आम व्यक्ति के लिए बहुत कठिन हो सकता है। अधिकतर लोगों के लिए बैंकिंग और वित्त से संबंधित शब्दावली अजीब और अनजान लगती है। इसलिए, ग्राहकों को समझ में आनेवाले आसान और सरल भाषा का प्रयोग करने की जरूरत होती है। ग्राहक संवाद में सरल भाषा का प्रयोग करने से बैंक संबंधित जानकारी समझाने में आसानी होती है और ग्राहक भी संबंधित जानकारी को समझ पाते हैं। इससे ग्राहकों के अनुभव में सुधार होता है और वे बैंक के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखते हैं। साथ ही, ग्राहक-संवाद में सरल भाषा का प्रयोग करने से भाषा बैरियर्स को भी कम किया जा सकता है और बैंक की सेवाओं का उपयोग विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध हो सकता है।

ग्राहकों के साथ संवाद करने के लिए सरल और आसान भाषा का उपयोग करने से बैंकों को बहुत सारे लाभ होते हैं। सरल भाषा का उपयोग करने से ग्राहकों को उनकी समस्याओं को समझाने में आसानी होती है और वे अपनी समस्याओं को जल्द से जल्द हल करने में सक्षम होते हैं। इससे बैंकों की सेवा में सुधार होता है और ग्राहक संतुष्टि में भी वृद्धि होती है। वहीं दूसरी ओर आसान भाषा का प्रभावी उपयोग करने से ग्राहक विश्वास में वृद्धि होती है । इससे बैंकों का व्यवसाय भी मजबूती से सतत् रूप से बढ़ता है। एक सरल भाषा में व्यावहारिक जानकारी देने से, ग्राहकों को बैंक के नियमों और निर्देशों के साथ-साथ उनके खाते और सेवाओं के बारे में भी स्पष्टता मिलती है। यह उन्हें बैंक सेवाओं के लाभ और अवसरों की जानकारी देता है जो उन्हें आर्थिक सफलता तक पहुंचने में मदद कर सकता है।

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन, फ़िजी में बैंक की प्रतिभागिता

15-17 फरवरी, 2023 के दौरान नांदी, फ़िजी में 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया. इस सम्मेलन में बैंक की भी सक्रिय भागीदारी रही. इस वर्ष 'हिन्दी-पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' विषय पर आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन विदेश मंत्री श्री एस जयशंकर ने किया. हिंदी भाषा की दृष्टि से आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में देश-विदेश से प्रसिद्ध भाषाविद्, विद्वान, लेखक, पत्रकार, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी एवं प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे. इस सम्मेलन में बैंक का प्रतिनिधित्व प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने किया तथा इस सम्मेलन के थीम 'पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी. उन्होंने बैंक के विभिन्न उत्पादों और सेवाओं में कृत्रिम मेधा के उपयोग के जरिए हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार संबंधी पहलों पर विस्तृत जानकारी दी.

इसके अलावा 15 फरवरी, 2023 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की सचिव सुश्री अंशुली आर्या एवं निदेशक श्री बी एल मीना द्वारा बैंक की फ़िजी स्थित नांदी शाखा का राजभाषायी निरीक्षण किया गया. निरीक्षण के दौरान बैंक की ओर से प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, टेरिटरी प्रमुख सुश्री लक्ष्मी आनंद और शाखा के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

जी 20 और भारत

निर्निमेष भंसाली
मुख्य प्रबन्धक
एसएमएस, गोवा

जी-20 अर्थात ग्रुप ऑफ 20, यानी 20 राष्ट्रों का समूह। इस समूह के अंतर्गत विश्व के 19 देश और एक यूरोपीय संघ शामिल है। प्रत्येक वर्ष में एक बार जी-20 की बैठक की जाती है, जिसमें सभी सदस्य देशों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। अब तक कुल 17 बैठकें आयोजित हो चुकी हैं। 17वीं बैठक इंडोनेशिया के बाली शहर में आयोजित हुई थी। 17वीं बैठक की समाप्ति पर इंडोनेशिया के राष्ट्रपति श्री जोको विदोदो ने 18वीं बैठक हेतु जी-20 की अध्यक्षता भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को सौंपी। अर्थात जी-20 की 18वीं बैठक सितंबर 2023 में भारत में की जाएगी जिसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी करेंगे। जी-20 ग्रुप में अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यू.के., यू.एस.ए. और यूरोपीय संघ शामिल हैं। गौरतलब है कि स्पेन को प्रति वर्ष स्थायी अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। जी-20 देशों का सकल घरेलू उत्पाद विश्व के कुल जीडीपी का लगभग 85% है तथा वैश्विक कारोबार 75% है। यह प्रत्येक भारतवासी के लिए गर्व की बात है कि भारत जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है।

क्या हैं भारत के लिए इसके मायने:- यह भारत के लिए एक सुनहरा अवसर है। भारत ने इसका मोटो दिया है **'वसुधैव कुटुंबकम्'** अर्थात् **'पूरा विश्व एक परिवार है'**। इस बैठक में विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले देश शामिल होंगे। अतः भारत के पास एक अवसर होगा इन सभी देशों के साथ एक मैत्रीपूर्ण संबंध बनाना तथा कारोबार के अवसरों का लाभ उठाना। साफ़ शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यह अंतर्राष्ट्रीय मंच भारत के बढ़ते महत्व को दर्शाने की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत इस अवसर का लाभ उठाना चाहेगा। हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने 'मन की बात' में कहा, ''हमें वैश्विक भलाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। जी-20 की अध्यक्षता हमारे लिए एक बड़े अवसर के रूप में आई है। हमें इस अवसर का पूरा उपयोग करना चाहिए और वैश्विक भलाई व विश्व कल्याण पर ध्यान देना चाहिए। चाहे शांति हो या एकता, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता हो या सतत् विकास, भारत के पास चुनौतियों से संबंधित समाधान हैं।'' यह कहना भी उचित होगा कि वर्तमान में भारत इस मुकाम पर पहुंचा है कि आज दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं भारत को एक बड़े और उभरते बाजार के रूप में देख रही हैं। इसके पीछे भारतवासियों की वर्षों की कड़ी मेहनत है।

भारत की चुनौतियाँ और अवसर:

- **बेरोजगारी:** बेरोजगारी भारत की एक बड़ी समस्या है। जी-20 की अध्यक्षता के माध्यम से विश्व के बड़े देशों को निवेश के लिए आमंत्रित किया जा सकता है जिससे कि बेरोजगारी कम की जा सके।

● **वैश्विक स्तर पर नेतृत्व:** जी-20 की अध्यक्षता भारत के लिए एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जिसके माध्यम से भारत अपनी श्रेष्ठ कूटनीति के जरिए विश्व स्तर पर अपना नेतृत्व कौशल प्रस्तुत कर सकता है।

● **अंतर्राष्ट्रीय संबंध:** जी-20 की अध्यक्षता के जरिए भारत विश्व के सभी बड़े राष्ट्रों से अपना संबंध और बेहतर करेगा। जी-20 के कुछ देश जो मुखर रूप से भारत के पक्ष में खड़े नहीं होते, उन देशों से भारत बेहतर संबंध बनाने का प्रयत्न करेगा।

● **आर्थिक स्थिरता:** कोविड-19 महामारी ने पूरे विश्व की आर्थिक स्थिति को हिला कर रख दिया। कई देशों में आर्थिक मंदी आ गयी। पूरा विश्व आज भी कोविड-19 के दुष्प्रभाव से जूझ रहा है और इससे बाहर निकलने के लिए प्रयास कर रहा है। भारत जिस तरह से इस महामारी से संभाला और अपनी अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाए रखा, उसकी प्रशंसा पूरी दुनिया कर रही है। वर्ष 2023 में भारत की जीडीपी वृद्धि दर 7% अनुमानित है, जो कि विश्व की सभी बड़ी अर्थव्यस्थाओं में सबसे अधिक है। जी-20 की बैठक के दौरान विश्व के सभी बड़े देश भारत के साथ आर्थिक संबंध मजबूत करेंगे जिससे कि विश्व की आर्थिक स्थिति स्थिर हो सके।

● **जलवायु परिवर्तन:** जी-20 नेताओं ने वैश्विक तापमान वृद्धि को 5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयासों को आगे बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की है, यह पुष्टि करते हुए कि वे जलवायु परिवर्तन पर 2015 पेरिस समझौते के तापमान लक्ष्य के साथ खड़े हैं।

● **मुद्रास्फीति (inflation):** जी-20 की 17वीं बैठक के दौरान उच्च मुद्रास्फीति के संबंध में विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों ने ब्याज दरों में वृद्धि की है जिसके कारण आर्थिक गतिविधियों में कमी आई है। भारत के लिए चुनौती होगी कि इसे बेहतर कर आर्थिक गतिविधियों में तेजी लाई जाए।

● **UNSC में स्थायी सदस्यता:** 'संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद' (UNSC) में संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन को स्थायी सदस्यता प्राप्त है। सुरक्षा परिषद में समय-समय पर भारत को अस्थायी सदस्यता दी जाती रही है। भारत वर्षों से स्थायी सदस्यता के लिए मांग कर रहा है। स्थायी सदस्यता के लिए सभी पाँच स्थायी सदस्यों का समर्थन अनिवार्य है। भारत की स्थायी सदस्यता के लिए चीन को छोड़कर सभी स्थायी सदस्यों (संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, रूस) ने भारत का समर्थन किया है। भारत के अलावा जापान, जर्मनी और ब्राज़ील भी स्थायी सदस्यता के प्रमुख दावेदार हैं। 2023 में भारत में होने वाली जी-20 की बैठक में विश्व के सभी बड़े देश शामिल होंगे जिसमें सुरक्षा परिषद के सभी पाँच स्थायी सदस्य भी होंगे। ऐसे में भारत के लिए यह बड़ा अवसर होगा कि वह अपनी दावेदारी मजबूत करे।

इस अध्यक्षता के प्रत्याशित लाभ:- विशेषज्ञ इस बैठक को भारत के लिए एक बड़े अवसर के रूप में देख रहे हैं। ऐसे सुनहरे अवसर कई वर्षों में एक बार ही मिलते हैं। इस बैठक से होने वाले लाभ को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है:

● वैश्विक मंच पर भारत की छवि और बेहतर होगी।

● विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के साथ भारत के संबंध मजबूत होंगे।

● विश्व स्तर पर भारत का कारोबार बढ़ेगा।

● हाल ही में भारत, ब्रिटेन को पीछे छोड़ कर विश्व की पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बना। अतः पूरा विश्व भारत को वैश्विक लीडर के रूप में देख रहा है।

● संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत स्थायी सदस्यता के लिए अपनी दावेदारी प्रस्तुत करेगा।

● विश्व के बड़े देश भारत में निवेश करेंगे तथा कारोबारी संवृद्धि हेतु व्यापार सुगमता (ease of doing business) बेहतर होगी।

***

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 49)

1.	घ	8.	ख	15.	ग
2.	क	9.	क	16.	ख
3.	ख	10.	ख	17.	क
4.	घ	11.	घ	18.	ग
5.	ग	12.	ग	19.	घ
6.	घ	13.	क	20.	ख
7.	ग	14.	घ		

हिंदी-भारत की राजभाषा से विश्वभाषा

प्रीति राउत
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
कोलकाता मेट्रो - II क्षेत्र

प्रथम महायुद्ध के बाद स्वाधीनता की संकल्पना और आकांक्षा स्पष्ट तथा प्रबलतर हुई। राष्ट्रभाषा हिंदी ने इसका जन- जन में प्रसार किया । सन 1918 में इंदौर के आठवें हिंदी साहित्य सम्मेलन में अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी ने कहा, ''मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए । आप हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करें । हिंदी सब समझते हैं । इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्तव्य - पालन करना चाहिए।'' सन् 1947 तक भारत में राजसत्ता पर आसीन विदेशियों को भारत का सांस्कृतिक स्वरूप मोह न सका; क्योंकि भारतीय जनता से उसका संबंध शासक - शासित का था। उनका दृष्टिकोण, उद्देश्य और कार्यकलाप एक सीमित क्षेत्र में था, विशुद्ध राजनीतिक लक्ष्य प्राप्ति । वह भी अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य और कूटनीति की भाषा के माध्यम से तत्कालीन शासन प्रणाली में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात निर्मित संविधान के अंतर्गत शासन प्रणाली में जमीन - आसमान का अंतर था । उस समय विदेशी सरकार ऐसी भाषा का प्रयोग कर रही थी जिसे अधिकांश भारत न तो समझता था और न समझ सकता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक या अनेक भाषाओं का उपयोग किया जा सकता था जो राज्य के कार्यकलापों में प्रत्येक नागरिक की अभिव्यक्ति, रूचि और विचार आदान-प्रदान का साधन बन सके और सहायक हो, अनेकता के बीच एकता के प्रमाण - प्रतीक भारत का प्रतिनिधित्व कर सके और इस राष्ट्र की आत्मा को व्यक्त कर सके, राष्ट्र के विभिन्न वर्गों और तत्वों की भाषा बन सके, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विचारों की वाहिका बन सके ।

स्वाभाविक ही था कि सन 1947 में प्राप्त राजनीतिक स्वाधीनता के बाद हमारे संविधान निर्माता आधिकारिक रूप से राजभाषा संबंधी चिंतन करते । इसी चिंतन के तहत 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार करने का निर्णय लिया गया था । इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में व्यवस्था की गयी।

एक ऐसी अखिल भारतीय भाषा जो सांस्कृतिक एकता की बुनियाद व उनकी अनेकता को भाषिक अभिव्यक्ति देने में सक्षम हो, हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप के निर्माण की ऐतिहासिक प्रक्रिया के मुख्यत: चार बुनियादी आधार हैं:-

1. सांस्कृतिक - धार्मिक
2. आर्थिक - व्यापारिक
3. राजनीतिक - प्रशासनिक
4. सामाजिक - नवजागरण

सांस्कृतिक - धार्मिक

सांस्कृतिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के अखिल भारतीय स्वरूप के निर्माण और प्रचार - प्रसार का दौर आठवीं - दसवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शती के मध्यकाल तक का रहा है । देश के एक कोने से दूसरे कोने तक यात्राएं करने वाले विभिन्न प्रदेशों के यात्रियों के लिए एक सामान्य संपर्क भाषा की आवश्यकता थी। यह आवश्यकता तीर्थयात्रियों के अलावा तीर्थस्थलों के पंडों, पुजारियों, दुकानदारों और मजदूरों आदि की भी थी । सांस्कृतिक परम्पराओं के माध्यम के रूप में संस्कृत, पाली, प्राकृत तथा अपभ्रंश के दौर के बाद जनभाषा के रूप में हिन्दी को ही विकसित होने का अवसर मिला । नाथों के प्रमुख गुरु गोरखनाथ की आधार - भाषा हिन्दी रही है । दक्षिण के वैष्णव भक्ति आंदोलन, मध्ययुगीन

सूफी आंदोलन ने जनभाषा हिन्दी को अखिल भारतीय रूप देने में उल्लेखनीय योगदान दिया है ।

आर्थिक – व्यापारिक

अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार का आधार आर्थिक व्यापारिक गतिविधियां भी रही हैं । किसी भी सामाजिक संरचना के तहत विभिन्न प्रदेशों के निवासी जब आर्थिक सूत्रों में बंधते हैं तो आर्थिक क्रियाकलापों के प्रमुख केंद्रों की भाषा भी अपनी सीमाओं के नाम पर व्यापक रूप लेती हैं । मुगल काल में हिंदी प्रदेशों में स्थित बनारस, लखनऊ, आगरा, पटना, मुरादाबाद तथा दिल्ली जैसे प्रमुख व्यापारिक केंद्रों की आर्थिक गतिविधियों और व्यावसायिक लेन-देन की माध्यम आमतौर पर हिंदी ही थी । वाणिज्य-व्यवसाय बैंकिंग के आर्थिक एवं व्यवहार के मूल शब्दों में उस दौर के व्यापारिक सौदागर के अनेक शब्द मिलते हैं । जैसे पावती, हवाला और बयाना जैसे शब्द उसी दौर में विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित हुए।

राजनीतिक – प्रशासनिक

किसी भाषा के विकास और प्रचार-प्रसार में राज्य तथा प्रशासनिक ढांचे का महत्वपूर्ण योगदान होता है । खिलजी वंश के सम्राट अलाउद्दीन खिलजी के समय में हिंदी के प्रति शासन का नजरिया बदलना शुरू होता है । सन 1420 में अमीर खुसरो जैसे खड़ी बोली के आदि और प्रवर्तक कवि का दौर था । 13वीं-14वीं सदी तक उत्तर भारत में मुगल शासन की सुव्यवस्थित स्थापना के बाद मुगल साम्राज्य के विस्तार के साथ-साथ खड़ी बोली हिंदी का भी व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ । अकबर, जहांगीर और शाहजहां के दरबार में खड़ी बोली के कवियों को सम्मान तो मिला ही, यह शासक स्वयं भी हिंदी कविता में दिलचस्पी रखते थे । हिंदी की अखिल भारतीय प्रशासनिक व कानूनी शब्दावली में वसूली, करोड़ी, दीवान, कोतवाल, पटवारी, हल्का, मुद्दई जैसे कई शब्द हैं जो सर्व सामान्य रूप से स्वीकृत हैं तथा विभिन्न प्रदेशों की भाषाओं में भी प्रयोग में लाए जाते हैं। 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद अंग्रेज शासकों ने फूट डालकर राज करने की नीति अपनाई और भाषा व्यवहार के क्षेत्र में अंग्रेजी शासन की भाषा बन गई ।

सामाजिक-नवजागरण

आम निवेशकों ने पूंजीवाद की प्रगति के साथ ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में पूंजीवादी जनतंत्र की धारणा के विकास में 19वीं सदी के नवजागरण में एक अहम भूमिका निभाई है । भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का मूल प्रेरक तत्व भारतीय विदेश पूंजी रही है । ब्रिटिश साम्राज्यवादी पूंजी के प्रभुत्व के रहते हुए भारतीय देशी पूंजीपति वर्ग का विकास संभव नहीं था । आर्थिक, व्यापारिक और राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करना आवश्यक था और राजनीतिक स्वाधीनता के लिए जनमानस को जागृत करने में नागरिक स्वतंत्रता आवश्यक थी । अभिव्यक्ति की आजादी, स्वायत्तता और प्रशासनिक व कानूनी स्तर पर औद्योगिक नीतियों की रियायत जरूरी थी । ये तमाम आकांक्षाएं जनसामान्य की शोषण मुक्ति की आकांक्षाओं से जुड़कर भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में साकार हुई। नवजागरण के संदेश के माध्यम के रूप में पत्र-पत्रिकाओं और अन्य प्रचार – सामग्री के लिए हिंदी राष्ट्रव्यापी संदेश वाहिनी बनी और देश की अन्य भाषाओं के साथ आत्मीय संपर्क बनाते हुए अखिल भारतीय माध्यम व संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और नवजागरण की इसी भाव भूमि पर स्वाधीन भारत में हिंदी को संवैधानिक तौर पर राजभाषा के रूप में मान्यता देते हुए, शास्त्र के दायित्व को रेखांकित करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार के जो मूल्य मुद्दे बने उनमें हिंदी को भारत की सामाजिक-संस्कृति की संवाहिका के रूप में विकसित करने पर मुख्य रूप से बल दिया गया।

हिंदी के प्रचार – प्रसार के लिए कई संस्थानों ने उल्लेखनीय कार्य किया जैसे:- नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; हिंदी साहित्य सम्मेलन, मद्रास, 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति', वर्धा; गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद; हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा; हिंदी विद्यापीठ, मुंबई; महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना; मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, बैंगलोर ।

बीसवीं शताब्दी में मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' राष्ट्रीयता की पाठ्य पुस्तक के रूप में अवतरित हो चुकी थी। प्रसाद के नाटक के गीतों में राष्ट्रभाषा हिंदी का राष्ट्रीय रूप स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ । तत्कालीन कवियों ने अनेक राष्ट्रीय कविताएं लिखकर राष्ट्रीय आंदोलन को निखारा । इस प्रकार हिंदी तत्कालीन परिस्थितियों में प्रकाशनों के माध्यम से

राष्ट्र संबंधी विचारों के साथ आगे बढ़ती रही ।

भाषागत विकास, संस्कृति और सभ्यता के विकास का पर्याय इस अर्थ में है कि भाषा का विकास सभ्यता व संस्कृति के विकास के समानान्तर चलता है ।

विश्व की समृद्ध भाषाओं में हिन्दी का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति , वर्धा की पहल पर 10 जनवरी 1975 से 13 जनवरी 1975 तक नागपुर में हुआ । सम्मेलन के लिए भौगोलिक दृष्टि से भारत के मध्यभाग में स्थित नागपुर का चयन बहुत ही उचित रहा । सम्मेलन का उद्घाटन 10 जनवरी 1975 को मॉरीशस के प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया ।

आज हिंदी केवल भारत तक सीमित नहीं है, इसका विस्तार विश्व के लगभग 130 देशों में हो चुका है। हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ फ़िजी की भी राजभाषा है तथा मॉरिशस, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम में इसे क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। साथ ही साथ संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, साउथ अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, जर्मनी, सिंगापुर, कनाडा, यू.ए.ई जैसे देशों में भी हिंदी भाषी बड़ी संख्या में मौजूद हैं। यह विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।

मॉस्को (रूस) को दुनिया में हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन के प्रमुख केंद्रों में से एक माना जाता है। रूसी वैज्ञानिकों द्वारा हिंदी भाषा के अनेक शब्दकोशों और पाठ्य-पुस्तकों की रचना एवं हिंदी साहित्य का अनुवाद बड़े पैमाने पर किया जाता रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका में हार्वर्ड, येल, शिकागो, वाशिंग्टन, मोन्टाना, टेक्सास एवं कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालयों समेत कई अन्य विश्वविद्यालयों में भी हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। वैश्विक स्तर पर भारत के बढ़ते आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक प्रभाव को देखते हुए, भारत की राजभाषा हिंदी को सीखने, जानने की ललक विदेशों में बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में 17 सितंबर, 2001 को भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय के अस्थायी कार्यालय की स्थापना मॉरीशस में की गयी। इंडोनेशिया में भारतीय संस्कृति के प्रभाव को भाषा के अलावा वहाँ के रहन - सहन, खान - पान और गीत - नृत्यों में देखा जा सकता है । संयुक्त राज्य अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य के दक्षिण में, मैक्सिको के पूर्व में , छोटे-बड़े द्वीपों का समूह क्यूबा आज विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है । 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में कुछ भारतीय मजदूर त्रिनिदाद से जमाइका होते हुए क्यूबा पहुंचे थे । भारत सरकार की विदेशों में हिन्दी प्रचार तथा सांस्कृतिक आदान - प्रदान योजना के अंतर्गत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के तत्त्वावधान में अगस्त 1979 में पहली बार यहाँ हिन्दी का अध्ययन शुरू हुआ ।

हिंदी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। भाषा वही जीवित रहती है, जिसका प्रयोग जनता करती है। आज हिन्दी का प्रयोग विश्व फ़लक पर हो रहा है। तकनीक के क्षेत्र में हिन्दी ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है ।

***

ज़िंदगी

ज़िंदगी को एक सफर है जाना ।
कभी खुशनुमा कभी सुहाना ।।
किया जब कभी महसूस गमगीन ।
फिर सोचा इसे बनाऊँ रंगीन ।।
मिली जो मुझे एक बार है ।
खुशी में लगे ये बहार है ।।
गमों को कहती हूँ जाओ यहाँ से ।
खुशियाँ ही खुशियाँ ढूंढ लाओ जहाँ से ।।
नहीं शिकवा रहेगा कुछ तुझसे ।
जब भी मिलेगी हंस के तू मुझसे ।।
हमेशा तुझे मुस्कुराती मिलूंगी ।
हसीन पलों को जीती मिलूंगी,
गमों को अपने भुलाती मिलूंगी ।।
तुझे भी मुझसे बहुत रश्क होगा ।
जब मुझे तुझसे ही इश्क होगा ।।
क्योंकि ज़िंदगी पल-पल ढलती है ।
जैसी भी है एक बार मिलती है ।।

श्रुति मलिक
मुख्य प्रबंधक और संकाय,
बड़ौदा अकादमी, नई दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैंक के विभिन्न कार्यालयों/ शाखाओं में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बैंक में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियां हम अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं: संपादक

अंचल कार्यालय, लखनऊ

अंचल कार्यालय, पुणे

अंचल कार्यालय, जयपुर

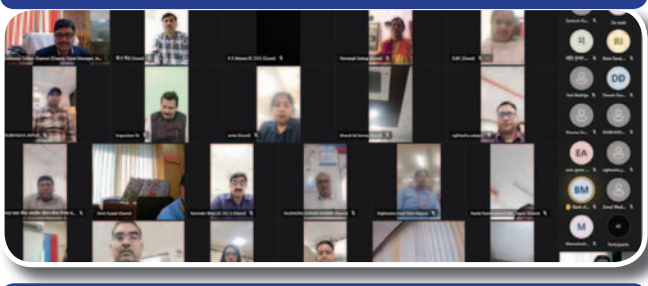

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली एवं पूर्वी दिल्ली क्षेत्र

अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु

अंचल कार्यालय, राजकोट

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

सरकारी संपर्क एवं पीएसयू व्यवसाय विभाग

क्षेत्रीय कार्यालय, सवाई माधोपुर

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्ग

क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

क्षेत्रीय कार्यालय, वलसाड

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा शहर

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा जिला

क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

क्षेत्रीय कार्यालय, गुड़गांव

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

क्षेत्रीय कार्यालय, राजकोट

क्षेत्रीय कार्यालय, जलगांव

क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला

अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा मराठी भाषा संवर्धन दिवस आयोजित

अंचल कार्यालय, मुंबई द्वारा मराठी भाषा संवर्धन दिन के उपलक्ष्य में दिनांक 22 फरवरी 2023 को 'बोलू कौतुके' एक अनूठे कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध मराठी समाचार- वाचक श्री दीपक वेलणकर एवं उनके 10 सहकारियों ने कथा- कथन, अभिवाचन, नाट्य वाचन एवं कविता वाचन आदि की मराठी - हिंदी में प्रस्तुति दी।

परवरिश

ज्योति अग्रवाल
प्रबंधक (राजभाषा)
सवाई माधोपुर क्षेत्र

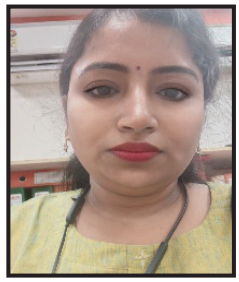

नई बातें सिखाने के लिए कभी बनायी कहानी,
सहारा बनकर आयी, कभी दादी तो कभी नानी।
आसान नहीं है यह परवरिश!
एक पतली सी लकीर है, माँ से दोस्त बनने में,
कब करनी है पार, दुविधा हो जाती यह समझने में!
आसान नहीं है यह परवरिश
सिखाने-समझाने के इस सफ़र में कभी फ़ेल भी हो जाती हूँ,
आख़िर इंसान हूँ, हार कर भी कुछ नया ही सीख पाती हूँ।
आसान नहीं है यह परवरिश
अच्छी राह पर रखने के लिए कभी ख़ुद बरसाये आँसू,
मन में कई बार प्रश्न उठा, क्या मैं अच्छी माँ हूँ?
आसान नहीं
है यह परवरिश!
ख़ुद को सक्षम बनाने की हरदम रहती है ख्वाइश,
कभी होता है आसान, तो कभी है यह कशिश,
करती रहूंगी बेहतर माँ बनने की सदा मैं कोशिश,
चाहे कितनी ही मुश्किल क्यों ना हो यह परवरिश!!

आप कुछ नहीं जानती। आप और माओं जैसी स्मार्ट नहीं हैं। पीहू की मम्मा कितनी स्मार्ट है, नई- नई डिशेस बनाती हैं, घुमाने ले जाती हैं, सुबह स्कूल छोड़ने आती हैं, लेने भी आती हैं, फुल टाइम मस्ती करती हैं पीहू के साथ। आपको तो अपने ऑफिस से ही फुर्सत नहीं है।

कुछ ऐसे वाकये सामने आते हैं, जब बच्चे बड़े हो रहे हों, अपने आस-पास की चीजों को सूक्ष्मता से निरीक्षण करने लगते हों, अपने माता-पिता और जीवन शैली की तुलना दूसरे बच्चों के माता-पिता और जीवन शैली से करने लगते हों।

काम-काजी माओं के लिए घर, बच्चे और ऑफिस को मैनेज करने की दोहरी ज़िम्मेदारी होती है। कभी-कभी समाज और रिश्तेदार भी कहना शुरू कर देते हैं कि क्या जरूरत है घर से बाहर जाकर कमाने की, जब अकेले पति की कमाई से भी घर चल सकता है। परिवार और बच्चों की ज़िम्मेदारी से

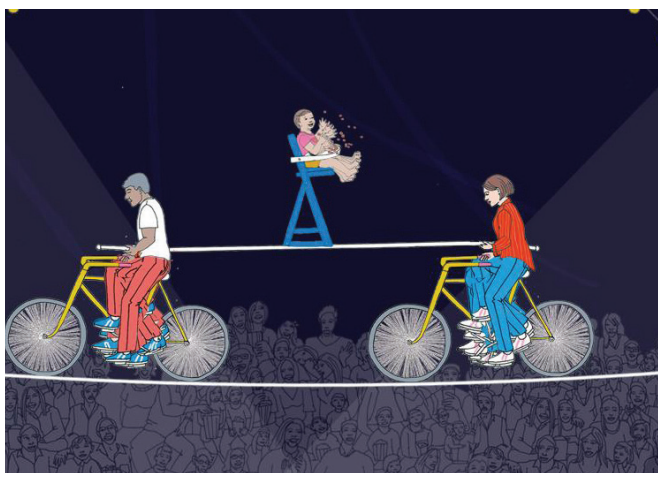

आजादी चाहिए मैडम को। बाहर जाने से आजादी जो मिलती है ।

पर क्या सच में स्त्री के लिए यह आजादी है? या स्व-अस्तित्व को बचाने की जद्दोजहद, अपनी शैक्षणिक योग्यताओं, अपनी बुद्धिमता को उपयोग किए जाने की इच्छा, समाज की बेहतरी में अपना भी योगदान देने की इच्छा।

और पुरुष प्रधान समाज में तो अघोषित रूप से आज भी कई जिम्मेदारियाँ सिर्फ और सिर्फ औरत के पल्लू से ही बंधी नजर आती हैं। बच्चों के पालन पोषण की ज़िम्मेदारी, उनका स्वास्थ्य खराब हो तो ऑफिस से छुट्टी लेने की ज़िम्मेदारी, उन्हें संस्कार देने की ज़िम्मेदारी, ऑफिस से वापस आकर उनके साथ समय बिताने की ज़िम्मेदारी, उनकी पढ़ाई पर ध्यान देने की ज़िम्मेदारी, खुद थके हुए घर आओ तो भी घर आकर सबको चाय पिलाने की ज़िम्मेदारी, खाना बनाकर खिलाने की ज़िम्मेदारी,

हालांकि, यह ज़िम्मेदारी नहीं हैं, ये कर्तव्य हैं जो माता और पिता दोनों को ही निर्वहन करना होता है पर अबोध बच्चे जीवन की वास्तविकता और व्यावहारिक बाधाओं को उस नजरिए से नहीं देख पाते, जिस नजरिए से माता-पिता उन बाधाओं का सामना कर रहे होते हैं।

बच्चे, माता-पिता की पूंजी होते हैं। हर मां-बाप चाहते हैं कि उनके बच्चे की परवरिश अच्छे से हो। ऐसे में माता-पिता को बच्चों के लिए भरपूर वक्त निकालना चाहिए। बच्चों को डांटने, मारने-पीटने की जगह हर बात प्यार से समझानी चाहिए। अभिभावकों को बच्चों के प्रति केयरिंग, लविंग और धैर्यवान होना चाहिए। अगर माता-पिता संवेदनशील होंगे तो बच्चों को बेहतर परवरिश दे पाएंगे।

बच्चों की बेहतर परवरिश के लिए हमें कुछ बातों का ध्यान रखना होगा:-

1. पैसे की अहमियत बताएं-

माना कि आप दोनों नौकरी पेशा में हैं, बच्चों की हर मांग पूरी कर सकते हैं, पर फिर भी सिर्फ वे ही मांगे पूरी करें जो वाज़िब हों। उनकी हर इच्छा पूरी न करें, उन्हें पैसे की अहमियत का अहसास दिलाएँ। उन्हें पता होना चाहिए कि जो चीज उनके लिए आसानी से सुलभ है, उसे कमाने के लिए माता-पिता को किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

2. उन्हें विनम्र होना सिखाएँ:-

जब बाकी बच्चों से वे आर्थिक रूप से अधिक सशक्त होते हैं तो तुलनात्मक रूप से कम आर्थिक संपन्नता वाले बच्चों को वे हेय दृष्टि से न देखने लगें, उन्हे अपने माता पिता के कमाए पैसों पर घमंड न होने लगे।

3. संयुक्त परिवार में रहना सिखाएँ-

इंडोर गेम्स, मोबाइल, प्ले स्टेशन आदि उपलब्ध होने पर बच्चे परिवार के अन्य सदस्यों से घुलने मिलने से कतराते हैं, इसे अपने समय की बरबादी समझते हैं। बच्चों को अहसास कराएं कि परिवार के अन्य सदस्यों के साथ समय बिताना, घुलना मिलना, उनसे बातें करना कितना जरूरी है। वरना कभी-कभी वे खुद को भावनात्मक रूप से बहुत कमजोर पाते हैं।

भावनात्मक सशक्तता संयुक्त परिवार में ही आती है। उन्हें संयुक्त परिवार में रहना सिखाएँ। यदि एक ही शहर में नियुक्ति हो, व्यावहारिक रूप से संभव हो तो उन्हें दादा-दादी, चाचा चाची आदि के साथ ही रखें। उन्हें खुल कर जीने दें।

4. नैतिक शिक्षा जरूर दें-

कुछ वर्षों तक यह पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा हुआ करती थी परंतु अब इस पर महत्व देना कम होना शुरू हो गया है। जबकि बाल्यकाल से दी गई नैतिक शिक्षा बच्चे में सहज वृति का निर्माण करती हैं, नैतिक मूल्यों से अवगत कराती हैं जिससे भविष्य में वे एक अच्छे इंसान बन सकें । दूसरों के दुख को महसूस कर सके। अपनी ओर से कभी किसी को पीड़ा न पहुचाएँ।

5. दोस्ताना व्यवहार करें:

बच्चों को महसूस कराएं कि आप सिर्फ उनके माता पिता ही नहीं बल्कि उनके मित्र भी हैं। स्कूल से आने के बाद उनसे बात करें। उनके दोस्तों के बारे में जानें। आज स्कूल में क्या खास हुआ इसके बारे में बात करें। बात शुरू होने के बाद बच्चा खुद ही सारी बाते साझा करने लगेगा। अपने विचार, अपनी सोच, नए आइडिया साझा करेगा। आपसे मार्गदर्शन लेने लगेगा।

6. उन्हें जिम्मेदार बनाएँ:

उम्र के साथ आप उन्हें जिम्मेदार बनाने की कोशिश करें। उन्हें छोटे- छोटे काम करने को कहें। उन पर विश्वास जताएं। जब आप उन्हें जिम्मेदार बनाएंगे तो उनकी मानसिक क्षमता का विकास होगा। उन्हें रूपये दें और उन्हें बताएं कि इतने ही रूपये में उन्हें सामान लाना होगा। ऐसा करने से वे सीखेंगे। जरूरत पड़ने पर वे खुद से यह सब काम करने लगेंगे।

7. घर का माहौल अच्छा रखें

अगर आप घर का माहौल खुशनुमा रखेंगे तो बच्चों की परवरिश सही ढंग से होगी। अगर आप घर का माहौल तनाव भरा रखेंगे तो बच्चे भी डरे, सहमे और चिंतित रहेंगे। इसलिए बहुत जरूरी है कि आप घर के माहौल को बहुत प्यार भरा रखें ताकि बच्चे खुश रहें। बच्चे खुश रहेंगे तो वे आपसे जुड़े रहेंगे, उन्हें घर पर रहना भी अच्छा लगेगा। वे बाहर भी लोगों से खुशियां ही बांटेंगे। वे खुश रहना ही सीखेंगे।

8. अधिकार न जताइए

कभी-कभी माता-पिता में वैचारिक मतभेद होने पर वे बच्चों पर अपना-अपना अधिकार जताने लगते हैं। यदि किशोरावस्था में आप बच्चों पर अधिकार जताएंगे तो उन्हें लगेगा कि वे दबाव में रह रहे हैं। वे आपके बीच घुटन महसूस करने लगेंगे। उनका दिमाग स्वतंत्र नहीं रह सकेगा। दिन-ब-दिन वे बागी होने लगेंगे। उनके मन में नकारात्मक भाव आने लगेंगे। वे अकेले रहना ज्यादा पसंद करेंगे। वे समय के साथ आपसे दूर हो जाएंगे। इसलिए उनपर अधिकार जताने की बजाय उन्हें खुद के साथ शामिल करें।

9. गलती होने पर डांटे नहीं-

अगर बच्चों से कोई गलती भी हो जाती है तो उन्हें प्यार से समझाएं। उनके प्रति नाराजगी जाहिर न करें। अच्छे से अपनी जिम्मेदारी निभाएं और प्यार से बच्चों को गलत और सही के बारे में बताएं। बच्चों को डांटने की जगह उनकी गलती का अहसास कराएं और यह बताने की कोशिश करें कि वह अपनी गलती को कैसे सुधार सकते हैं?

10. समानुभूति का भाव रखें-

अभिभावकों के भीतर सहानुभूति होना बेहद जरूरी है। अच्छे अभिभावक अपने बच्चों के विचार से चीजें सोचते हैं। वह बच्चे की जगह खुद को रखकर चीजों को समझने की कोशिश करते हैं और उसके बाद प्यार से बच्चों को चीजें समझाते हैं। आप कभी भी अपने बच्चे पर अनावश्यक दबाव न डालें और न ही उसके मन में बचपन से ही प्रतिस्पर्धा का भाव भरें। अच्छे अभिभावक कभी भी बच्चों को दबाव में नहीं आने देते, उन्हें दबाव से बाहर निकालते हैं।

परवरिश के दौरान होने वाली गलतियां -

कुछ बच्चे स्वभाव से जिद्दी होते हैं, ऐसे में माता-पिता उनकी जिद को दूर करने के लिए उन्हें मारना पीटना शुरू कर देते हैं. लेकिन बता दें कि इससे उनकी मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है. मार के डर से बच्चे तनाव की स्थिति का सामना कर सकते हैं.

कुछ माता-पिता बच्चों को डराना शुरू कर देते हैं. लेकिन डराना परवरिश की गलत आदतों में से एक है. बच्चों के मन में अगर एक बार डर बैठ जाए तो उनके अंदर आत्मविश्वास की कमी भी आने लगती है. ऐसे में बच्चों को डराने की बजाय उन्हें समझाएं और नए काम के लिए उनमें उत्सुकता बढ़ाएं.

अक्सर माता-पिता घर की जिम्मेदारी और ऑफिस की जिम्मेदारी के बीच ग्रस्त हो जाते हैं और ध्यान नहीं दे पाते. यह भी बच्चों में तनाव की स्थिति का कारण बन सकता है. बच्चे खुद को अकेला समझने लगते हैं, जिसके कारण उन्हें तनाव होने लगता है.

कुछ माता-पिता को लगता है कि अनुशासन सिखाने के लिए बच्चों के साथ सख्ती करना जरूरी है. लेकिन सख्ती के कारण बच्चे अनुशासन नहीं बल्कि जिद्दी बन जाते हैं और साथ ही बच्चों को मानसिक समस्याएं भी हो सकती हैं. ऐसे में अनुशासन के लिए आप सख्ती का इस्तेमाल ना करें.

बच्चों की परवरिश जिस प्रकार के वातावरण में होगी, बच्चे का जीवन भी उसी प्रकार का होगा । अर्थात् बच्चों की मानसिक स्थिति, स्वास्थ्य, आत्मसम्मान आदि सभी उनकी परवरिश पर ही निर्भर करते हैं। बच्चों की परवरिश अलग-अलग प्रकार की होने की वजह से ही उनमें-अलग अलग गुण पाए जाते हैं। परवरिश कई प्रकार से की जाती है और उन सभी परवरिश के तरीकों को हम परवरिश की शैलियों का नाम देते हैं।

***

कृत्रिम मेधा, भारतीय भाषाएं एवं बैंकिंग

संजय सिंह
प्रमुख - राजभाषा एवं संसदीय समिति

मौजूदा दौर में तकनीक के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा जिसे अंग्रेजी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नाम से जानते हैं, एक बहुचर्चित शब्द है। प्रत्येक क्षेत्र में डिजिटलीकरण की बढ़ती भूमिका ने नव-डिजिटलीकरण के युग की राह आसान की है। कृत्रिम मेधा के इतिहास की बात करें तो जॉन मैकार्थी ने वर्ष 1956 में इस शब्द को गढ़ा था। कृत्रिम मेधा को मूर्त रूप देने वाला दुनिया का पहला रोबोट 'शकी' था जिसे वर्ष 1969 में तैयार किया गया था। इसी प्रकार 1997 में सुपरकंप्यूटर 'डीप ब्ल्यू' और 2002 में पहला सफल रोबोटिक वैक्यूम क्लीनर तैयार किया गया। आज आवाज की पहचान करने वाली तकनीक, रोबोटिक प्रक्रिया स्वचालन, डांसिंग रोबोट, स्मार्ट होम्स का प्रचलन बढ़ा है जो कि कृत्रिम मेधा पर ही आधारित है । इस तरह की अन्य सुविधाएं आज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं।

कृत्रिम मेधा आधारित कार्यपद्धति पारंपरिक पद्धति से बिलकुल अलग है। हालांकि कार्य करने का यह नया तरीका पारंपरिक कार्यप्रणाली की जमीन पर ही तैयार किया गया है और यह दुनिया को डिजिटल व्यवस्था से एक कदम आगे के उन्नत स्तर पर ले जाने की कोशिश है। वर्तमान समय में पूरा विश्व इस क्षेत्र में बड़ी तेजी से कार्य कर रहा है कि कृत्रिम मेधा को अलग-अलग क्षेत्रों में किस तरह से जल्द से जल्द अपनाया जा सके। इस पद्धति के माध्यम से मनुष्य के लिए कई सुविधाएं और भी आसानी से और कम समय में उपलब्ध हो सकेंगी। यह पिछली गतिविधियों के स्वरूप और व्यवहार और आंकड़ों पर आधारित एक प्रणाली है जो काफी सीमा तक मानव तथा अन्य गतिविधियों के व्यवहार को समझने की क्षमता रखता है।

भाषा के क्षेत्र में कृत्रिम मेधा - उपयोग एवं संभावनाएं:

कृत्रिम मेधा का उपयोग ऐसे कई कार्यों के लिए प्रभावी है जो मनुष्य के लिए जोखिम से भरे हैं, मुश्किल या अनुकूल नहीं हैं। इस तकनीक के उपयोग से मनुष्य उन सभी सीमाओं तक पहुंच सकता है जहां तक की वह अभी तक पहुंचने में सक्षम नहीं हो सका है। आज किसी भी क्षेत्र में कृत्रिम मेधा का उपयोग बेहतर परिणाम देने के साथ-साथ विश्लेषण की एक व्यापक संभावनाएं सृजित कर रहा है। इसके माध्यम से जनसामान्य, उपभोक्ताओं, उपयोगकर्ताओं के उपयोगी अभिमत प्राप्त करने में सहायता मिल रही है। ऐसे अभिमत बेहतर शासन-व्यवस्था, अनुकूल, लक्ष्य-आधारित और शीघ्र कार्रवाई की राह को आसान बनाते हैं। कृत्रिम मेधा के सहयोग से कॉर्पोरेट्स और अन्य कंपनियां आज अपने लक्ष्य समूह की पसंद और प्राथमिकता को समझ रही हैं, उसके बाद अपने लक्ष्य-समूह तक पहुंच बना रही हैं। उनके कार्य करने का यह तरीका पारंपरिक तरीके से अलग और प्रभावी है। कृत्रिम मेधा के इस्तेमाल से भाषाओं से जुड़ी जटिलता पर भी जीत पाई जा सकती है। कुछ माह पूर्व फेसबुक की स्वामित्व वाली कंपनी मेटा के मुख्य कार्याधिकारी (सीईओ) मार्क जुकरबर्ग ने एक ऑनलाइन प्रेजेंटेशन में कहा, 'किसी भी भाषा में किसी के साथ संवाद करने की क्षमता एक ऐसी ताकत है जिसके बारे में लोगों ने हमेशा सोचा है और एआई हमारे जीवनकाल में ही यह सच करने जा रही है।' इस दिशा में 'बोलने से अनुवाद को जोड़ना' भाषा और तकनीक के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन होगा। कंपनी 'नो लैंग्वेज लेफ्ट बिहाइंड' और 'यूनिवर्सल स्पीच ट्रांसलेटर' परियोजना पर कार्य कर रही है। इससे एक ही समय में बोलने और अनुवाद की प्रक्रिया संभव हो सकेगी। इस प्रकार से सभी भाषाओं में तात्कालिक अनुवाद की सुविधा भी उपलब्ध होगी। इसी परियोजना के तहत मेटा ने कृत्रिम-मेधा आधारित स्पीच-ट्रांसलेशन की शुरूआत की है जिसमें ऐसी 3,500 भाषाओं को भी शामिल किया है जिनका लिखित रूप नहीं है और जो बोली जाती है। कृत्रिम-मेधा के जरिए यह पहल बोली जाने वाली भाषा और लिखी जाने वाली भाषा के बीच के अंतर को मिटा सकती है और भाषाओं के लुप्त होने के खतरों को भी दूर किया जा सकता है।

इसके अलावा गूगल और ऐपल जैसी तकनीकी कंपनियां भी इस दिशा में प्रयासरत हैं। आज गूगल ट्रांसलेटर उपकरण के जरिए एक व्यापक स्तर पर अनुवाद कार्य चल रहा है

और समय के साथ अनुवाद की गुणवत्ता में भी सुधार हो रहा है। इस दिशा में और गुणवत्ता लाने के लिए कृत्रिम मेधा की भूमिका बहुत अहम होगी। भारत सरकार भी राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (एनएलटीएम) नाम के पहल पर काम कर रही है। एनएलटीएम का लक्ष्य स्पीच टू स्पीच मशीन ट्रांसलेशन का निर्माण करना और भारतीय भाषाओं के अनुवाद के लिए एक एकीकृत भाषा इंटरफेस (यूएलआई) तैयार करना है ताकि भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी की दिशा में कई कोशिशें एक साथ की जा सकें।

तकनीकी युग ने मांग के सापेक्ष सुविधाओं को प्राप्त करने की दूरी और समय को कम किया है। आज कई सुविधाओं के लिए हम दूर बाज़ार में जाने के बजाय चंद मिनटों में इंटरनेट पर सर्च कर अपनी जरूरत का सामान ऑनलाइन उपलब्ध करवा लेते हैं। गूगल सर्च के माध्यम से शायद ही दुनिया की ऐसी कोई चीज़ होगी जो ढूंढने से नहीं मिलेगी। आज आवाज के जरिए हम चंद सेकेंड में कोई भी चीज़ गूगल पर सर्च कर सकते हैं। कंपनियां इस सर्च को आसान बनाने के लिए कृत्रिम मेधा का उपयोग बढ़ा रही हैं और एक साथ कई भाषाओं के उपयोग का विकल्प ग्राहकों को दे रही हैं। हाल ही में गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने अपने भारत दौरे के दौरान 100 से अधिक भारतीय भाषाओं के लिए एक इंटरनेट सर्च मॉडल को विकसित करने की बात कही है। इंटरनेट तक किफायती पहुंच बनाने के लिए गूगल ने 10 अरब डॉलर का भारत डिजिटलीकरण कोष शुरू किया है। गूगल ने अपने गूगल-पे ऐप के लिए एक नए सिक्यूरिटी फीचर ट्रांजेक्शन सर्च की सेवा का शुभारभ किया है। इस फीचर में उपयोगकर्ता अपनी आवाज के जरिए भी लेनदेन को देख सकेंगे और क्षेत्रीय भाषा में भी अलर्ट प्राप्त कर सकेंगे। आने वाले दिनों में यूट्यूब पाठ्यक्रम की शुरूआत की जाने की संभावना है। इसकी मदद से कंटेंट क्रिएटर्स अपने कोर्स को मॉनिटाइज भी कर सकेंगे। यह भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में रोजगार की नई संभावनाओं को सृजित करने में सहायक होगा।

आज की कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौर में कृत्रिम मेधा बैंकों के लिए ग्राहकों की पसंद की बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए एक सशक्त माध्यम साबित हो रही है। आने वाले दिनों में पूरा बैंकिंग उद्योग इसी तकनीक पर आधारित होने वाला है। लंबे समय से बैंकों के समक्ष ग्राहकों के मौजूद डेटा का विभिन्न दृष्टिकोण से विश्लेषण कर उसका ग्राहकों की अभिरूचि, उनकी बैंकिंग आवश्यकताएं आदि समझने में उपयोग करना एक बड़ी चुनौती रहा है क्योंकि इतने बड़े ग्राहक आधार के डेटा को मानवीय श्रम से विश्लेषित नहीं किया जा सकता है ऐसे में कृत्रिम मेधा ने इस चुनौती को न केवल व्यापक रूप से सुलझाया है बल्कि ग्राहकों को बेहतर ग्राहक अनुभव प्रदान करने के लिए प्रयासों की दिशा तय करने में भी सहायता की है।

बैंक के ग्राहकों की भाषाई पसंद जानने की दृष्टि से कृत्रिम मेधा एवं डेटा एनालिटिक्स का उपयोग

कॉन्टैक्ट सेंटर में प्राप्त फोनकॉल का विश्लेषण:

बैंक ऑफ़ बड़ौदा अपने कॉन्टैक्ट सेंटर में प्राप्त फोनकॉल संबंधी डेटा को ग्राहक की पसंदीदा भाषा जानने के लिए एक विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक आधार मानता है। कृत्रिम मेधा एवं डेटा एनालिटिक्स की दृष्टि से आवश्यक तकनीकी आधार तैयार कर बैंक में कॉल सेंटर पर प्राप्त होने वाले फोन का गहन विश्लेषण किया गया। तदनुसार बड़ा ही सकारात्मक एवं रोचक निष्कर्ष सामने आया कि लगभग 87 प्रतिशत ग्राहक हिंदी में बात करने, सेवाएं प्राप्त करने में सहज महसूस करते हैं. यही कारण है कि बैंक ऑफ़ बड़ौदा के सभी उत्पादों में भाषावार विकल्प उपलब्ध करवाने में हमने अत्यंत तत्परता दर्शाई है. कॉन्टैक्ट सेंटर में प्राप्त फोनकॉल संबंधी भाषावार डेटा:

कांटेक्ट सेंटर में इनकमिंग कॉल के भाषावार आंकड़ों की स्थिति

उत्पाद का नाम	भाषा	जून, 2022 तिमाही		सितंबर, 2022 तिमाही		अक्तूबर एवं नवंबर, 2022 माह	
		प्रयोक्ताओं की संख्या	%	प्रयोक्ताओं की संख्या	%	प्रयोक्ताओं की संख्या	%
कांटेक्ट सेंटर (ग्राहक सेवा केंद्र)	हिन्दी	3731433	85.63	3959143	87.43	2275363	87.66
	अंग्रेजी	221057	5.07	209323	4.62	117082	4.51
	गुजराती	114754	2.63	104721	2.31	56846	2.19
	कन्नड़	68952	1.58	60792	1.34	33036	1.27
	मराठी	53182	1.22	50716	1.12	32744	1.26

	तेलुगु	54114	1.24	44341	0.98	26394	1.02
	तमिल	48899	1.12	36516	0.81	18818	0.72
	बांग्ला	34831	0.80	36066	0.80	21067	0.81
	मलयालम	18029	0.41	14149	0.31	7271	0.28
	उड़िया	9534	0.22	10096	0.22	5891	0.23
	पंजाबी	2634	0.06	2424	0.05	1111	0.04
	कुल	4357419		4528287		2595623	

कृत्रिम मेधा एवं मोबाइल बैंकिंग:

वर्ष 2021 में शुरू बैंक के मोबाइल बैंकिंग ऐप बॉब वर्ल्ड से 20 मिलियन से भी अधिक सक्रिय ग्राहक जुड़े हुए हैं। बैंक इन सभी ग्राहकों को नवीनतम तकनीक के जरिए बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहा है। इस ऐप में ग्राहकों के लिए अंग्रेजी सहित 13 भाषाओं में बैंकिंग सुविधाओं का विकल्प उपलब्ध है। बैंक का यह ऐप चार स्तंभों यथा – **बचत, निवेश, उधार और खरीदारी–भुगतान** पर आधारित है।

कृत्रिम मेधा एवं डेटा एनालिटिक्स के आधार पर ग्राहकों द्वारा बॉब वर्ल्ड ऐप के उपयोग का भाषावार विश्लेषण बैंक द्वारा अब संभव कर दिया गया है। डिजिटल माध्यमों में अब इस तकनीक से भारतीय भाषाओं के उपयोग संबंधी डेटा प्वाइंट मिलने लगे हैं:

बॉब वर्ल्ड ऐप में भाषावार सबस्क्राइबर्स की स्थिति

उत्पाद का नाम	स्थिति	पिछली तिमाही (31.07.2022 तक)	वर्तमान तिमाही (31.10.2022 तक)	वृद्धि	वर्तमान तिमाही
	भाषा	प्रयोक्ताओं की संख्या	प्रयोक्ताओं की संख्या	पिछली तिमाही से वृद्धि	वृद्धि (%)
(मोबाइल बैंकिंग ऐप)	हिन्दी	776975	943461	166486	21.43
	गुजराती	236214	279888	43674	18.49
	बांग्ला	7218	8438	1220	16.90
	कन्नड़	26928	31338	4410	16.38
	तेलुगु	14932	17377	2445	16.37
	मलयालम	14894	17439	2545	17.09
	तमिल	15604	18282	2678	17.16
	उड़िया	2976	3205	229	7.69
	पंजाबी	4093	4777	684	16.71
	मराठी	32044	41965	9921	30.96
	असमिया	438	489	51	11.64
	उर्दू	537	618	81	15.08

कृत्रिम मेधा एवं लेनदेन संबंधी एसएमएस:

बैंक के मोबाइल बैंकिंग ऐप बॉब वर्ल्ड का इंटरफेस हिंदी सहित 12 क्षेत्रीय भाषाओं में मौजूद है। बॉब वर्ल्ड के माध्यम से हिंदी भाषा का चयन करने वाले सबस्क्राइबर्स को हिंदी में एसएमएस प्रदान करने की सुविधा बैंक द्वारा लाइव कर दी गई है। यह सुविधा कृत्रिम मेधा पर आधारित है और बहुत ही डायनेमिक है। प्रयोक्ता द्वारा हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा के चयन के अनुरूप तत्काल प्रभाव से चयनित भाषा में एसएमएस प्राप्त होने लगते हैं। इसके अतिरिक्त बैंक के बिजनेस नंबर पर एसएमएस भेजकर अथवा फिनेकल मेनू से लेनदेन एसएमएस हेतु पसंदीदा भाषा दर्ज करने का विकल्प भी उपलब्ध कराया गया है। कृत्रिम मेधा एवं डेटा एनालिटिक्स तकनीक से युक्त संबंधित डैशबोर्ड से ग्राहकों द्वारा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में एसएमएस पंजीकरण करने की सूचना प्राप्त होने लगी है:

भाषा	01.08.2022 तक पंजीकरण	02.08.2022 से 30.11.2022 तक कुल पंजीकरण	संचयी आधार पर कुल पंजीकरण	दिनांक 01.08.2022 से वृद्धि %
हिंदी	860430	1274589	2135019	148.13
प्रांतीय भाषाएं	212062	281565	493627	132.77
कुल	1072492	1556154	2628646	145.10

शाखा स्तर पर ग्राहकों की सहमति लेकर फिनेकल के माध्यम से ग्राहकों को प्राप्त होने वाले ट्रांजेक्शनल एसएमएस हेतु उनकी पसंदीदा भाषा दर्ज करने के उद्देश्य से बैंक द्वारा अपने बैंकिंग सॉफ्टवेयर फिनेकल में हाल ही में SMSLNG मेनू विकसित किया गया है। इस हेतु पहले चरण में वित्तीय समावेशन संबंधी खातों में भाषायी विकल्प दर्ज करने की व्यवस्था की जा रही है।

SMSLANG मेनू के माध्यम से भाषा का चयन करने वाले ग्राहकों का विवरण

क्र सं	भाषा	ग्राहकों की संख्या	कुल में %
1	कन्नड	709	33.62
2	अंग्रेजी	474	22.48
3	हिंदी	392	18.59
4	गुजराती	151	7.16
5	मराठी	108	5.12
6	बांग्ला	71	3.37
7	तेलुगु	64	3.03
8	उड़िया	46	2.18
9	तमिल	46	2.18
10	उर्दू	23	1.09
11	मलयालम	22	1.04
12	पंजाबी	3	0.14
	कुल	**2109**	

कृत्रिम मेधा एवं बैक की व्हाट्सऐप बैंकिंग सुविधा (8433888777)

बैंक द्वारा शुरू की गई व्हाट्सऐप बैंकिंग की सुविधा हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में दी जा रही है। व्हाट्सऐप बैंकिंग के माध्यम से भी बैंक द्वारा रियल टाइम आधार पर ग्राहकों को बैंकिंग सुविधाएं दी जा रही हैं। यह सुविधा घरेलू एवं चयनित देशों में अंतर्राष्ट्रीय मोबाइल नंबरों पर उपलब्ध हैं। इस सुविधा के तहत विभिन्न डिजिटल सुविधाएं, फॉरेक्स सेवाएं, अनुरोध सेवाएं, बड़ौदा फास्ट टैग सुविधा, नकदी प्रबंधन सेवाएं, ऋण सेवाएं, बिल भुगतान सेवा आदि शामिल हैं।

बैंक ने अपने ग्राहकों को हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में लेनदेन संबंधी एसएमएस की सुविधा भी उपलब्ध करवाई है। आज 6 लाख से भी अधिक ग्राहकों द्वारा हिंदी में एसएमएस लेनदेन की सेवा का चयन किया गया है। इसके अतिरिक्त लगभग 4 लाख ग्राहकों ने हिंदी में व्हाट्सऐप बैंकिंग सेवा का चयन किया है। बैंक अपने सभी ग्राहकों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में मासिक आधार पर खाता विवरणी उपलब्ध करवा रहा है। कृत्रिम मेधा तकनीक युक्त संबंधित डैशबोर्ड के माध्यम से हमें निरंतर विभिन्न डेटा प्वाइंट्स प्राप्त हो रहे हैं जिन्हें विश्लेषण कर आवश्यक कार्यनीति तैयार करने में काफी मदद मिल रही है।

व्हाट्सऐप हिंदी और अंग्रेजी में सबस्क्राइबर्स की संख्या:

भाषा	01.08.2022 तक पंजीकरण	02.08.2022 से 30.11.2022 तक कुल पंजीकरण	संचयी आधार पर कुल पंजीकरण	दिनांक 01.08.2022 से वृद्धि %
हिंदी	221362	259397	480759	117.18
अंग्रेजी	1997296	1054752	3052048	52.81

बैंक के प्रकाशनों हेतु बॉब-अभिव्यक्ति ऐप में कृत्रिम मेधा का उपयोग:

डिजिटल और पेपरलेस व्यवस्था की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए बैंक ने अपनी पत्रिकाओं और प्रमुख प्रकाशनों को बॉब-अभिव्यक्ति ऐप पर अपलोड किए जाने की सुविधा विकसित की है। बैंक द्वारा शुरू किए गए कृत्रिम मेधा तकनीक युक्त इस ऐप की विशेषता निम्नानुसार है:

1. इस ऐप पर अपलोड की गई रचनाओं के संबंध में पाठक अपने अभिमत भी दे सकते हैं और रचनाओं को लाइक कर सकते हैं।
2. पाठकों से प्राप्त लाइक्स और अभिमत के आधार पर बैंक पाठकों के पसंदीदा कंटेंट अपने प्रकाशन में शामिल करता है। यह प्रक्रिया बैंक की पत्रिका को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ रचनाकारों के मनोबल को बढ़ाने में भी उपयोगी सिद्ध हो रही है।
3. इस ऐप से अंचलवार/ क्षेत्रवार/ कंटेंटवार आलेख संबंधी लाइक और कमेंट की समेकित रिपोर्ट प्राप्त की जाती है।
4. ऐप के माध्यम से प्रत्येक आलेख की रेटिंग/ग्रेडिंग की जाती है।
5. इस ऐप से सर्वाधिक कमेंट और लाइक्स वाले आलेख

का चयन किया जाता है।

6. इस ऐप के जरिए प्रत्येक आलेख/पृष्ठ पर पाठकों द्वारा बिताए गए समय की भी सूचना प्राप्त होती है।
7. इस ऐप पर सर्वाधिक एक्टिव उपयोगकर्ता की जानकारी भी प्राप्त होती है।

कृत्रिम मेधा आधारित उपर्युक्त सभी सुविधाएं विश्लेषण के लिए उपयोगी हैं। इनके जरिए बैंक में पत्रिकाओं और सामग्री की गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायता मिल रही है।

कृत्रिम मेधा एवं सेल्फ सर्विस पासबुक प्रिंटिंग मशीनों पर हिंदी में पासबुक

बैंक उक्त तकनीक के उपयोग द्वारा हिंदी और अंग्रेजी में सेल्फ सर्विस पासबुक प्रिंटिंग संबंधी ग्राहकों की पसंद का डेटा संग्रहित कर ग्राहकों की पसंदीदा भाषा में पासबुक प्रिंटिंग की सुविधा उपलब्ध करवा रहा है। अभी तक बैंक की पासबुक प्रिंटिंग कियोस्क से हिंदी पासबुक प्रिंटिंग सुविधा को कुल 3,41,775 ग्राहकों ने चयनित किया है।

आगे की राह

बैंक ने अपनी कार्यक्षमता में वृद्धि और ग्राहकों की प्राथमिकताओं का पता लगाने और तदनुरूप कार्रवाई करने के लिए क्लिक सेंस नामक एक डैशबोर्ड तैयार किया है। यह प्लेटफॉर्म कृत्रिम मेधा तकनीक के उपयोग में अहम भूमिका रखता है। इसके माध्यम से बैंक से सिस्टम आधारित गतिविधियों के संबंध में वास्तविक समय आधार पर सटीक डेटा जनरेट किया जा सकता है। बैंक की रिसर्च टीम द्वारा इन आंकड़ों का विश्लेषण बेहतर ग्राहक सेवा सुनिश्चित करने में किया जाता है। जिससे बैंकिंग कार्य की गुणवत्ता और लाभप्रदता को बढ़ाने में भी सहयोग मिलता है।

बैंक में कृत्रिम मेधा के जरिए डेटा एनालिटिक्स का कार्य काफी तेजी से हो रहा है। ग्राहकों को कम समय में बेहतर बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने तथा उनके अनुरूप अपने कार्य की गुणवत्ता में लगातार सुधार करने के लिए भाषा और कृत्रिम मेधा तकनीक के जरिए बैंक निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर कार्य कर रहा है:

➢ अपने मोबाइल बैंकिंग ऐप 'बॉब वर्ल्ड' में ग्राहक द्वारा पसंदीदा भाषा के चयन के पश्चात् उन्हें स्वतः ही बैंकिंग संबंधी सारी जानकारी हिंदी में उपलब्ध कराना। बैंक इस कार्य हेतु उपलब्ध डेटा के आधार पर ग्राहकों की गतिविधियों के विश्लेषण पर कार्य कर रहा है।

➢ बैंक का एटीएम इंटरफेस भी 9 भाषाओं में उपलब्ध है। ग्राहक के भाषा विकल्प के चयन के आधार पर डेटा जनरेट कर उनकी ही भाषा में उन्हें यह सेवा बाइ-डिफॉल्ट उपलब्ध करवाने पर कार्य किया जा रहा है ताकि भविष्य में उन्हें स्वतः उनकी भाषा में सुविधा प्राप्त हो और उन्हें अपनी पसंदीदा भाषा का विकल्प बार-बार चयनित नहीं करना पड़े।

➢ बैंक द्वारा ADI नाम का एक चैटबॉट विकसित किया गया है। यह चैटबॉट ग्राहकों को 24 घंटे वर्चुअल सहायता प्रदान करता है। हम इसे भी हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने की प्रक्रिया में हैं। बैंक कृत्रिम मेधा के सहयोग से ग्राहकों के बोलचाल की भाषा को पहचानकर उनकी पसंदीदा भाषा में बैंकिंग सेवा उपलब्ध कराने पर कार्य कर रहा है।

➢ कृत्रिम मेधा के जरिए कई तरह का डेटा और व्यवहार कैपचर किया जा रहा है जो अलग-अलग गतिविधियों से संबंधित है। इसका उपयोग बेहतर कार्यनिष्पादन, व्यवसाय विकास और ग्राहक सेवा में किया जा रहा है।

➢ हम बैंक द्वारा भेजे जाने वाले ईमेल की भाषावार जानकारी एकत्र करने पर भी कार्य कर रहे हैं जिससे कि कार्य की भाषावार स्थिति की सटीक जानकारी कुछ ही समय में प्राप्त की जा सके और अनावश्यक गणितीय कार्यकलाप से बचा जाए और इसकी मेहनत किसी और उत्पादक कार्य में लगाई जा सके।

➢ हम आईआईटी, बॉम्बे के सहयोग से 'उड़ान' नामक अनुवाद परियोजना पर कार्य कर रहे हैं। प्रयोग के रूप में हमने इसे रोजमर्रा के मशीनी अनुवाद कार्य में शामिल किया है। अनुवाद हेतु तैयार 'उड़ान' प्रोजेक्ट कंटेंट एनालिटिक्स और कृत्रिम मेधा पर आधारित है। इस प्रोजेक्ट के तहत न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन (एनएमटी) जो कि आईआईटी, बॉम्बे का शोध क्षेत्र है, में तकनीकी दस्तावेजों के अनुवाद के लिए मशीन-आधारित उपकरण की व्यवस्था है। यह मल्टीमोडल और मल्टीलिंगुअल अलाइन्मेंट सुविधा पर आधारित है। इसमें प्रभावी रूप से मल्टी-टास्क और मल्टीमॉडलिंग के लिए मेटा-लर्निंग की भी व्यवस्था है।

बैंक में उपर्युक्त सभी कार्यों की सफलता तकनीक के इष्टतम उपयोग द्वारा सुनिश्चित की जा रही है। इसके जरिए हम बैंक और ग्राहकों के बीच विद्यमान भाषाई दूरी को समाप्त करने की प्रक्रिया में हैं। यह ईज ऑफ़ बिज़नेस के लक्ष्य को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आजादी के अमृत काल में कृत्रिम मेधा आधारित तकनीक एवं भारतीय भाषाओं का संगम समाज और देश के लिए एक नए दौर की शुरूआत करेगा और समावेशी विकास की संकल्पना इसी रास्ते चरितार्थ हो पाएगी।

***

(अनुभव-अभिव्यक्ति)

डिजिटल बैंकिंग से आत्मनिर्भरता

अमित कुमार श्रीवास्तव
बी.एस.एल.यू
वाराणसी

भारत बहुत ही प्राचीन देश है और यह देश अपनी भौगौलिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक विभिन्नताओं के कारण विश्व भर में जाना जाता है । साथ ही यह अपनी अनूठी पहचान रखता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस देश ने शिक्षा, उद्योग, कला-कौशल, निर्माण कार्य, प्रशासन आदि सभी क्षेत्रों में काफ़ी उन्नति की है।

आज़ादी के 75 वर्ष के उपरांत यह देश कई क्षेत्र में पूरे विश्व में अग्रणी है जिनमें से एक क्षेत्र डिजिटल बैंकिंग भी है और इसी वजह से इस देश की जीडीपी कई देशों से ऊपर है और यहाँ के नागरिकों का जीवन स्तर लगातार सुधर रहा है और उनके जीवनयापन का स्तर बेहतर हुआ है।

'जन-धन से जन सुरक्षा' को ध्यान में रखते हुए जन-धन योजना का शुभारंभ 15.08.2014 को हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा किया गया था।

उस समय से आज तक पूरे भारतवर्ष मे करोड़ों लोगों के बीएसबीडी (BSBD) खाते खुले जिसको शुरुआत में ज़ीरो बैलेन्स से खोला गया और बाद में लोगों को बचत की आदत डलवाने के उद्देश्य से इसे जारी रखा और उन सभी खातों मे मोबाइल बैंकिंग, एटीएम एवं इंटरनेट बैंकिंग की सुविधा भी निःशुल्क प्रदान की गयी। इसी की देन है कि आज भारत में डिजिटल क्रांति का आना संभव हुआ है और देश कैशलेस अर्थव्यवस्था की तरफ बढ़कर पूरे विश्व में अग्रणी बना हुआ है।

आत्मनिर्भर का अर्थ है किसी पर आश्रित ना होना । भारत के आत्मनिर्भर होने की कहानी भी किसी से छिपी नहीं है। स्वयं को स्वयं के हुनर से विकसित कर हर स्थिति और चुनौतियों का सामना करना और विजयी होना ही आत्मनिर्भर कहलाता है । सन 2020 में करोना महामारी ने पूरे विश्व में जो तबाही मचाई उससे कोई भी बेखबर एवं अछूता नहीं है । वैश्विक महामारी ने विश्व के कई राष्ट्रों को आर्थिक मोर्चो पर घुटने पर ला दिया ।

इस मोर्चे पर भारत वर्ष भी अछूता नहीं रहा और लॉक डाउन के कारण कई रोजगार, कारखाने आदि पर बुरा असर हुआ । हम कई पड़ोसी देशों से आयात पर निर्भर थे वो भी हमारी अर्थव्यवस्था पर बुरा असर डाल रहे थे और हमारे देश की जीडीपी भी कम हो रही थी।

इसी बीच 12 मई, 2020 को भारत देश को आत्मनिर्भर बनाने के अभियान की घोषणा की गयी जो कि अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए यह एक अच्छी पहल मानी गयी । इस अभियान के तहत भारत, आने वाले कुछ सालों में अधिकतर वस्तुओं का निर्माण भारत में ही करेगा ।

इस अभियान के तहत उन सभी विदेशी निर्भरताओं को कम करना है जिस वजह से भारत का ज्यादातर व्यापार दूसरे पड़ोसी देशों पर निर्भर है। इसमें बाहर की वस्तुओं पर निर्भर न रहकर अपने स्वयं के स्तर पर अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद को हमारे देश में ही तैयार करना है, इस अभियान में शामिल है।

इसी क्रम में बैंकिंग क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता का पदार्पण हुआ और भारत सरकार के EASE के अंतर्गत कई सुधार हुए और ग्राहकों को बैंकिंग सेवाओं का लाभ घर बैठे मिले यह इस दिशा में सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इस EASE कार्यक्रम के अंतर्गत विदेशी कंपनी भी अपना कार्य क्षेत्र भारत में स्थापित कर सकती हैं और इसका अनुकूल प्रभाव अपनी अर्थव्यवस्था पर पड़ना तय है जो हमें आत्म निर्भर बनाने की दिशा में ले जाएगा।

भारत सरकार ने बैंकिंग सेवा देने के क्षेत्र में NPCI (नेशनल पेमेंट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया) को ज़िम्मेदारी सौंपी है। जिसने बहुत ही ज़िम्मेदारी से सभी बैंकों और सभी बिल प्रदान करने वाली कंपनियों को एक मंच प्रदान किया जिससे बैंकों के ग्राहक और कंपनी के ग्राहक एक साथ जुड़े और उनके बीच का लेन-देन तत्काल प्रभावी होना संभव हुआ । इस मंच को BBPS (भारत बिल पेमेंट सिस्टम) कहते हैं।यह मंच सम्पूर्ण देश में प्रभावी है और कहीं से कहीं का बिल का भुगतान किया जा सकता है।

इसी क्रम में NPCI (नेशनल पेमेंट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया) ने BHIM (भारत इंटरफ़ेस फॉर मनी) का एक मंच

बनाया जिसमें सभी बैंक खाता धारकों को जोड़ने का सफल प्रयास किया गया । साथ ही इसमें सभी स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करने वालों को एक साथ लाया गया और इसमें उन सभी खाताधारकों को, उनके विभिन्न बैंक खातों को एक साथ जोड़ना तथा उन सभी को उनके इच्छानुसार आभासी पते का निर्माण कराना आदि शामिल है।

आने वाले समय में देश में स्मार्ट फोन इस्तेमाल करने वालों की संख्या में कई गुना वृद्धि की संभावना है जिसमें बैंक खाताधारकों को पैसे भेजने, पैसे मंगवाने, बिल भुगतान करने, सेवा या सामान के बदले भुगतान करने के लिए स्कैन कर के भुगतान करने की व्यवस्था है जिससे भारत एक कैशलेस अर्थव्यवस्था की तरफ अग्रसर है।

साथ ही साथ, EASE 5.0 के अंतर्गत खाताधारकों को लोन लेने के लिए भी मोबाइल पर ही आवेदन की सुविधा प्रदान की जा चुकी है।

ग्राहक के खाते के संचालन के आकलन के अनुसार ग्राहक को पूर्व अनुमोदित ऋण प्रदान किया जा रहा है जिससे ग्राहकों को अपनी जरूरत के अनुरूप त्वरित और बाधा रहित ऋण की सुविधा प्रदान की जा रही है।

इसके अतिरिक्त जन समर्थ पोर्टल की भी सुविधा प्रारम्भ की गयी है जिसमें केंद्र सरकार द्वारा भारत के नागरिकों को विभिन्न सरकारी योजनाओं में सरकारी सहायता का आवेदन एवं उनका निस्तारण भी किया जा रहा है ।

फास्टटैग के माध्यम से बिना नगद भुगतान किए टोल टैक्स भुगतान की व्यवस्था भी NPCI और NHAI के मिले जुले प्रयास है जिसके तहत RFID तकनीक से टैग पर अंकित खाते से वांछनीय राशि खाते से कट जाती है और टोल टैक्स का भुगतान स्वतः ही हो जाता है।

अब मैं देश के बैंकिंग क्षेत्र की इस आत्म निर्भरता को एक इकाई यानी अपने से जोड़ कर प्रस्तुत करता हूँ और जो मैंने महसूस किया है आपके समक्ष रखता हूँ जिससे आप बखूबी आए बदलाव से प्रेरणा ले कर बैंक द्वारा विकसित विभिन्न ऐप के माध्यम से घर बैठे बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे।

मेरे पिताजी ने मेरी पढ़ाई के समय ही मेरे शहर लखनऊ में स्थित दो पीएसयू बैंकों में बचत खाता खुलवा दिया था जिसके माध्यम से मैं कुछ बचत कर सकूँ और नौकरी हेतु आवेदन करने के लिए ड्राफ्ट बनवाने में भी आसानी हो सके।

अथक परिश्रम, प्रयास एवं माता पिता के आशीर्वाद से सफलता मिली और एक राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवा प्रदान करने का अवसर मिला।

बात 1997 की है जब मैंने बैंकिंग सेवा को अपनी कर्मभूमि के रूप में चुना एवं बैंक की मिर्ज़ापुर (उत्तरप्रदेश) जिले की ग्रामीण क्षेत्र की छोटी सी शाखा में सेवा प्रदान करने हेतु आदेश प्राप्त हुआ तो थोड़ा विचलित होना स्वाभाविक था क्योंकि जन्म से लेकर उस समय तक कभी गाँव में नहीं रहा था ।

मेरी नौकरी दोनों बैंक से इतर एक अलग बैंक में लग गयी तो मेरे लिए शहर में खोले गए खातों का संचालन भी मुश्किल हो गया और वो दोनों खाते प्रायः डोरमेंट हो जाते और उनको फिर से संचालित कराने के लिए बैंक की भीड़-भाड़ में लाइन मे लगकर पूरा दिन समय व्यर्थ चला जाता और यही मन करता की इन दोनों खातों को बंद कर दिया जाए परंतु पिताजी ने कभी इस बात का समर्थन नहीं किया और मेरा और मेरी पत्नी का पीपीएफ़ खाता भी लखनऊ स्थित पीएसयू बैंक में खुलवा दिया ।

हम जब भी लखनऊ जाते तो एक दिन का समय केवल बैंक में जाकर उन खातों को संचालित कर सक्रिय करवाने में चला जाता और हमने इसे नियति मान लिया था।

लेकिन हाल ही में बैंकिंग क्षेत्र में आयी डिजिटल क्रांति से हमें इस परेशानी से मुक्ति मिल गई और हम बिना बैंक गए, बिना छुट्टी लिए, बिना किसी परेशानी के सभी बैंक खातों का संचालन कर रहे हैं और ऐसी अनुभूति होती है कि क्या हम भारत में ही हैं? क्या यह तकनीक हमारे यहां भी मौजूद है ? विश्वास ही नहीं होता ।

आपको ये सारी सेवाएं केवल स्मार्ट फोन पर ही मिल जाती हैं और बस आपका मोबाइल ही आपका माध्यम बन जाता है।

आपको बताते चलें कि बैंक में खाता खोलने के लिए आपके केवाईसी दस्तावेज़ के अलावा मोबाइल नंबर एवं ई-मेल भी जरूरी होता है जिससे आप कोई भी लेन-देन करें तो बैंक आपको मोबाइल पर एवं ई-मेल द्वारा सूचित कर सके।

मेरा भी मोबाइल नंबर एवं ई-मेल आईडी सभी बैंक खातों में जुड़ा हुआ है और मैंने अपने बैंक के ऐप -भीम बड़ौदा पे एवं बॉब वर्ल्ड मोबाइल बैंकिंग ऐप को इन्स्टॉल कर लिया है जिसकी मदद से अब मुझे अपने बैंक खातों का संचालन करने में कोई भी बाधा नहीं आती है।

भीम ऐप के माध्यम से मैंने अपने सभी दूसरे बैंक खातों को भी अपने बैंक के भीम बड़ौदा पे ऐप में जोड़ लिया है और अब मुझे खाता संख्या, IFSC, शाखा आदि भी याद करना नहीं पड़ता। अपने एक बैंक के खाते से दूसरे बैंक के खाते में लेन-देन करने में केवल मोबाइल की जरूरत पड़ती है । इसके अतिरिक्त अगर किसी को पैसे भेजना या मंगवाना पड़े तो भी अपना बैंक अकाउंट नंबर, IFSC, MICR, साझा नहीं

करना पड़ता अपितु एक आभासी (VIRTUL) पता (जो कि आप अपनी इच्छानुसार बना सकते हैं) साझा करना पड़ता है जिससे आपके खाते की निजता बनी रहती है और आपका खाता सुरक्षित रहता है।

इसके अलावा आप इस ऐप की मदद से बहुत सारे बिल जैसे कि-बिजली बिल, टेलीफ़ोन बिल, गैस बिल, पानी बिल, ब्रॉडबैंड, इंटरनेट बिल एवं भवन कर आदि भी तत्काल जमा कर सकते हैं।

बॉब वर्ल्ड मोबाइल बैंकिंग ऐप के माध्यम से हमें अपने सारे बिल का भुगतान, पैसे भेजने, तमाम ई -कॉमर्स प्लेटफ़ार्म से सामान खरीदने, अपने डेबिट कार्ड के उपयोग सीमा संबंधी जानकारी एवं रखरखाव की सुविधा भी उपलब्ध है। इसी के माध्यम से हमें किसी भी वक्त जरूरत हेतु ऋण लेने के लिए बैंक जाने की आवश्यकता नहीं है और घर बैठे ऋण सुविधा ली जा सकती है।

अंत में मेरा यह मानना है कि आत्मनिर्भर भारत में डिजिटल बैंकिंग का महत्व सर्वाधिक है और इसकी वजह भारत सरकार के दिशानिर्देश हैं जिसने हमारे डिपार्टमेंट ऑफ फ़ाइनेंशियल सर्विसेस ने हमारी डिजिटल सर्विसेस को बैंकिंग से जोड़ा और निरंतर नए-नए सेवा क्षेत्र को डिजिटल प्लेटफार्म प्रदान करने की क्षमता को विकसित किया।

***

'डिजिटल ऋण' विषय पर अखिल भारतीय सेमिनार

बैंक ने 06 फरवरी, 2023 को भारतीय रिज़र्व बैंक सहित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, बीमा कंपनियों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों हेतु **''डिजिटल ऋण''** विषय पर अमृतसर (पंजाब) में अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की सचिव,

सुश्री अंशुली आर्या, आई.ए.एस, वर्चुअल माध्यम से उपस्थित रहीं तथा मुख्य आयकर आयुक्त एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, अमृतसर सुश्री जहांजेब अख्तर, भारतीय रिज़र्व बैंक के महाप्रबंधक श्री हेमंत कुमार सोनी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। सेमिनार की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए बैंक के प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह ने कहा कि बैंक द्वारा लगातार 9 वर्षों से हिंदी माध्यम में इस तरह के अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन किया जाता रहा है जिसमें एक ज्वलंत विषय पर बैंकों, वित्तीय संस्थानों एवं बीमा कंपनियों के स्टाफ सदस्यों से हिंदी में आलेख आमंत्रित किए जाते हैं एवं श्रेष्ठ आलेखों के लेखकों को प्रस्तुति हेतु सेमिनार में आमंत्रित किया जाता है। वर्तमान समय में डिजिटलीकरण को गति देने तथा इससे संदर्भित प्रक्रियाओं के विषय में जागरूकता लाने को ध्यान में रखते हुए **''डिजिटल ऋण''** विषय को हिंदी में विचार-मंथन हेतु चयनित किया गया।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंडीगढ़ अंचल के महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री विमल कुमार नेगी ने कहा कि डिजिटल भारत की संकल्पना को मूर्त रूप देने में सभी बैंकों की भूमिका महत्वपूर्ण होने के साथ ही निर्णायक साबित होगी। अतः बैंकिंग में उन्नत तकनीक के प्रयोग में दक्षता हासिल करने के साथ-साथ डिजिटल ऋण प्रक्रियाओं की सही जानकारी होनी जरूरी है। इस अवसर पर भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तर-I), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री के.पी. शर्मा उपस्थित रहे। साथ ही सेमिनार में अमृतसर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री सतपाल मेहरा और उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अशोक कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में भारतीय रिज़र्व बैंक सहित सार्वजनिक क्षेत्र के

बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों के उच्चाधिकारी सहित लगभग 100 से अधिक स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। सेमिनार को ज्ञानवर्द्धक और रोचक बनाने के उद्देश्य से सभी प्रतिभागियों हेतु ''डिजिटल ऋण विषय पर ऑनलाइन प्रतियोगिता'' का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन बैंक के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया।

उत्तराखंड के चार धाम की यात्रा

कीर्ति गहलोत
एकल खिड़की परिचालक
स्टेशन रोड, जोधपुर शाखा

यात्रा यानी सुखद जीवन का अनुभव करना। आजकल सभी मनुष्य अपने दैनिक जीवन में बहुत व्यस्त रहते हैं और नियमित दिनचर्या में कहीं ना कहीं अपने आप को खो देते हैं। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक के काम की मानो समय सारणी बनी हो और ये सब करते-करते हम थक जाते हैं। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आने लगता है। हम परेशान-से रहने लगते हैं। ऐसे समय में हर कोई इस नियमित जीवन शैली से कहीं दूर भाग जाना चाहता है। मनुष्य को अपने जीवन को रूचि पूर्ण तरीके से जीने के लिए उसमें निरंतर रूप से परिवर्तन करते रहना चाहिए। परिवर्तन हमारे जीवन का हिस्सा है। परिवर्तन का सबसे अच्छा विकल्प यात्रा है। यात्रा चाहे कैसी भी हो, कहीं की भी हो, परिवार के साथ हो या दोस्तों के साथ हो, मन प्रसन्न कर देती है। यात्रा न केवल हमें नई जगह देखने का अवसर प्रदान करती है अपितु नए लोगों से भी जोड़ती है। इससे हमारे स्वभाव पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं और हम अपने उबाऊ जीवन से बाहर निकल, खुशी-खुशी वापिस लौट आते हैं। थोड़े समय के अंतराल से की गई यात्रा हमें, हमारे होने का एहसास कराती है। हमें प्रसन्नता देती है।

उत्तराखंड के चार धाम:-

इसी के साथ यात्रा अगर उत्तराखंड की हो तो पहाड़ों और नदियों का रोमांचक दृश्य आँखों के सामने आ ही जाता है। उत्तराखंड का प्राकृतिक सौंदर्य मानो जैसे दिल चुरा लेता है। देखते ही देखते पहाड़ों की सुंदरता में हम कब खो जाते हैं पता ही नहीं चलता। उत्तराखंड एक पहाड़ी और ठंडा इलाका है। इसलिए ये पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां पर बहुत सारे देवी-देवता का आवास हैं। इसलिए उत्तराखंड को देवभूमि भी कहा जाता है।

उत्तराखंड के चार धाम हिन्दू धर्म के तीर्थ स्थानों में प्रमुख स्थान रखते हैं। ये चार धाम यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ हैं। हिमालय की गोद में स्थित होने के कारण इन्हें हिमालय के चार धाम भी कहते हैं। हिन्दू धर्म की पौराणिक कथाओं के अनुसार जो मनुष्य चार धाम की यात्रा करते हैं उनके न केवल इस जन्म के पाप धुल जाते हैं अपितु उन्हें जन्म मृत्यु के बंधन से भी मुक्ति मिल जाती है। ये भी माना जाता है कि इन स्थानों में पृथ्वी और स्वर्ग एक हो जाते हैं।

यात्रा मानस:- यूं तो मैंने बहुत सी यात्राएं की हैं लेकिन धार्मिक स्थानों पर मेरा जाना कम ही हुआ है। पिछले साल मानो भगवान मुझसे बहुत प्रसन्न थे। हमें हरिद्वार के गंगा स्नान से लौटे एक महीना भी नहीं हुआ था और हम सभी अपनी-अपनी दिनचर्या में फिर से व्यस्त हो गये थे। बात गत वर्ष जून की है। एक दिन ऑफिस से घर पहुंच कर मैं और मेरे पति चाय की चुस्कियां ही ले रहे थे कि सासु माँ ने अचानक से बोला, ''बेटा मेरी इच्छा है कि तुम दोनों इस साल चार धाम की यात्रा कर लो।'' हम दोनों सवालिया नजरों से एक दूसरे को देखने लगे। आगे सासु माँ ने बोला, ''बेटा हम लोगों की चार धाम यात्रा हो चुकी है। अब तुम दोनों भी हो आओ। देखो बेटा जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है परेशानियां और जिम्मेदारियां जीवन को घेर लेती है और एक उम्र के बाद स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता। तुम बच्चों की चिन्ता मत करना मैं उन्हें सम्भाल लूँगी। मेरी बात पर ध्यान देना थोड़ा जल्दी फैसला करना। जिन्दगी बार-बार मौका नहीं देती। जल्दी से योजना बना लेना।'' फिर क्या था चाय खत्म करते-करते हम इसी गहरी सोच में डूब गए। एक तरफ़ लग रहा था जैसे बिन मांगे ही भगवान ने सब कुछ दे दिया। दूसरी तरफ बच्चों को छोड़कर जाने का बिल्कुल भी मन नहीं था। जाएं या ना जाएं सोचने में समय निकलता जा रहा था कि अचानक मेरे पति के पास जीजाजी का फोन आया। उन्होंने बोला उनके परिचित एक पंडित जी इस बार यात्रियों को चार धाम दर्शन कराने ले जा रहे हैं और मैं तुम दोनों का रजिस्ट्रेशन करवा रहा हूँ। फिर क्या होना था। योजना भी बन गयी और टिकट

भी हो गए – क्या ले जाना – क्या नहीं की तैयारियां चलने लगी। सभी अपने अनुभव को साझा करने लगे। यात्रा कठिन है, सामान कम ले जाने की सलाह देने लगे। दूसरी तरफ मेरे मन में हज़ारों सवाल उमड़ रहे थे। बच्चे हमारे बिना रह पाएंगे या नहीं । एक माँ की ममता सोचे जा रही थी। सासु माँ का कहना, जीजाजी का टिकट बुक करना, पति का तैयारी में लग जाना, सब कुछ इतनी जल्दी हो रहा था कि मैं कुछ समझ ही नहीं पा रही थी और हमेशा की तरह इस बार भी मैंने सबकुछ भगवान भरोसे ही छोड़ दिया। बड़े बुजुर्ग कहते हैं, भगवान की मर्जी के बिना तो एक पत्ता भी नहीं हिलता। मैंने ये मान लिया कि संभवतः ये देवो के देव महादेव का ही बुलावा है। बस फिर तो पलक झपकते ही वो मुस्कराते से दिखने लगे । मानो जैसे मिलने पर ढेरों बातें करनी हो। ये एहसास मुझे अपने जीवन में पहली बार हुआ। मैं भागते हुए सासु माँ और पति के पास पहुंची । मैंने उनको सारा वृत्तांत सुनाया। मेरे पति मंद-मंद मुस्करा रहे थे और सासु माँ बोली बस बेटा अब इन्हें पकड़ कर रखना। तुम बिल्कुल सही रास्ते जा रही हो। आगे बढ़ती जाओ, भगवान तुम्हारे साथ हैं, कहते हैं, ना माता पिता का आशीर्वाद हो तो घर भी स्वर्ग बन जाता है और मेरी तो चार धाम की यात्रा भी सासु माँ की ही इच्छा थी। इसी तरह मेरा भी चार धाम यात्रा का मानस बन गया और अब मैं भी तैयारियों में जुट गई।

यात्रा विवरण:– इंतजार की घड़ी समाप्त हुई । वो दिन आ गया जब हमें यात्रा के लिए प्रस्थान करना था। मैंने और मेरे पति ने भगवान को प्रणाम कर बड़ों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। यात्रा को लेकर घर में सभी बहुत खुश थे। हम दोनों भी उत्सुक थे। मैं मन ही मन भगवान से बच्चों को छोड़कर जाने के लिए क्षमा याचना कर रही थी। इतने में मेरे अठारह महीने के मासूम बेटे ने आकर मेरे चरण स्पर्श किए और मेरी आँखों से ममता झलक गयी। वो कुछ समझता तो नहीं था परंतु उसने मेरी देखा-देखी जरूर की। मैंने अपनी भावनाओं पर काबू करते हुए यात्रा के लिए प्रस्थान किया। 11 सितंबर को हम लगभग 10 बजे रेलवे स्टेशन पहुँच गए। वहां जीजाजी ने हमारी मुलाकात पंडित जी से करवा दी जो कि 270 लोगों के बड़े समूह के साथ अपनी सातवीं चार धाम यात्रा पर थे। मैं हमेशा परिवार के साथ ही यात्रा पर गयी हूँ। केवल इसी यात्रा में हम दोनों ही थे। इसीलिए हमें यह जानकर थोड़ा सुकून मिला कि हम अकेले नहीं 270 लोगों के बड़े समूह के साथ हैं। सभी लोगों से मिलना तो संभव नहीं था। पंडित जी से बात करते-करते ट्रेन आ गई और हमने हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। अपनी जगह पहुंच कर सामान रखा। अब तो भूख भी लगने लगी। जल्दबाजी में घर पर कुछ खाया जो नहीं था। बस खाते-पीते, हँसते- गाते रात हो गयी। नींद खुलते ही हरिद्वार पहुंच गए। 12 तारीख को वहां होटल में ठहरने की व्यवस्था पहले से थी। हम कुछ देर आराम करने के बाद गंगा घाट पहुंच गए। गंगा स्नान से मानो मन भी गंगा समान निर्मल हो गया। श्राद्ध का महीना था । सासु माँ के कहे अनुसार मैंने दान पुण्य किया। अब वापिस होटल पहुंच गए। हम सभी के भोजन की व्यवस्था एक साथ थी। भोजन के बाद आराम किया और शाम को गंगा मैया की आरती देखने गए। वापिस आकर सुबह की तैयारी में लग गए। सुबह हमारी यात्रा के पहले पड़ाव यमुनोत्री जी के दर्शन के लिए निकलना था। भोजन करके जल्दी सो गए अगले दिन 13 तारीख को बस द्वारा 5 बजे निकलना था। सुबह 4 बजे ही उठ गए। नहा धोकर तैयार हो गए। पंडित जी की व्यवस्था अच्छी थी। गरमा गर्म चाय, कॉफी, नास्ता तैयार था। सबकी बस भी तैयार थी। सभी को बस नंबर और सीट नंबर रात को ही मिल गया था। निकलने ही वाले थे कि जोरों की बारीश शुरू हो गई। बारिश बंद होने के बाद करीब 9 बजे हम रवाना हुए। बारिश ने हमारी यात्रा में चार चांद लगा दिए थे। प्रकृति के नजारे देख मन प्रसन्न हो गया। इधर बस में सभी लोगों का अच्छा समूह बन गया। हमारे बस के सभी यात्रियों में से मैं और मेरे पति ही उम्र में सबसे छोटे थे। इसीलिए हमारे साथ सभी बच्चों जैसा व्यवहार करते थे। रास्ते में सभी यात्रियों के भोजन की एक ही जगह व्यवस्था की गई। शाम को 8 बजे तक हम लोग यमुनोत्री जी पहुचे। वहां धर्मशाला में सभी यात्रियों ने रात्रि विश्राम किया। 14 तारीख को सुबह 5 बजे बस द्वारा हम उस स्थान पहुंच गए जहां से यमुनोत्री जी की चढ़ाई करनी थी। 10.30 बजे जब मैं बस से उतरी तो ठंड के कारण काँपने लगी। जल्दी से गर्म जैकेट पहनी। जानकी चट्टी से 6 कि.मी. की खड़ी चढ़ाई चढ़ने के बाद यमुना माता के दर्शन हुए। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार माँ यमुना सूर्य भगवान की बेटी हैं। उनके मंदिर के पास प्रसिद्ध सूर्य कुंड भी बना हुआ हैं। सभी यात्री उस सूर्य कुंड में चावल किसी कपड़े में उबाल कर माता जी को भोग लगाते हैं और उसे प्रसाद स्वरूप अपने घर ले जाते हैं। मैंने भी ऐसा किया। हम दोनों ने माँ यमुनोत्री जी के दर्शन किए और मौसम ने करवट बदली। बहुत बर्फीली हवा चलने लगी। हम दोनों ने बिना रुके वापिस उतरना आरंभ किया। रास्ते में बारिश बहुत तेज हो गई। हमने बरसाती पहनी और तेजी से चलना शुरू किया। नीचे पहुंचते-

पहुंचते पूरा अंधेरा हो गया और अब हम पार्किंग का रास्ता भटक गए। हमारे फोन में बड़ी मुश्किल से थोड़ा सा नेटवर्क आया। हम बस वाले यात्रियों से संपर्क कर पाते उससे पहले फोन बंद हो गया। लोगों से पूछते-पूछते करीब एक घंटे बाद कीचड़ भरे रास्ते से हम बस तक पहुंचे। रास्ता भटकने से मुझे लगा शायद बस की आखिरी सवारी हम दोनों ही होंगे लेकिन ऐसा नहीं था। घोर अंधेरे से सभी यात्री रास्ता भटक गए। सभी के लौटने पर देर रात बस वापिस रवाना हुई। गर्म कपड़े पहनने के बाद भी एक-एक करके सभी ड्राइवर की कंबल ओढ़ने लगे। फटी, पुरानी कंबल भी सर्दी में राहत का मानो एकमात्र सहारा बनी। जीवन में उतार चढ़ाव अब अच्छे से समझ में आ रहा था। सुबह के करीब 5 बजे हम वापिस धर्मशाला पहुंचे। बहुत अधिक थक जाने के कारण हमने आराम करना उचित समझा। भोजन करने के बाद 15 तारीख को करीब 11 बजे हम अगले पड़ाव गंगोत्री के लिए रवाना हुए। इंद्र भगवान जैसे पूरी परीक्षा ले रहे थे। यात्रा आरंभ से लेकर अंत तक वर्षा रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। रास्ते का मनोरम दृश्य मैं कभी भूल नहीं सकती। एक-एक जगह का फोटो और वीडियो आज भी यात्रा को तरोताजा कर देता है। रात को लगभग 9 बजे तक हम होटल पहुंचे। भोजन इत्यादि के पश्चात रात्रि विश्राम किया। अगले दिन 16 तारीख को सुबह 7 बजे हम गंगोत्री दर्शन को निकले। दोपहर 1.30 बजे हम गंगोत्री धाम पहुंच गए। लगातार बारिश से ठंड बहुत ज्यादा बढ़ गयी थी। बर्फीली हवा के चलते गंगोत्री नदी के ठंडे पानी से मैंने हाथ-मुँह धोए और दर्शन की लंबी कतार में लग गए। गंगोत्री मैया के दर्शन मात्र से शारीरिक कष्ट मानो खत्म हो गये थे। हिन्दू धर्म के अनुसार ये माना जाता है कि गंगोत्री गंगा नदी का उद्गम स्थान है। इसे भागीरथी नदी भी कहते हैं क्योंकि राजा भगीरथ जी के तपस्या से गंगा स्वर्ग से धरती पर आयी थी। दर्शन के बाद मंदिर प्रांगण से हमने अपने परिवार के सदस्यों को और दफ्तर के मित्रगणों को वीडियो कॉन्फ्रेंस कॉल करके सभी को पावन धाम के दर्शन करवाए। उसके बाद भोजन कर हम वापिस रवाना हो गए। शाम 6 बजे तक होटल पहुंच कर विश्राम किया। परिवार जनों को फोन कर दो धामों के अच्छे दर्शन का वर्णन सुनाया। इस बीच वीडियो कॉल पर मेरी 6 वर्षीय बेटी से बात हुई। मम्मा अपना ध्यान रखना और जल्दी से वापिस आना कहते-कहते उसकी आँख भर आयी। मैंने फोन रखा और फुट-फुट कर रोने लगी। आखिर कब तक रोकती अपने आप को एक औरत पर माँ की ममता भारी पड़ गयी। मेरे पति के बहुत समझाने पर हिम्मत जुटाई। बच्चों को तो मैं भगवान भरोसे ही छोड़ आयी। ओम नम: शिवाय का जप करते करते नींद आ गई। अगले दिन 17 तारीख को हम सुबह 6 बजे तीसरे धाम के लिए रवाना हुए। हमारा तीसरा पड़ाव केदारनाथ था। केदारनाथ की यात्रा तो मेरा एक सपना था। इतनी जल्दी पूरा होगा मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। जब घर से निकली तभी सोचा था, देवों के देव महादेव के आगे सिर झुकाना था। ये हसीन वादियाँ, ठंडी-ठंडी हवाओं का झोंका, ये सेब की घाटियां, ताजा-ताजा सेब का नास्ता। श्रीनगर से केदारनाथ के मनोरम दृश्य का वर्णन करना मेरे लिए सम्भव नहीं। मन में ख्याल आते ही मैं खो सी जाती हूँ। वापिस यात्रा पर आती हूँ, रास्ते में जगह जगह रुकते-रुकते जाने से हम बहुत पीछे रह गए थे। रास्ते में चट्टानें गिरने से बार-बार जाम लग जाना अब आम बात हो गयी थी। ऐसे में गंतव्य स्थान पर पहुंचना जोखिम से कम नहीं था। हमने देर रात को किसी दूसरी होटल में ठहरने का निर्णय लिया। 18 तारीख को सुबह 7 बजे बस द्वारा रवाना हुए। करीब 11:30-12 बजे तक बाकी यात्रीगण जहां ठहरे थे वहां पहुंच गए। हमारी बस सबसे आखिरी थी। मैं और मेरे पति घर से सोच कर निकले थे कि केदारनाथ की यात्रा हेलिकॉप्टर से करेंगे। लेकिन बुकिंग चार दिन तक उपलब्ध नहीं थीं। अपना सोचा कुछ नहीं होता, वो करें सो होय। ये विचार करते-करते मुझे महादेव मुस्कराते दिखने लगे। आखिर परीक्षा की घड़ी आ गयी । मैंने इसे महादेव की कृपा समझ, गौरीकुंड में स्नान कर, अपने पति के साथ पैदल यात्रा आरंभ की। यात्रा कठिन है ये मैं जानती थीं। पूरी होगी या नहीं महादेव जानते थे। सभी कहते हैं ये यात्रा 16 कि.मी. की है। चढ़ते-चढ़ते ऐसा लगा जैसे 21 से 22 कि.मी. की यात्रा हमने तय कर ली है। अब तो जैसे मैं हिम्मत हार ही गयी थीं। मेरी सासें फूलने लगी। बीच-बीच में ऐसा लगा जैसे सासें थम सी गई हैं। करीब रात के 1 बजे मुझे बहुत दूर से केदारनाथ मंदिर दिखाई दिया। मेरे आँखों से आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। आस-पास पूछने पर पता चला मंदिर के कपाट खुलने में थोड़ा समय और लगेगा। मेरी हालत बिगड़ती जा रही थी। अब तो जैसे बुखार में तप रही थी। मैंने अपने पति से कहा अब और चलने की हिम्मत नहीं, यहीं आस-पास छोटे टेन्ट में रात बसेरा करते हैं। मेरे पति से मेरी हालत देखी नहीं गई। हम करीब 1:30 बजे टेंट में सो गए। हमारे पास पानी नहीं होने से मैं दवा भी नहीं ले पायी। बहुत अधिक थक जाने की वज़ह से नींद आ गई। 19 तारीख की सुबह 8 बजे जब टेंट से निकल कर देखा तो 5 कि मी की लंबी कतार

लगी थी। अब इस कतार में लगने की तो हिम्मत भी नहीं बची थीं। जैसे तैसे यात्रियों से अनुरोध करके करीब 1 कि मी की कतार में अपने पति के साथ लग गयी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई आगे बढ़ ही नहीं रहा। अब तो बारीश भी होने लगी। कैसे वर्णन करूँ उस अद्भुत सौंदर्य का, स्वर्ग कैसा होता है इस प्रश्न का उत्तर मिल गया था। एक एक दृश्य को मैंने अपने फोन में कैद करना शुरू किया। देखते-देखते हम केदारनाथ मंदिर में पहुँच गए। कदम बढ़ाते ही मेरा रोम रोम खड़ा हो गया। जैसे महादेव सचमुच सामने खड़े हों। इतने अच्छे दर्शन होंगे। ये खुली आँखों से देखा सपना सा लग रहा था। करीब 10 से 15 मिनट मैं एकटक होकर केदारनाथ को निहारती रही। इतनी भीड़ में इतने अच्छे दर्शन मेरा तो जीवन ही सफल हो गया। मैंने दण्डवत प्रणाम किया। ना कोई आरज़ू, ना कोई अर्जी थी, उनके चरणों में मेरा सिर, आगे उनकी मर्जी थी । दर्शन के बाद हमने मंदिर के पीछे भीम शीला चट्टान की पूजा की। कहते हैं कि जून 2013 की भीषण बाढ़ में मंदिर के पीछे पहाड़ी भाग से पानी का तेजी से बहाव जल प्रलय जैसा प्रतीत हो रहा था। करीब 300 से 500 यात्री केदारनाथ मंदिर के शरण में चले गए थे। पानी के तेज बहाव के साथ पीछे पहाड़ से एक बहुत बड़ी चट्टान भी मंदिर की तरफ आ रही थी। लेकिन केदारनाथ के चमत्कार से वह चट्टान मंदिर के पीछे करीब 50 फुट की दूरी पर ही रुक गई और पानी का बहाव दो हिस्सों में बंट गया। इस चमत्कार से मंदिर और श्रद्धालु बच गए। पौराणिक कथाओं के अनुसार पांडवों को पाप मुक्ति चाहिए थी परंतु महादेव उन्हें दर्शन नहीं देना चाहते थे। इसीलिए वे केदार चले गए वहां बैल का रूप ले लिया और जमीन में अंतर्ध्यान होने लगे तभी भीम ने उनकी पीठ पकड़ ली। तभी से केदार में महादेव के बैल रूपी पीठ समान शिवलिंग की पूजा होने लगी। केदारनाथ मंदिर के प्रांगण से मैंने अपने परिवारजनों और मित्रगण सभी को वीडियो कॉल करके दर्शन करवाए। मन्दिर के पीछे के पहाड़ों का नज़ारा देख सभी हैरान रह गए। पहाड़ों पर बर्फ ज़मी थीं। उन पर सूरज की किरणों का शानदार दृश्य और पलक झपकते ही बारिश चालू हो गयी। मैंने अपने पति के साथ वापिस गौरी कुंड के लिए उतरना शुरू किया। करीब 10 किमी चलने के बाद तो मेरे पैरों में छाले पड़ गए। नए जूते जो पहन के गयी थी। बारिश से पूरे रास्ते में कीचड़ हो गया। जूते भीग जाने से और अधिक दिक्कत होने लगी। मैंने अपने पति का हांथ पकड़ा और जैसे तैसे होटल पहुंची। मैंने अपने जूते उतारे तो पैरों में बड़े-बड़े छाले और सूजन थी। करीब रात के 12 बज रहे थे। अब तो खड़े रहने की भी हिम्मत नहीं थी। हमने रात्रि विश्राम किया। 20 तारीख को सुबह 8 बजे यात्रा के आखिरी पड़ाव, चौथे धाम बद्रीनाथ के लिए प्रस्थान किया। पूरे दिन यात्रा के बाद हमने रास्ते में किसी होटल में रुकने का निर्णय लिया। केदारनाथ की थकान अभी खत्म नहीं हुई थी इसलिए उस दिन हमने सिर्फ आराम किया। 21 तारीख को सुबह 8 बजे फिर से यात्रा शुरू की। रास्ते के खूबसूरत नजारे देखते हुए हम लगभग 2:30 बजे बद्रीनाथ धाम पहुंच गए। वहां गर्म कुंड में नहाकर थकान दूर हो गयी थी। करीब 3 कि.मी. की लंबी कतार में लगने के बाद शाम के 5 बजे हमने बद्रीनाथ धाम के दर्शन किए। बद्रीनाथ मंदिर दर्शन के बाद हमारी यात्रा सफल हुई। मन हर्षोल्लास से भर गया। चारों धाम के दर्शन सफलता पूर्वक हो गए । मेरी सासु माँ को उसकी सबसे ज्यादा खुशी थी। हम जिस बड़े समूह के साथ गए थे उन गुरु जी की यह सातवीं यात्रा थी। बद्रीनाथ में भव्य जागरण और भंडारा 22 तारीख को रखा था। हमने उसका आनंद लिया। उसके बाद हमने पुनः हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। 23 तारीख को सुबह 8 बजे हरिद्वार पहुंच गए। गंगा स्नान का लाभ उठाया और बच्चों के लिए उपहार लिए। अगले दिन 23 तारीख को हरिद्वार से ट्रेन द्वारा जोधपुर के लिए निकले। 24 तारीख को सुबह जोधपुर आ गए। रेलवे स्टेशन से घर का रास्ता भी मुश्किल से निकल रहा था क्योंकि बच्चों को देखने के लिए आंखें तरस गयी थीं। घर पहुँचते ही मैंने बच्चों को ढेर सारा प्यार किया। उन्हें खिलौने और उपहार दिए। कब तक नाराज रहते आखिर मेरे बच्चे थे। भगवान की कृपा से बच्चों की नाराजगी खत्म हुई। ढेर सारा प्यार और ढेर सारी बातें हुईं। घर का माहौल खुशनुमा था। सासू माँ के आशीर्वाद से चार धाम यात्रा सकुशल और अच्छी रही।

यात्रा अनुभव:- ये मेरे जीवन की सबसे अच्छी यात्रा रही है। इस यात्रा से मैंने हर परिस्थिति में सामान्य रहना सीखा। परिस्थिति के अनुकूल ढलना सीखा। चूंकि यात्रा धार्मिक थी तो मेरी भगवान के प्रति आस्था और अधिक बढ़ गई। यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव रहा है कि भगवान में विश्वास और उनका नाम लेते रहने से परेशानियां हँसते-हँसते कट जाती हैं। इस यात्रा में मुझे अपरिचित लोगों से जुड़ने का भी अवसर प्राप्त हुआ। उनके सात्विक विचारों से मेरे अंदर सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न हुई। मैं यह आशा करती हूँ कि मेरे जीवनकाल में मुझे पुनः ऐसी यात्रा करने का अवसर प्राप्त हो।

***

मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह

हमारे बैंक ने देश के जन समुदाय, विशेषकर युवा पीढ़ी के बीच संपर्क भाषा हिंदी को लोकप्रिय बनाने हेतु 'बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान' नामक योजना शुरू की है। योजना के तहत एम.ए. हिंदी की अंतिम वर्ष की परीक्षा में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले चयनित विद्यार्थियों को प्रतिवर्ष नकद पुरस्कार तथा प्रशंसा पत्र प्रदान किए जाते हैं। इस योजना के अंतर्गत हम पत्रिका के पाठकों के लिए मार्च, 2023 तिमाही में आयोजित कार्यक्रमों की संक्षिप्त झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं: – संपादक

अंचल कार्यालय, लखनऊ

दिनांक 18 फरवरी, 2023 को लखनऊ विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिंदी) के विद्यार्थी सुश्री रोमी पटेल एवं श्री नागेन्द्र नाथ पाण्डेय को अंचल प्रमुख श्री ब्रजेश कुमार सिंह व सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, श्री अजय कुमार चौधरी, उप अंचल प्रमुख श्री ए.पी .दास के करकमलो द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान प्रदान किया गया

क्षेत्रीय कार्यालय, सागर

दिनांक 27 फरवरी 2023 को सागर क्षेत्र द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान के अंतर्गत डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के स्नातकोत्तर एम.ए. (हिन्दी) के सत्र 2021-22 के अंतिम वर्ष की परीक्षा में प्रवीण सूची में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों को क्षेत्रीय प्रमुख, सागर क्षेत्र, श्री अनंत माधव द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर

दिनांक 18 मार्च 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर द्वारा विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगलूरु में 'मेधावी विद्यार्थी सम्मान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अंचल राजभाषा प्रभारी एवं मुख्य प्रबन्धक श्रीमती पुष्पलता बी एन उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, दक्षिणी दिल्ली

दिनांक 10 फरवरी 2023 को दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय में मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह तथा हिंदी में रोजगार के अवसर विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 100 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया।

क्षेत्रीय कार्यालय, रतलाम

रतलाम क्षेत्र द्वारा दिनांक 09 जनवरी, 2023 को विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में एम.ए. (हिंदी) 2019-2020 (अंतिम वर्ष) व 2020-2021 (अंतिम वर्ष) में महिला व पुरुष दोनों श्रेणियों में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को बैंक द्वारा चलाई जा रही बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत सम्मानित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख, श्री सुबोध कुमार इनामदार तथा अंचल राजभाषा प्रभारी श्री चंदन कुमार वर्मा उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत शहर द्वारा दिनांक 06 मार्च 2023 को बैंक की 'बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना' के तहत वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत में आयोजित 54वां वार्षिक दीक्षांत समारोह में शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के एम.ए (हिंदी) में पुरुष एवं महिला वर्ग में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार राशि तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस समारोह में गुजरात राज्य के राज्यपाल एवं वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के चांसलर माननीय आचार्य देवव्रत,माननीय कुलपति डॉ. किशोरसिंग एन. चावडा भी उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिवेन्द्रम

क्षेत्रीय कार्यालय, त्रिवेन्द्रम द्वारा बैंक की मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम के एम.ए. (हिंदी) (शैक्षणिक सत्र 2021-22) में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। बैंक की ओर से यह सम्मान क्षेत्रीय प्रमुख श्री पद्मा कुमार जे एवं त्रिवेन्द्रम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की प्रमुख डॉ. एस आर जयश्री और प्रख्यात कवि, आलोचक प्रो अरुण कमल जी द्वारा प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

इंदौर क्षेत्र द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत दिनांक 21 मार्च 2023 को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के एम.ए.(हिंदी) (शैक्षणिक सत्र 2019-20 और शैक्षणिक सत्र 2020-21) की परीक्षा (अंतिम वर्ष) में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। मेधावी विद्यार्थियों को यह सम्मान इंदौर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजेश बैरागी ने प्रदान किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद क्षेत्र 2

दिनांक 19 जनवरी 2023 को अहमदाबाद क्षेत्र 2 द्वारा बैंक की मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत गुजरात विद्यापीठ के एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को उप अंचल प्रमुख (अहमदाबाद अंचल) श्री प्रदीप बाफना एवं क्षेत्रीय प्रमुख (अहमदाबाद क्षेत्र 2) श्री अरविंद विमल द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती

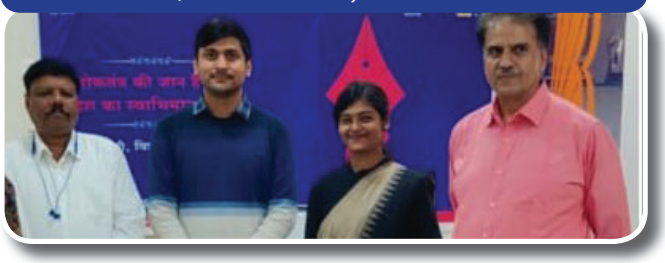

क्षेत्रीय कार्यालय, अमरावती द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया जिसमें बैंक की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी योजना के अंतर्गत 'महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में शैक्षणिक सत्र 2021-22 में एम.ए. (हिंदी) में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उप क्षेत्रीय प्रबंधक श्री सुरेश खैरनार द्वारा प्रमाण पत्र एवं पुरस्कार राशि देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भुज

दिनांक 15 मार्च, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, भुज में बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गुरु श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, कच्छ विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिन्दी) 2021-22 में शीर्ष पर रहे दो विद्यार्थियों को क्षेत्रीय प्रमुख श्री बी एल मीना द्वारा पुरस्कार राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

दिनांक 22 मार्च, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर द्वारा पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर में एम.ए. (हिंदी) के शैक्षणिक वर्ष 2021-22(अंतिम वर्ष) में महिला एवं पुरुष वर्ग में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को डॉ. केसरी लाल वर्मा, माननीय कुलपति तथा श्री के. एम. सिंह, मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, रायपुर क्षेत्र द्वारा सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद

क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद द्वारा दिनांक 25 मार्च 2023 को सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद के शैक्षणिक वर्ष 2021-22 के एम.ए (हिन्दी) के अंतिम वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस उपलक्ष्य में क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजकुमार महावर एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री राजेन्द्र किशोर शाह उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली

दिनांक 07 फरवरी 2023 को कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ में क्षेत्रीय कार्यालय, हुब्बल्ली द्वारा आयोजित मेधावी विद्यार्थी सम्मान कार्यक्रम में एम.ए (हिंदी) के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में क्षेत्रीय कार्यालय से मुख्य प्रबन्धक श्री विजय कुमार पाटील व अंचल राजभाषा प्रभारी श्रीमती पुष्पलता बी एन उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, रांची

क्षेत्रीय कार्यालय रांची द्वारा दिनांक 13, मार्च 2023 को बैंक की बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के तहत रांची विश्वविद्यालय, रांची के शैक्षणिक सत्र 2020-22 के एम.ए (हिंदी) के विद्यार्थियों को क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनीष कुमार द्वारा सम्मानित किया गया। इस उपलक्ष्य में रांची क्षेत्र के उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री गौतम पॉल भी उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु

दिनांक 06 मार्च, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत शैक्षणिक सत्र 2021-22 के मैसूर विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिन्दी) में सर्वाधिक अंक अर्जित करने वाले विद्याार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मैसूरु क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री अनुज अवस्थी उपस्थित थे।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-दक्षिण

दिनांक 27 फरवरी 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-दक्षिण द्वारा बड़ौदा मेधावी विद्यार्थी सम्मान योजना के अंतर्गत शैक्षणिक सत्र 2021-22 के लिए बेंगलूरु विश्वविद्यालय के एम.ए. (हिन्दी) में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वालों विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर बेंगलूरु अंचल के राजभाषा विभाग प्रमुख सुश्री एम.नीना देवस्सी, बेंगलूरु दक्षिण क्षेत्र के राजभाषा अधिकारी सुश्री अमिता ब्रह्मा पुरस्कार विजेता को सम्मानित करते हुए.

पत्रिका-विमोचन

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

बड़ौदा अंचल की पत्रिका 'बड़ौदा दर्पण' के नवीनतम अंक का विमोचन दिनांक 10 फरवरी, 2023 को अंचल प्रमुख, श्री राजेश कुमार सिंह के कर-कमलों से किया गया। इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख, श्री भवानी सिंह राठौड़, नेटवर्क उप महाप्रबंधक द्वय, श्री शरत कुमार पाणिग्रही एवं श्रीमती वीणा के शाह उपस्थित रहीं।

क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

04 जनवरी, 2023 को पटना क्षेत्र की समीक्षा बैठक के दौरान पटना क्षेत्र की पत्रिका 'पाटलिग्राम' के प्रथम अंक का विमोचन अंचल प्रमुख श्री सोनाम टी.भूटिया, पटना क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री संतोष कुमार, उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अमरेश कुमार एंव पटना मुख्य शाखा के शाखा प्रमुख श्री राजीव कुमार द्वारा किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

दिनांक 15 फरवरी, 2023 को जयपुर क्षेत्र की तिमाही ई-पत्रिका 'म्हारौ जयपुर' के द्वितीय अंक (दिसम्बर 2022) का विमोचन क्षेत्रीय प्रमुख श्री मनोज गुप्ता एवं मुख्य प्रबंधक (मासंप्र) श्री जितेंद्र शर्मा के कर-कमलों से किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर

दिनांक 21 फरवरी 2023 को रायपुर क्षेत्र की तिमाही पत्रिका दक्षिण कोसल के अक्तूबर-दिसंबर 2022 अंक का विमोचन रायपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री अमित बैनर्जी एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री अभिषेक भारती द्वारा किया गया।

डिजिटल बैंकिंग : स्मार्ट बैंकिंग

पीयूष कुमार
अधिकारी, सूचना प्रौद्योगिकी
क्षेत्रीय कार्यालय, फ़तेहपुर

जब से देश में नोटबंदी हुई है तब से डिजिटल बैंकिंग का स्तर दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है क्योंकि नोटबंदी के बाद नकदी में काफी कमी आई है। इसी के चलते लोगों ने डिजिटल बैंकिंग को काफी बढ़ावा दिया है, ताकि उन्हें किसी भी प्रकार के पैसों के लेन-देन में दिक्कत न आए और वे आसानी से अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। इसलिए देश के ज्यादा से ज्यादा यूज़र ने डिजिटल बैंकिंग को सीखा और उसको बढ़ावा दिया। जब से दुनिया में कोविड का पदार्पण हुआ तब से डिजिटल भुगतान में काफी बढ़ोत्तरी हुई है। कोविड-19 के बाद करोना वायरस फैलने से रोकने के लिए भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी सभी बैंकिंग यूजर्स को नोटिफिकेशन जारी करते हुए कहा है कि जितना ज्यादा हो सके डिजिटल और ऑनलाइन भुगतान का इस्तेमाल करें।

आसान भाषा में डिजिटल बैंकिंग परंपरागत बैंकिंग का एक ही प्रकार है जो लोगों को अपनी सेवाएं प्रदान करती हैं। डिजिटल बैंकिंग और दूसरी बैंकिंग सेवाओं में यह अंतर है कि डिजिटल बैंकिंग की कोई भौतिक शाखा नहीं होती है। यह पूरी तरह से ऑनलाइन होती है जिसका इस्तेमाल आप इंटरनेट के माध्यम से ही कर सकते हैं। इस तकनीक की मदद से बैंक अपनी सेवाएं ग्राहकों तक पहुंचाता है। ऑनलाइन खाता खुलवाने से लेकर लेनदेन करने तक का इस्तेमाल डिजिटल बैंकिंग कहलाता है। डिजिटल बैंकिंग में इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, एटीएम, इत्यादि शामिल हैं। डिजिटल बैंकिंग में आपका बैंक हमेशा आपके साथ रहता है। आप जब चाहें अपनी सुविधानुसार इसका इस्तेमाल कर सकते हैं और डिजिटल बैंकिंग की सभी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। डिजिटल बैंकिंग की सेवाओं का उपयोग करते समय हमें सुरक्षा संबंधी नियमों का पालन भी करना चाहिए।

सुरक्षित बैंकिंग- क्या करें और क्या न करें :

1. स्पैम ई-मेल को कभी भी न खोलें। विशेष रूप से ऐसे ई-मेल से सावधान रहें जो:
   - अपरिचित प्रेषकों से प्राप्त होते हैं।
   - इंटरनेट पर व्यक्तिगत या वित्तीय जानकारी की पुष्टि करने और / या इस संबंधी जानकारी के लिए आपसे तत्काल अनुरोध करते हैं।
   - किसी जानकारी के साथ आपको डराते हुए त्वरित कार्रवाई करने हेतु परेशान करने का प्रयास करे।
2. अज्ञात प्रेषकों से ई-मेल में प्राप्त लिंक, डाउनलोड फ़ाइलों या खुले अनुलग्नकों पर क्लिक न करें। यहां तक कि ऐसे उद्यम/ संस्थान जिसके साथ आप कारोबार/ कार्य करते हैं, से प्राप्त ई-मेल जैसा प्रतीत होने पर भी सतर्क रहें। ई-मेल अनपेक्षित होने की स्थिति में संबंधित प्रेषक से फोन पर इसकी पुष्टि करना एक अच्छा अभ्यास है।
3. केवल सुरक्षित वेबसाइटों के माध्यम से ही व्यक्तिगत जानकारी को प्रदान करें। इसके लिए निम्नलिखित पर ध्यान दें :
   ऑनलाइन लेनदेन करते समय, चिह्न देखें कि साइट सुरक्षित है जैसे कि ब्राउज़र के स्टेटस बार पर लॉक आइकन का चिह्न या यूआरएल "http:" के बदले "https:" देखें जिसमे "s" का अर्थ ''सुरक्षित'' है।
   ऑनलाइन लेनदेन करने से पहले यह भी देख लें कि वेबसाइट का पता सही है या नहीं।
4. अपने कम्प्यूटर / मोबाइल फोन पर प्रभावी एंटी-वायरस / एंटी-स्पाइवेयर / पर्सनल फ़ायरवॉल स्थापित करके अपने कम्प्यूटर को सुरक्षित रखें और इसे नियमित रूप से अपडेट करें।
5. यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से अपने ऑनलाइन खातों और बैंक विवरणों की जांच करें कि कोई अनधिकृत लेनदेन तो नहीं किया गया है।
6. किसी भी प्रकार का विवरण जैसे कि पासवर्ड, डेबिट कार्ड पिन इत्यादि को प्रकट न करें, भले ही वे बैंक कर्मचारी होने का दावा करें या सरकारी निकायों जैसे

आरबीआई, आई.टी. विभाग आदि से प्राप्त ई-मेल / लिंक हो।

7. अपने बैंकिंग लेनदेन पर नज़र बनाए रखने हेतु एसएमएस अलर्ट के लिए पंजीकरण करें।
8. यदि आपको अपना मोबाइल किसी और के साथ साझा करना है या मरम्मत / रखरखाव के लिए भेजना है तो :-
   ब्राउज़िंग हिस्टरी खाली करें।
   मेमोरी में संगृहीत कैश और अस्थायी फ़ाइलें खाली करें क्योंकि उनमें आपके खाता नंबर और अन्य संवेदनशील जानकारी हो सकती है।
   अपने बैंक से संपर्क करके अपने मोबाइल बैंकिंग एप्लीकेशन को ब्लॉक करें। मोबाइल वापस मिलने पर आप उन्हें अनब्लॉक कर सकते हैं।
9. गोपनीय जानकारी जैसे कि अपने डेबिट / क्रेडिट कार्ड नंबर, सीवीवी नंबर या पिन जैसी गोपनीय जानकारी को अपने मोबाइल फोन पर सेव न करें।
10. अपनी चेकबुक को हमेशा एक सुरक्षित स्थान पर अपनी निगरानी मे रखें।
11. जब भी आप अपनी चेकबुक प्राप्त करें, तो कृपया उसमें चेक पन्नों की संख्या गिनें। यदि कोई विसंगति है, तो इसे तुरंत बैंक के ध्यान में लाएं।
12. आपका कार्ड आपके अपने निजी उपयोग के लिए है। अपना पिन या कार्ड किसी के साथ साझा न करें, यहां तक कि अपने दोस्त या परिवार के सदस्य के साथ भी नहीं।
13. एटीएम मे लेनदेन के समय पिन डालते समय कीपैड को ढकने के लिए अपने शरीर और हाथ का उपयोग करें।
14. एटीएम से दूर जाने से पहले 'रद्द करें' कुंजी दबाएं। अपने कार्ड और ट्रांजेक्शन स्लिप को अपने साथ रखना न भूलें।
15. यदि आपका एटीएम कार्ड खो जाता है या चोरी हो जाता है, तो इसकी सूचना अपने कार्ड जारी करने वाले बैंक को तुरंत दें।
16. फोन पर बात करते समय कभी भी निम्नलिखित की जानकारी न दें:
    - 4 अंकों वाला एटीएम / आईवीआर पिन
    - 6 अंकों वाला 3 डी सुरक्षा पिन
    - ओटीपी पासवर्ड
    - इंटरनेट बैंकिंग पासवर्ड
    - सीवीवी (कार्ड सत्यापन संख्या)
17. **क्रमरहित पासवर्ड:** अपने पासवर्ड के लिए यादृच्छिक अक्षरों और नंबरों के शब्दों, नामों और वाक्यांशों का उपयोग करें।
18. **लिंक का अनुसरण न करें:** अपने बैंक की वेबसाइट तक पहुंचने के लिए हमेशा वेब एड्रेस (URL) टाइप करें। आपको प्राप्त ई-मेल के लिंक पर कभी भी क्लिक न करें।
19. **सुरक्षित रहें:** अपने ऑपरेटिंग सिस्टम और ब्राउज़र को नवीनतम सुरक्षा पैच के साथ अपडेट रखें। इन्हें केवल विश्वसनीय वेबसाइट से ही इंस्टॉल करें।
20. अपने पासवर्ड, व्यक्तिगत पहचान संख्या (पिन) और कार्ड नंबर गोपनीय रखें।
21. **लॉक आइकन देखें:** किसी वेबसाइट पर निजी जानकारी दर्ज करने से पहले, अपने ब्राउज़र में ''लॉक'' आइकन देखें। एक बंद ताला या पैडलॉक चिह्न यह इंगित करता है कि आप जिस वेबसाइट पर हैं वह सुरक्षित है।
22. अपने कंप्यूटर की सुरक्षा के लिए फ़ायरवॉल का उपयोग करें।
23. आपको नियमित रूप से सुरक्षा अद्यतन डाउनलोड और इंस्टॉल करना चाहिए या नए अपडेट के लिए स्वचालित रूप से जांच करने के लिए अपने ऑपरेटिंग सिस्टम को कॉन्फ़िगर करना चाहिए।
24. **अपना पासवर्ड नियमित रूप से बदलें:** जब आप पहली बार अपने इंटरनेट बैंकिंग खाते में लॉगिन करते हैं, तो आपको बैंक द्वारा प्रदान किए गए पासवर्ड का उपयोग करना होगा। हालाँकि, आपको अपने खाते को सुरक्षित रखने के लिए इस पासवर्ड को बदलना होगा। इसके अलावा, नियमित अंतराल पर अपना पासवर्ड बदलते रहें।
25. **अपना विवरण किसी के साथ साझा न करें:** आपका बैंक कभी भी फ़ोन या ईमेल के माध्यम से आपकी गोपनीय जानकारी नहीं मांगेगा। यदि आपको बैंक से एक आभासी फोन कॉल या आपके विवरण का अनुरोध करने वाला कोई ईमेल भी मिलता है तो भी आप अपनी लॉगिन जानकारी न दें।
26. **नियमित रूप से अपने बचत खाते की जाँच करते रहें:** कोई भी लेन-देन ऑनलाइन करने के बाद अपने खाते की जाँच करें। जांच करें कि क्या आपके खाते से सही राशि की कटौती हुई है। यदि आपको राशि में कोई विसंगतियां दिखाई देती हैं, तो तुरंत बैंक को सूचित करें।
27. हमेशा लाइसेंस प्राप्त एंटी-वायरस सॉफ़्टवेयर का उपयोग करें।
28. अपने लेनदेन को पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित करें कि आपने ऑनलाइन बैंकिंग से साइन आउट कर लिया हैं ।

इस प्रकार उपर्युक्त सुरक्षात्मक उपायों का पालन करते हुए आप कुशलतापूर्वक डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं।

सामर्थ्य टूल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

बैंक की राजभाषा टीम द्वारा एक नवोन्मेषी पहल के रूप में नवीनतम भाषा संबंधी तकनीकी सुविधाओं को शामिल करते हुए 'सामर्थ्य–भाषायी तकनीक संबंधी टूलकिट' को तैयार किया गया है. इस टूलकिट में डिजिटल रूप से हिंदी के उपयोग में सहायक नवीनतम तकनीकी माध्यमों की विस्तृत जानकारियों को शामिल किया गया है. इस टूलकिट को तैयार करने का उद्देश्य बैंक के स्टाफ सदस्यों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के उपयोग को सरल बनाना है. तदनुसार, इस टूलकिट के माध्यम से मार्च 2023 तिमाही में प्रत्येक अंचल के स्टाफ सदस्यों के लिए ऑनलाइन कार्यशाला के जरिए अंचलवार आवश्यक जानकारी दी गई. प्रस्तुत है विभिन्न कार्यालयों में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां: – संपादक

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

दिनांक 24 जनवरी 2023 को अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ द्वारा राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम और सामर्थ्य टूल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 14 फरवरी 2023 को विभागों में पदस्थ स्टाफ सदस्यों हेतु सामर्थ्य टूलकिट पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम में 42 स्टाफ सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज की।

अंचल कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा गुजराती प्रशिक्षण कार्यक्रम

अहमदाबाद अंचल कार्यालय द्वारा दिनांक 28 मार्च 2023 को उप महाप्रबन्धक श्री पी.के.बाफना की अध्यक्षता में स्थानीय भाषा गुजराती के प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इस कार्यक्रम में अंचल कार्यालय एवं स्थानीय तीनों क्षेत्रीय कार्यालयों के कुल 40 स्टाफ सदस्यों को उक्त प्रशिक्षण हेतु नामित किया गया ।

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

दिनांक 23 फरवरी 2023 को जालंधर क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के लिए पंजाबी भाषा प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया। स्टाफ सदस्यों को जालंधर क्षेत्र के वरिष्ठ प्रबंधक श्री जसबीर राय द्वारा प्रशिक्षित किया गया।

बड़ौदा अकादमी, जमशेदपुर

दिनांक 10 फरवरी 2023 को बड़ौदा अकादमी, जमशेदपुर में व्यवसाय सहायकों के लिए 'सामर्थ्य टूलकिट' के जरिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में शिक्षण प्रभारी श्री श्याम किशोर सिंह एवं संकाय सदस्य श्री सौरव कुमार द्वारा सत्र लिया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, फतेहपुर द्वारा दिनांक 18 जनवरी, 2023 को सामर्थ्य टूलकिट प्रशिक्षण के माध्यम से राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख, श्री डी के श्रीवास्तव एवं उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री संतोष कुमार पांडेय उपस्थित रहें ।

सामर्थ्य टूल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा

दिनांक 05 जनवरी 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, नोएडा द्वारा उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री पृथ्वी सिंह की उपस्थिति में शाखा के अधिकारियों के लिए सामर्थ्य टूलकिट प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । उक्त कार्यक्रम में कुल 47 अधिकारी उपस्थित थे ।

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

दिनांक 21 मार्च 2023 को पणजी क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों हेतु सामर्थ्य प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पणजी क्षेत्र के विभिन्न शाखाओं से कुल 48 स्टाफ सदस्य (26 अधिकारी और 22 कर्मचारी) शामिल थे।

अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी

दिनांक 27 जनवरी 2023 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा तिरुवनंतपुरम में 'संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन – दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्र' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के अंचल कार्यालय, एर्णाकुलम द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन केरल के राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खान, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अजय कुमार मिश्रा, सचिव (राजभाषा विभाग), भारत सरकार, श्रीमती अंशुली आर्या और संयुक्त सचिव (राजभाषा विभाग), भारत सरकार, डॉ. मीनाक्षी जौली की उपस्थित में किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री श्रीजित कोट्टारत्तिल और क्षेत्रीय प्रमुख त्रिवेंद्रम क्षेत्र श्री पद्मकुमार जे, मौजूद रहे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति संबंधी बैठक

बैंक नराकास, जयपुर

दिनांक 31 जनवरी, 2023 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 75वीं छमाही बैठक का आयोजन अंचल कार्यालय, जयपुर में किया गया । बैठक में महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष (नराकास) श्री कमलेश कुमार चौधरी, उप महाप्रबंधक, श्री सुधांशु शेखर खमारी सहित सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुख व राजभाषा अधिकारी प्रत्यक्ष रूप से व गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार के सहायक निदेशक श्री नरेन्द्र मेहरा व श्री संजय सिंह (प्रमुख – राजभाषा व संसदीय समिति) प्रधान कार्यालय, बड़ौदा वर्चुअल रूप से उपस्थित रहे ।

बैंक नराकास, जोधपुर

दिनांक 09 फरवरी, 2023 को बैंक नराकास, जोधपुर की 22वीं छ:माही बैठक का आयोजन बैंक नराकास, जोधपुर के अध्यक्ष, श्री सुरेश चंद्र बुंटोलिया की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि, श्री कुमार पाल शर्मा (उप निदेशक, कार्यान्वयन, गृह मंत्रालय, भारत सरकार) उपस्थित रहे। बैठक में प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग से सहायक महाप्रबंधक श्री पुनीत कुमार मिश्र ने वर्चुअल माध्यम से जुड़कर बैठक को संबोधित किया ।

पुरस्कार एवं सम्मान

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत सिटी को भारत सरकार का क्षेत्रीय पुरस्कार

वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत सिटी को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार दिनांक 03 मार्च 2023 को रायपुर में आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण के दौरान समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत सिटी के क्षेत्रीय प्रमुख श्री रंजीत रंजन दास ने प्राप्त किया।

अंचल कार्यालय, भोपाल को भारत सरकार का क्षेत्रीय पुरस्कार

वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु अंचल कार्यालय, भोपाल को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 03 मार्च, 2023 को रायपुर में आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार के कर कमलों से यह पुरस्कार मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री चंदन वर्मा ने प्राप्त किया । इस कार्यक्रम में सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार सुश्री अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग डॉ. मीनाक्षी जौली उपस्थित रहीं।

नराकास, राजकोट

बैंक के संयोजन में कार्यरत बैंक नराकास, राजकोट को वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय,भारत सरकार से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिनांक 03 मार्च 2023 को रायपुर में आयोजित संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गृह राज्य मंत्री,भारत सरकार श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से यह पुरस्कार बैंक नराकास, राजकोट के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री विजय कुमार बसेठा ने ग्रहण किया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी को भारत सरकार का क्षेत्रीय पुरस्कार

दिनांक 03 मार्च 2023 को रायपुर में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम) के अंतर्गत 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के बैंकों में 2020-21 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की ओर से क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। गृह राज्यमंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा ने क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी के मुख्य प्रबन्धक श्री निर्निमेष भंसाली और राजभाषा अधिकारी श्री आनंद सिंह को पुरस्कृत किया।

बैंक नराकास जोधपुर, द्वारा साहित्यकार डॉ. फतेह सिंह भाटी 'मीरा भाषा सम्मान 2020-21' से सम्मानित

बैंक नराकास, जोधपुर द्वारा जोधपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. फतेह सिंह भाटी को मीरा भाषा सम्मान 2020-21 से उप निदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्री कुमार पाल शर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुरेश चंद्र बुंटोलिया, उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री ललित कु. सिपानी सहित विभिन्न बैंकों के कार्यालय प्रमुख उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, रतलाम द्वारा 'बॉब मध्यभारत राजभाषा सम्मान'

दिनांक 18 जनवरी, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, रतलाम द्वारा 'बॉब मध्यभारत राजभाषा सम्मान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के तहत प्रख्यात साहित्यकार प्रोफ़ेसर अज़हर हाशमी को 'बॉब मध्यभारत राजभाषा सम्मान' से सम्मानित किया गया। प्रोफेसर हाशमी को यह सम्मान प्रमुख (राजभाषा व संसदीय समिति), प्रधान कार्यालय श्री संजय सिंह एवं क्षेत्रीय प्रमुख, रतलाम क्षेत्र श्री सुबोध इनामदार द्वारा प्रदान किया गया।

विश्व हिंदी दिवस

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी बैंक के देश–विदेश स्थित कार्यालयों में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन धूमधाम से किया गया। हम पत्रिका के पाठकों के लिए इन आयोजनों की संक्षिप्त झलकियां प्रस्तुत कर रहे हैं: संपादक

ऑस्ट्रेलिया टेरिटरी

अंचल कार्यालय, बड़ौदा

अंचल कार्यालय, जयपुर

अंचल कार्यालय, राजकोट

अंचल कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु शहर

अंचल कार्यालय, नई दिल्ली

अंचल कार्यालय, मुंबई

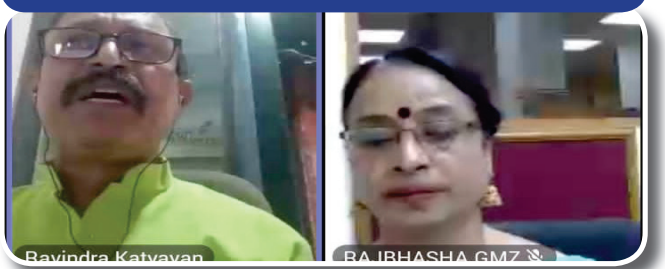

अंचल कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो 2

क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

विश्व हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, बिलासपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, वलसाड

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी

क्षेत्रीय कार्यालय, भरूच

क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत सिटी

विश्व हिंदी दिवस

क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा जिला

क्षेत्रीय कार्यालय, गोरखपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई मेट्रो मध्य

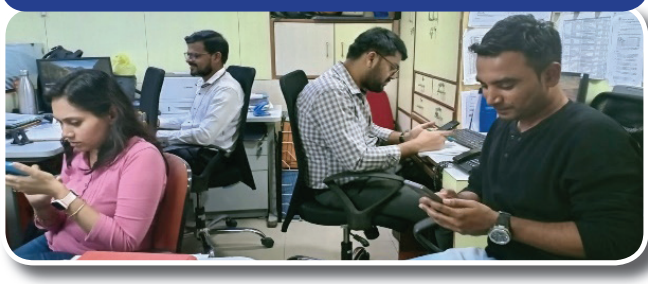

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी एवं वाराणसी II

क्षेत्रीय कार्यालय, फ़तेहपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

क्षेत्रीय कार्यालय, औरंगाबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Bad doubtful accounts

अशोध्य एवं संदिग्ध ऋण खाते

अशोध्य ऋण वह होता है, जिसकी वसूली नहीं की जा सकती तथा संदिग्ध ऋण वह होता है, जिसकी पूरी या आंशिक वसूली अनिश्चित हो। ऐसे ऋणों के खाते अशोध्य एवं संदिग्ध ऋण खाते कहलाते हैं। बैंकर की दृष्टि से अशोध्य ऋण एक हानि है जिसे तदनुसार, बट्टे खाते डाल दिया जाता है। संदिग्ध ऋण के संदर्भ में उसकी पूरी राशि अथवा उसके किसी अंश के लिए चालू वर्ष के लाभ में से कुछ प्रावधान किया जाता है ताकि अंतत: ऐसे ऋण के अशोध्य हो जाने की संभाव्य स्थिति का सामना किया जा सके। इस प्रकार किए गए प्रावधान की राशियों को जिस खाते में जमा किया जाता है, उसे अशोध्य एवं संदिग्ध ऋण खाते के लिए प्रावधान कहा जाता है।

Credit plus services **ऋण सहित सुविधाएँ**

अधिकाधिक लोगों को बैंकिंग के दायरे में लाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए वित्तीय समावेशन के तहत इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि बैंक के पास ऋण-सुविधा लेने के लिए आनेवाले ग्राहक को उससे जुड़ी अन्य सेवाएँ भी प्रदान की जाएँ ताकि निधि का सही उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। ऐसी सेवाओं में ग्राहक को उद्योग से जुड़ी परामर्शी सेवाओं, प्रशिक्षण आदि का समावेश है। ये सेवाएँ आर्थिक रूप में न होकर कल्याणकारी स्वरूप की होती हैं, जैसे किसानों को फसल- पद्धति, उन्नत बीज, उर्वरक, कीटनाशक, नई प्रौद्योगिकी, संबंधित क्षेत्र के मौसम आदि के संबंध में जानकारी प्रदान करना आदि।

Equipment leasing **उपस्कर पट्टेदारी**

पट्टाकर्ता और पट्टेदार के बीच किसी आस्ति विशेष को किराए पर लेने के लिए की गई संविदा जिसका चयन पट्टेदार द्वारा इस आस्ति के निर्माता अथवा विक्रेता से किया गया हो। इस व्यवस्था के अंतर्गत आस्ति का स्वामित्व पट्टाकर्ता के पास रहता है जबकि पट्टेदार के पास किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए तय किराए का भुगतान करने पर आस्ति का कब्जा रहता है और वह उसका उपभोग करता है।

Financial health **वित्तीय स्वास्थ्य**

किसी व्यक्ति अथवा कंपनी की माली अथवा वित्तीय स्थिति को दर्शानेवाली संकल्पना । किसी व्यक्ति अथवा कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य के ठीक होने से तात्पर्य है कि वह व्यक्ति या कंपनी अपने सभी भुगतान समय पर करती है और उसे अपने धन का प्रबंधन बेहतर तरीके से करना आता है। खराब वित्तीय स्वास्थ्य वाले व्यक्ति अथवा कंपनी की स्थिति ठीक इसके विपरीत होती है क्योंकि धन की कमी के कारण वह अपने भुगतान समय पर नहीं कर पाती।

Hybrid funding **संकरित निधियन**

जमाराशि बीमाकर्ता द्वारा अपनाया जानेवाला निधियन का एक तरीका जिसमें वह प्रत्याशित एवं वास्तविक निधियन की प्रक्रिया को संयुक्त रूप से अपनाकर लाभ कमाने की सोचता है।

Novation **दायित्व नवीकरण**

(i) मौजूदा ऋण के स्थान पर नए ऋण का प्रतिस्थापन ।

(ii) संविदा में किसी मौजूदा पक्ष के बदले एक नये पक्ष को प्रतिस्थापित करने का करार संविदा के सभी मूल पक्षों का प्रतिस्थापन के लिए सहमत होना आवश्यक है।

Pyramiding **पिरामिडन**

लगाई गई कुल पूँजी के छोटे-से भाग का स्वामी होते हुए भी बहुत अधिक पूँजी वाली कंपनियों के समूह का नियंत्रण करना ।

Rupee basket **मुद्रा-समूह संबद्ध रुपया दर**

वे विदेशी मुद्राएँ जिनकी विनिमय दरें भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा यथानिर्धारित रुपये की वास्तविक दर को प्रभावित करती हैं, सामूहिक रूप से मुद्रा-समूह-संबद्ध रुपया दर या 'रुपी बास्केट' कहलाती हैं।

Syndication **समूहन**

एक ऐसी व्यवस्था, जिसके तहत दो या अधिक बैंक किसी ऋण-करार पर एक ही उधारकर्ता को सीधे उधार देते हैं। समूह का प्रत्येक बैंक ऋण-करार में एक पार्टी होता है और अपने ऋण के प्रमाण में उधारकर्ता से एक नोट प्राप्त करता है । समूहबद्ध लेनदेन में शामिल बैंक प्रायः अपनी ऋण-सुविधा के कुछ या सभी आबंटन बेच देते हैं।

Uncovered bear **अरक्षित मंदड़िया**

वह व्यक्ति, जो स्टॉक का धारक नहीं है परंतु इस आशा में स्टॉक की बिक्री करता है कि जब उसे निपटाने की जरूरत पड़ेगी, तब वह कम मूल्य पर स्टॉक खरीद लेगा।

साभार : भारतीय रिज़र्व बैंक पारिभाषिक शब्दावली

अपने ज्ञान को परखिए

1. प्रतिवर्ष 23 जनवरी को पूरे भारत में 'पराक्रम दिवस' किनकी जयंती पर मनाया जाता है?
   (क) बी.आर.अम्बेडकर (ख) एपीजे अब्दुल कलाम
   (ग) जेआरडी टाटा (घ) सुभाष चंद्र बोस
2. कम्प्यूटरों में प्रयुक्त आई. सी. चिप किससे बनते हैं ?
   (क) सिलिकॉन से (ख) आयरन औकसाइड से
   (ग) क्रोमियम से (घ) सिल्वर से
3. दुनिया का पहला 200 मीटर लंबा बैंबू क्रैश बैरियर 'बाहु बल्ली' किस राज्य में स्थापित किया गया है?
   (क) उत्तर प्रदेश (ख) महाराष्ट्र
   (ग) छत्तीसगढ़ (घ) मध्य प्रदेश
4. 10,000 नए एमएसएमई (MSMEs) पंजीकृत करने वाला देश का पहला जिला कौन सा है?
   (क) इंदौर (ख) तेलंगाना
   (ग) सूरत (घ) एर्णाकुलम
5. ग्रैमी अवॉर्ड्स का उल्लेख किस क्षेत्र के लिए किया जाता है?
   (क) चिकित्सा (ख) अर्थशास्त्र
   (ग) संगीत (घ) प्रोद्योगिकी
6. किस शहर में भारत का पहला 3डी प्रिंटेड पोस्ट ऑफिस खोला जाएगा?
   (क) जयपुर (ख) हैदराबाद
   (ग) तिरुवनंतपुरम (घ) बेंगलुरु
7. हाल ही में, कौन अमेरिकी प्रभाव वाले ग्रुप नाटो का 31वां सदस्य देश बना है?
   (क) युक्रेन (ख) स्वीडन
   (ग) फिनलैंड (घ) इराक
8. किस देश को आइलैंड ऑफ पर्ल्स के नाम से जाना जाता है?
   (क) श्रीलंका (ख) बहरीन
   (ग) ओमान (घ) मॉरीशस
9. प्रतिवर्ष दुनियाभर में विश्व जल दिवस (World Water Day) कब मनाया जाता है?
   (क) 22 मार्च को (ख) 24 मार्च को
   (ग) 25 मार्च को (घ) 29 मार्च को
10. किस राज्य की सरकार ने ऑनलाइन गैम्बलिंग पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पास किया है?
    (क) केरल (ख) तमिलनाडू
    (ग) हरियाणा (घ) राजस्थान
11. हाल ही में, किस भाषा की प्रसिद्ध लेखिका शिवशंकरी को वर्ष 2022 का सरस्वती सम्मान मिला है?
    (क) कन्नड़ (ख) पंजाबी
    (ग) मराठी (घ) तमिल
12. किस विटामिन की कमी से खून का रुकाव बंद नहीं होता?
    (क) विटामिन A (ख) विटामिन D
    (ग) विटामिन K (घ) विटामिन E
13. कांसा किसकी मिश्र धातु है?
    (क) तांबा और टिन (ख) तांबा और ज़िंक
    (ग) तांबा और एल्यूमीनियम (घ) तांबा और मैग्नीशियम
14. किस राज्य की सरकार ने हाल ही में गरीब महिलाओं के लिए लाडली बहना नामक योजना शुरू की है?
    (क) गुजरात (ख) राजस्थान
    (ग) बिहार (घ) मध्यप्रदेश
15. काली मिट्टी किस फसल के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है?
    (क) धान (ख) मक्का
    (ग) कपास (घ) खरबूजा
16. यूरोपीय संघ ने किस वर्ष से गैस और डीजल कारों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है?
    (क) वर्ष 2030 से (ख) वर्ष 2035 से
    (ग) वर्ष 2040 से (घ) वर्ष 2045 से
17. कौन सा राज्य पूरी तरह से डिजिटल बैंकिंग सेवा प्रदान करने वाला भारत का पहला राज्य बना है?
    (क) केरल (ख) मेघालय
    (ग) कर्नाटक (घ) हरियाणा
18. हाल ही में चुनाव आयोग ने कहाँ से पहली बार 'वोट फ्रॉम होम' की शुरुआत की है ?
    (क) गुजरात (ख) आंध्र प्रदेश
    (ग) कर्नाटक (घ) महाराष्ट्र
19. निम्नलिखित में से कौन सा विश्व का सबसे बड़ा अंतर्देशीय समुद्र है?
    (क) भूमध्य सागर (ख) लाल सागर
    (ग) आज़ोव का सागर (घ) कैस्पियन सागर
20. समशीतोष्ण घास के मैदान किस फसल की खेती के लिए आदर्श होते हैं।
    (क) अंगूर (ख) गेहूँ
    (ग) सेब (घ) कपास

(उत्तर के लिए पेज नं. 15 देखें)

चित्र बोलता है।

1
सर्द हवा का मौसम आया है,
हमको यह मौसम बिल्कुल ना भाया है।
कंबल रजाई स्वेटर का ना साया है,
इसलिए तपती आग से शरीर को गरमाया है।

अभिषेक वर्मा, प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)
जबलपुर क्षेत्र, भोपाल अंचल

2
ना ऊपर में कोई छत है, ना ही चार दिवारी है,
दिन काट लिए मजदूरी में, अब रात की बारी है ।
हम पाँच हैं परिवार में, पांचों का है एक ही सपना,
बहुत रह लिए फुटपाथ में, हमारा भी हो घर अपना ।

सुंदर लाल पटेल, लिपिक
बिलासपुर क्षेत्र, हांडी चौक रायगढ़ शाखा

3
जीवन, संघर्ष का दूसरा नाम है
ना कोई घर, ना कोई काम है ।
कड़कड़ाती ठंड, ठिठुरते से बच्चे हैं ।
सर्दियों में राहत, गरीबों को अलाव से है।

कीर्ति गहलोत
एकल खिड़की परिचालक, स्टेशन रोड,
जोधपुर शाखा

ठंड में कपकपाते हैं हाथ,
किट-किट करते बजते हैं दांत।
सुलगती आग का है साथ,
जिससे मिलती है थोड़ी गरमी और राहत।

अंशिता वर्मा, अधिकारी
भुज मुख्य शाखा, भुज क्षेत्र,
राजकोट अंचल

तपती धूप धरती है बंजर,
भयंकर है ये मंज़र,
कृपा करो प्रभु हमपर,
बरसा दो मेघ जमकर।

मोनिका सोनी, अधिकारी
गडखोल शाखा, भरुच

भूख लगी है पर खाने को कुछ नहीं है ।
नींद आ रही है पर सोने को बिस्तर नहीं है ।
सर्दी लग रही हैं और जलाने को अलाव,
बची अब लकड़ियां भी नहीं हैं
ये कर्मों का फल है या दोष गरीब के घर जन्म लेने का है।

गोपाल चौधरी, अधिकारी
जोधपुर क्षेत्र, स्टेशन रोड शाखा

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 की राशि दी जा रही है

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत अक्तूबर-दिसंबर, 2022 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं। पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें। श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे। पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 जून, 2023 तक भेज सकते हैं।

'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस, 2023 के अवसर पर भाषायी चौपाल का आयोजन

बैंक में नवोन्मेषी एवं सृजनात्मक कार्यों की शृंखला के तहत हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं पर चर्चा–परिचर्चा एवं अपने बैंक के स्टाफ सदस्यों में भाषायी रुचि बढ़ाने हेतु नियमित अंतराल पर डिजिटल माध्यम से 'भाषायी चौपाल' का आयोजन किया जा रहा है। इस शृंखला के तहत नौवां आयोजन दिनांक 21 फरवरी, 2023 को ''भारतीय भाषाओं के महत्व एवं अनुवाद कर्म की प्रासंगिकता'' विषय पर किया गया। इस भाषायी चौपाल में सुप्रसिद्ध लेखक एवं आलोचक तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ. प्रभात रंजन को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा एवं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय द्वारा ''महाराजा सयाजीराव वाद–विवाद प्रतिस्पर्धा'' का आयोजन

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के सहयोग से बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा वर्ष 2022 से 'महाराजा सयाजीराव वाद–विवाद प्रतिस्पर्धा' का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष भी यह आयोजन चार राउंड (स्क्रीनिंग राउंड, क्वार्टर–फाइनल राउंड, सेमी–फाइनल राउंड और फाइनल राउंड) में किया गया ।

वाद–विवाद प्रतिस्पर्धा–2023 का शुभारंभ दिनांक 24 मार्च, 2023 को किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति डॉ.विजय कुमार श्रीवास्तव जी, प्रो. आद्या सक्सेना, अध्यक्ष–कला संकाय, प्रो. कल्पना गवली, विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग), विश्वविद्यालय के अन्य सम्मानित प्राध्यापकगण तथा बैंक की ओर से मुख्य महाप्रबंधक श्री दिनेश पंत, प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा बैंक के कार्यपालकगण व स्क्रीनिंग राउंड में प्रतिस्पर्धा कर रहे विद्यार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंतिम एवं निर्णायक राउंड का आयोजन दिनांक 12 अप्रैल 2023 को विश्वविद्यालय कैम्पस में किया गया। वाद–विवाद का विषय 'क्या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव बुद्धि की जगह ले सकता है' था। इस अवसर पर विशेष रूप से विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. के एम चुड़ासमा, श्री संजय सिंह (प्रमुख–राजभाषा एवं संसदीय समिति), श्री राज कुमार मीना, उप महाप्रबंधक, प्रधान कार्यालय के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के विभिन्न संकाय प्रमुख, प्राध्यापकगण, अंतिम और निर्णायक राउंड में चयनित 05 टीमों के प्रतिभागियों सहित विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सहभागिता की गई। कार्यकम का संचालान श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) एवं विश्वविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनीता शुक्ल द्वारा किया गया।

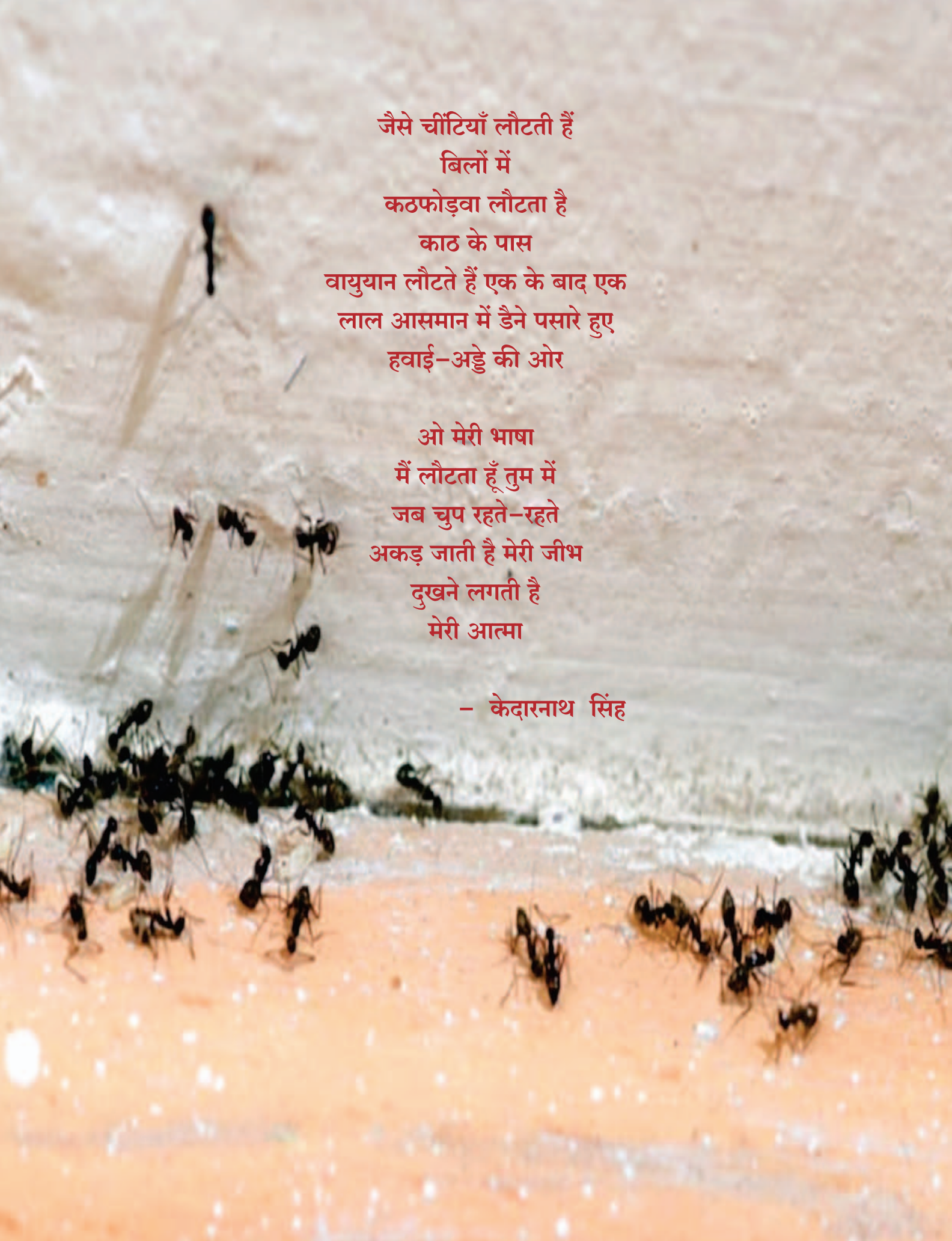

जैसे चींटियाँ लौटती हैं
बिलों में
कठफोड़वा लौटता है
काठ के पास
वायुयान लौटते हैं एक के बाद एक
लाल आसमान में डैने पसारे हुए
हवाई–अड्डे की ओर

ओ मेरी भाषा
मैं लौटता हूँ तुम में
जब चुप रहते–रहते
अकड़ जाती है मेरी जीभ
दुखने लगती है
मेरी आत्मा

– केदारनाथ सिंह